धौल / ध्वैल

- धौल को ध्वैल और धौलू भी कहा जाता है।
- रास्ते / सड़कों के किनारे बहुतायत से मिलता है।
- फरवरी–मार्च माह में इसकी झाड़ियाँ नारंगी रंग के फूलों से लद जाती हैं। जून माह तक फूल सूख जाते हैं।
- ल्यूकोरिया रोग हो जाने पर ताजे फूलों को खाने से बहुत फायदा होता है।
- ठंड के मौसम में गाय–भैंस को चारे के रूप में दिया जाता है।
- शरीर में रोगों से लड़ने की ताकत को बढ़ाता है।

मडुआ

- कुमाऊँनी में मडुआ और गढ़वाली बोली में कोदों कहा जाने वाला अत्यंत पौष्टिक खाद्य है।
- इसमें कैल्शियम, प्रोटीन और अन्य पौष्टिक तत्व पाये जाते हैं।
- हड्डियों को मजबूत करता है।
- शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ा कर कैंसर जैसे रोगों को दूर रखता है।
- इसका सेवन मधुमेह, टी.बी., ब्लड–प्रेशर जैसे रोगों को दूर करने में मदद करता है।
- मडुआ / कोदों से हलवा, खीर, रोटी, बिस्कुट, लड्डू इत्यादि बनाए जा सकते हैं।
- शिशु, बच्चों और महिलाओं के लिए अत्यंत गुणकारी भोजन है।
- फसल काटने के बाद पौधे के बचे हुए हिस्से को पालतू जानवर खा लेते हैं।

नन्दा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा

वर्ष – 14 दिसम्बर 2015 अंक 15
(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रतियाँ : 2,000

प्रकाशक
उत्तराखण्ड महिला परिषद्
द्वारा उत्तराखण्ड सेवा निधि
पर्यावरण शिक्षा संस्थान,
अल्मोड़ा – 263601

प्रकाशन सहयोग
राजेश्वर सुशीला दयाल
चैरीटेवल ट्रस्ट, नई दिल्ली

सभी फोटो
अनुराधा पांडे

परिकल्पना एवं संपादन
अनुराधा पांडे

विशेष आभार
पद्मश्री डा0 ललित पांडे,
उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े
सभी महिला संगठन

सहयोग
डी0एस0 लटवाल, सुरेश बिष्ट
रमा जोशी, रेनू जुयाल
कमल जोशी, कैलाश पपनै, जीवन चन्द्र जोशी

टंकण
डी0एस0 लटवाल

मुद्रक : एडविस्टा, नैनीताल

उत्तराखण्ड महिला परिषद् सहयोगी संस्थाएं

जनपद	संस्थाएं
अल्मोड़ा	- सीड, सुनाड़ी - पर्यावरण चेतना मंच, मैचून - राइज, सेराघाट - उत्तराखण्ड शिवा शक्ति समिति, दन्यां
बागेश्वर	- पर्यावरण एवं शिक्षा समिति, शामा - ग्रामीण उत्थान समिति, कपकोट
चमोली	- शेप बधाणी, कर्णप्रयाग - जनदेश, सलना - नवज्योति महिला कल्याण संस्थान, गोपेश्वर - लोक जागृति विकास संस्था, कर्णप्रयाग - लोक कल्याण विकास समिति, सगर
चम्पावत	- पर्यावरण संरक्षण समिति, पाटी
नैनीताल	- जनमैत्री, गल्ला, नथुवाखान
पौड़ी गढ़वाल	- नयारघाटी ग्राम स्वराज्य समिति, बाडियूं - नीलकंठ सेवा संस्थान, मलेलगाँव
पिथौरागढ़	- शैक्षणिक ग्रामोन्नति समिति, गणाई-गंगोली - मानव विकास समिति, पव्वाधार - उत्तरापथ सेवा संस्था, मुवानी
रुद्रप्रयाग	- हिमालयन ग्रामीण विकास संस्थान, ऊखीमठ
टिहरी गढ़वाल	- घनश्याम स्मृति शिक्षा एवं कल्याण संस्थान, बडियारगढ़

पत्रिका में दिये गये विचार लेखक/लेखिका के हैं। परिषद् का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्

उत्तराखण्ड महिला परिषद, उत्तराखण्ड की जागरूक एवं क्रियाशील ग्रामीण महिलाओं का संगठन है जिसने ग्राम समुदाय में विकास की मुख्य–धारा के ढाँचे से अलग एक वैकल्पिक विकास की व्यवस्था और उसके क्रियान्वयन के तौर–तरीके को विकसित किया है। उत्तराखण्ड में ग्रामीण महिलाओं के सबसे बड़े संगठन के रूप में प्रतिष्ठित महिला परिषद् का काम राज्य भर में फैले हुए ग्राम–स्तरीय संगठनों व स्वैच्छिक संस्थाओं ने संभाला है, जो ग्रामीण इलाकों में परिवर्तन लाने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं।

यद्यपि उत्तराखण्ड में महिला संगठनों के गठन एवं कार्यों की शुरूआत 1988 से हो गयी थी परंतु चार सौ नब्बे महिला संगठनों की सोलह हजार सदस्याओं तथा वीस स्वैच्छिक संस्थाओं की सम्मिलित आवाज से विकास संबंधी समस्याओं को संस्थात्मक, व्यवहारिक एवं वैचारिक मध्यस्थता देने की जरूरत को समझते हुए, 7 फरवरी, 2000 को उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड महिला परिषद् का गठन किया गया। परिषद् की सदस्याओं में जाति, शैक्षणिक पृष्ठभूमि, उम्र के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता। वड़ी संख्या में पचास वर्ष से अधिक उम्र की महिलायें कभी भी विद्यालय नहीं गयी हैं, परंतु बीस से पचास वर्ष की अधिकतर महिलायें साक्षर हैं और शिक्षा का स्तर प्राथमिक है। गाँवों में जहाँ पूर्व प्राथमिक केन्द्र काम कर रहे हैं, वहाँ सभी लड़कियाँ माध्यमिक स्तर तक पढ़ी हैं तथा हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट तक पढ़ी हुई लड़कियाँ भी काफी संख्या में हैं। कुछ लड़कियों ने शिक्षिका के रूप में कार्य करते हुए बी0 ए0 एवं एम0 ए0 तक शिक्षा पूरी की है। यह जरूरी नहीं है कि गाँव की समृद्ध तथा शिक्षित महिला ही परिषद् की सबसे क्रियाशील सदस्य हो, वल्कि इस जनधारणा के विपरीत कि आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर या शिक्षित महिला ही अच्छा नेतृत्व कर सकती है, गाँव की प्रौढ़ महिलायें, जो यहाँ की स्थाई निवासी हैं, खेती करती हैं, परिषद् की अधिक क्रियाशील सदस्याएं हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, ग्रामीण महिलाओं के ऊपर विकास कार्यक्रमों को थोपती नहीं बल्कि उन्हें बालवाड़ी शिक्षिकाओं, पुरूषों, अध्यापकों, युवाओं, स्थानीय अधिकारियों तथा अन्य संगठनों से सम्बन्धित महिलाओं से प्रत्यक्ष रूप से मेल–जोल रखने तथा सीखने के अवसर प्रदान करती है। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि परिषद् केवल उन्हीं कामों को महत्व दे, जो ग्रामीण/स्थानीय महिलाओं द्वारा स्वयं आयोजित तथा क्रियान्वित किये जा सकें। स्त्री–पुरूष या फिर जातिगत असमानता से सम्बन्धित भावनाएं और बाधाएं खुलकर गोष्ठियों में सामने आते हैं, जो परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने की दिशा में एक अनौपचारिक एवं महत्वपूर्ण प्राथमिक कदम है।

जमीन–प्रबन्धन से जुड़े कार्यों में नर्सरी लगाना, चारा उत्पादन, घेराबंदी करना, खाद बनाना, रोकबाँध बनाना तथा जानवरों की मुक्त चराई पर सम्मिलित रूप से रोक लगाना, जंगलों को बचाना, वनीकरण तथा प्राकृतिक सम्पदाओं का पुनरूत्पादन आदि काम सम्मिलित हैं। इसके अलावा पानी से जुड़ी समस्याओं का समाधान (जैसे–पुराने स्रोतों का जीर्णोद्धार, वर्षा जल संरक्षण, पॉलीथीन की टंकियाँ, फेरो–सीमेंट टेंक आदि) संगठनात्मक तरीके से किया जाता है। स्वास्थ्य और स्वच्छता कार्यक्रमों में शौचालय बनाना, महिलाओं की स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, व्यक्तिगत सफाई, घर एवं गाँव की स्वच्छता, पोषण संबंधी जानकारियों को फैलाना एवं संबंधित गतिविधियों का संचालन आदि कार्य सम्मिलित हैं। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक असमानता संबंधी विषयों पर शिक्षा व जागरूकता लाने के लिए गोष्ठियाँ, सेमीनार, कार्यशालायें तथा प्रशिक्षणों का आयोजन किया जाता है। परिषद् की अनेक सदस्याएं पंचायत प्रतिनिधि बन कर महिलाओं की आवाज को बढ़ा रही हैं। हर वर्ष परिषद् द्वारा उत्तराखण्ड में लगभग बाइस महिला सम्मेलन आयोजित किये जाते है। साथ ही, महिला साक्षरता एवं शिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किया गया है।

संगठन की सदस्याएं उत्तराखण्ड में विकास कार्यक्रमों में नीतिगत बदलाव की माँग कर रही हैं। विभिन्न कार्यक्रम जो कि ग्रामीण विकास, महिला विकास, शिक्षा, खनन, कृषि, जंगल, पानी, आयवृद्धि और पंचायती राज व्यवस्था के लिए बनाये गये हैं, उनके बारे में ग्रामीण महिलाओं की अपनी समझ, जानकारी और अनुभव है। साथ ही, उत्तराखण्ड महिला परिषद् के रूप में काम करते हुए महिलाओं ने विकास के मुद्दे पर अपनी एक वैकल्पिक समझ व कार्य–विधि विकसित की है। इन्हीं अनुभवों को आधार बनाकर उत्तराखण्ड महिला परिषद् की सदस्याएं, सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों में बदलाव व सुधार की माँग करती हैं।

अनुराधा पांडे

नन्दा

उत्तराखण्ड महिला परिषद् की पत्रिका

उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा

वर्ष – 14 दिसम्बर 2015 अंक 15
(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

इस अंक में

			पृष्ठ संख्या
	हमारी बातें	अनुराधा पाण्डे, अल्मोड़ा	
1	राधिका	राधा खनका, मुवानी, जिला पिथौरागढ़	1
2	मेरा जीवन	कौशल्या रावत, सुरना, जिला अल्मोड़ा	4
3	कन्या भ्रूण हत्या क्यों	प्रभा बिष्ट, सह–अध्यापिका, बाजन, जिला अल्मोड़ा	6
4	पर्यावरण की सच्ची प्रहरी है पहाड़ की नारी	भागचन्द केशवानी, प्रधानाध्यापक, रा.जू.हा. पुडियाणी, जिला चमोली	8
5	ग्राम बमियाला	सुरेशी देवी, बमियाला, गोपेश्वर, जिला चमोली	10
6	ग्राम पुस्तकालय खल्ला	सुंदरी बिष्ट, खल्ला, गोपेश्वर, जिला चमोली	12
7	लोक गीत में ऋतु वर्णन	खुशाल सिंह मेहता, मल्खा डुगर्चा, शामा, जिला बागेश्वर संकलन : केदार सिंह कोरंगा, शामा, जिला बागेश्वर	14
8	महिलाओं के बीच काम	बची सिंह बिष्ट, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	16
9	श्रमदान विवरण–महिला संगठन रूँगड़ी	बची सिंह बिष्ट, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	18
10	एक स्त्री की कथा	गीता नाथ, रूईनाथल, जिला पिथौरागढ़	20
11	महिला संगठन बोरखोला (खकोली)	माया जोशी, बिन्ता, जिला अल्मोड़ा	24
12	दियारकोट गाँव में महिला संगठन	दीपा बिष्ट, दियारकोट, जिला चमोली	25
13	ग्राम शिक्षण केन्द्र को चलाने का अनुभव	नीमा सगोई, सुन्दरगाँव, जिला चमोली	26
14	किशोरी संगठन बधाणी	वन्दना नेगी, ईड़ा–बधाणी, जिला चमोली	27
15	किशोरी संगठन तोली	ममता नेगी, तोली, जिला चमोली	29
16	केदारनाथ की पंचमुखी उत्सव डोली	रेशमी भट्ट, सारी ऊखीमठ, जिला रूद्रप्रयाग	30
17	शैक्षणिक भ्रमण	लक्ष्मी नेगी, 'शेप' बधाणी, जिला चमोली	31
18	ग्राम शिक्षण केन्द्र चौरा	भावना साह, चौरा, जिला अल्मोड़ा	33
19	आपदा के बाद आजीविका	सदस्या महिला संगठन किमाणा, जिला रूद्रप्रयाग	35
20	खुले और वन्द प्रश्न	विनोद कुमार, खोला, जिला अल्मोड़ा	36
21	बोझ तले	लक्ष्मी पुष्पवान, ऊखीमठ, जिला रूद्रप्रयाग	38
22	हरयालो	लक्ष्मी भण्डारी, झुरकण्डे, जिला चमोली	40
23	ग्राम शिक्षण केन्द्र नन्दासैंण	रवि कुमार, नन्दासैंण, जिला चमोली	41

24	किशोरी संगठन वैनोली	दिव्या चौधरी, बैनोली, जिला चमोली	42
25	किशोरियों में आया बदलाव	निर्मला जोशी, धारी, धौलादेवी, जिला अल्मोड़ा	43
26	केदारनाथ में आपदा	बबीता तिवारी, पठाली, ऊखीमठ, जिला रूद्रप्रयाग	45
27	कैसा अथक प्रयास है	विमला वहन, दन्या, जिला अल्मोड़ा	47
28	मेरी बात	दीपा पाण्डे, चौड़ा, जिला अल्मोड़ा	48
29	ग्राम शिक्षण केन्द्र बलना	प्रभा बसेड़ा, बलना, जिला अल्मोड़ा	49
30	नामिक	केदार सिंह कोरंगा, शामा, जिला बागेश्वर	50
31	उद्देश्य एवं सफलता	प्रमोद त्रिवेदी, ऊखीमठ, जिला रूद्रप्रयाग	51
32	ग्राम शिक्षण केन्द्र उषाड़ा	पूनम बजवाल, उषाणा, ऊखीमठ, जिला रूद्रप्रयाग	52
33	बदलाव की लहर	लीला नेगी, पुडियाणी, जिला चमोली	53
34	ग्राम शिक्षण केन्द्र में मेरा अनुभव	ज्योति नेगी, जाख, जिला चमोली	54
35	नई सीख नई दिशा	दलीप राज, सगर, गोपेश्वर, जिला चमोली	55
36	सुनहरा अवसर	जायसी नेगी, पुडियाणी, जिला चमोली	56
37	धरती माँ	पुष्पा पुनेठा, दन्या, जिला अल्मोड़ा	57
38	खुद को बदलें	पीताम्बर गहतोड़ी, तोली, जिला चम्पावत	57
39	किशोरी गोष्ठी भालूगाड़ा	राजेन्द्र बिष्ट, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	58
40	महिला सम्मेलन से मिली नई सीख	इन्दू डिमरी, देवलधार, जिला चमोली	60
41	उकाल केन्द्र, दन्या	अनिला पंत, दन्या, जिला अल्मोड़ा	61
42	मैं और मेरा गाँव	बबीता रावत, बमियाला, गोपेश्वर, जिला चमोली	63
43	ग्राम गोष्ठी	राजेन्द्र सिंह, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	65
44	खल्ला गाँव	सुन्दरी, ग्राम–खल्ला, जिला चमोली	67
45	कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र–जालबगाड़ी, मैचून	सोनू बनौला, ग्राम जालबगाड़ी, मैचून जिला अल्मोड़ा	70
46	पाण्डु नृत्य (गैड़ा)	कमलेश नेगी, बधाणी, जिला चमोली	73
47	डायरी की कृपा	स्नेहदीप रावत, नयारघाटी, जिला पौड़ी गढ़वाल	77
48	बानठौक संगठन की सार्थक पहल	विनोद कुमार, खोला, जिला अल्मोड़ा	79
49	वार्षिक किशोरी सम्मेलन	बची सिंह बिष्ट, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	81
50	गणाई क्षेत्र में किशोरी कार्यक्रम	बची सिंह बिष्ट, गणाई–गंगोली, जिला पिथौरागढ़	86

हमारी बातें

पिछले तीन दशकों में उत्तराखण्ड के पहाड़ी ग्रामीण इलाकों में अभूतपूर्व बदलाव आये हैं। यह बदलाव का एक ऐतिहासिक दौर है। आर्थिकी के अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाएं भी बदल रही हैं। पूर्णतया कृषि एवं पशु–पालन पर निर्भर परिवारों की संख्या निरंतर घट रही है। आय के अतिरिक्त स्रोत जुटाने के लिए प्रयास हो रहे हैं। पहाड़ी गाँवों में पहली बार सड़कें पहुँच रही हैं। साथ ही, टेलीविजन और टेलीफोन की सुविधाएं उपलब्ध होने से दूरस्थ इलाकों के निवासी, खासकर महिलाएं, गाँवों से बाहर की दुनिया से परिचित हो रहे हैं। हजारों गाँवों में पहली बार यातायात की सुविधाएं पहुँची है।

सड़कों और संचार के माध्यमों में बढ़ोत्तरी के साथ–साथ जल–जंगल–जमीन पर अतिक्रमण बढ़ा है। व्यवसायिक कार्यों के लिए प्राकृतिक संसाधनों की जरूरत है। कृषि को छोड़कर आजीविका के अन्य स्रोतों की तरफ झुकाव बढ़ने के बावजूद प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ना लाजिमी है। अन्य व्यवसायों के लिए भी तो मूल–सामग्री धरती से ही लेनी होगी।

उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा द्वारा उत्तराखण्ड में किए जा रहे एक गहन अध्ययन से मालुम होता है कि वर्तमान दौर में ग्रामीण पुरूषों/युवाओं को लगभग बत्तीस प्रकार के आजीविका के माध्यम उपलब्ध है (आइ. सी. एस. एस. आर, 2013–15)। इन में कृषि–बागवानी के अतिरिक्त वाहन–चालक, दुकानदारी, पंडिताई, मिस्त्री, लोहार, बढ़ई, मजदूरी, बावर्ची, होटल–लॉज में नौकरी इत्यादि कार्य शामिल है। महिलाओं के पास सिर्फ बीस प्रकार के माध्यम हैं। इन में कृषि, पशु–पालन, घर की व्यवस्था के अतिरिक्त कताई–बुनाई, सिलाई, मजदूरी, डेयरी, संस्था में काम इत्यादि व्यवसाय शामिल है। इस प्रकार व्यवसाय के लिए पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं को कम अवसर उपलब्ध हैं।

इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि बच्चों को पढ़ाई के एक समान अवसर दिये जाने के बावजूद किशोरियों के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। उत्तराखण्ड के गाँवों में बच्चों की शिक्षा के लिए पलायन को इस दौर का एक महत्वपूर्ण बदलाव माना जाता है तथापि आठ गाँवों में हर एक परिवार से इकट्ठा किये गए आँकड़ों से पता चलता है कि पलायन करने वाले परिवारों में किशोर/युवाओं का प्रतिशत चौहत्तर है जबकि छब्बीस प्रतिशत किशोरियाँ पढ़ाई के लिए गाँवों से बाहर गयी हैं। आँकड़े यह भी बताते हैं कि गाँवों से बाहर जा रही

किशोरियों/नवयुवतियों में से चौरासी प्रतिशत उत्तराखण्ड में ही पढ़ रही हैं जबकि तिरेपन प्रतिशत किशोर एवं युवा दिल्ली, महाराष्ट्र, राजस्थान, पंजाब एवं हरियाणा आदि राज्यों में पढ़ रहे हैं।

गाँवों की स्थायी निवासी महिलाएं उत्तराखण्ड महिला परिषद् के साथ जुड़ कर अनेक प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियों एवं रचनात्मक कार्यों में संलग्न हैं। वे साक्षरता के औपचारिक कार्यक्रमों से पढ़ना–लिखना सीखने के अतिरिक्त अनौपचारिक शिक्षण केन्द्रों से संबंधित गतिविधियों के केन्द्र में रही हैं। संगठनों के माध्यम से गाँवों में हर माह नियमित रूप से गोष्ठियाँ होती हैं। गोष्ठी का दिन एवं समय महिलाएं स्वयं तय करती हैं। अधिकतर गाँवों में महीने का एक दिन निश्चित है। उस दिन, बगैर बुलाए महिलाएं स्वयं ही नियत स्थान पर एकत्रित हो जाती हैं।

ग्राम–गोष्ठियों में जल–जंगल–जमीन के साथ–साथ शराब–जुआ–उल्मूलन, कोष जमा करना, पंचायती कार्यों की समीक्षा, सरकारी योजनाओं से लाभ–हानि पर चर्चा एवं संगठन में एकता और मजबूती लाने के बारे में बातचीत होती है। स्त्रियों के हक और अधिकारों पर चर्चाओं में कभी–कभी किशोरी संगठन भी शामिल होते हैं।

संगठनों द्वारा बनाए गये नियमों का पालन कड़ाई से किया जाता है। उदाहरण के लिए–संरक्षित किये गये वन–क्षेत्र से कच्ची लकड़ी काटने, नशे के प्रभाव में झगड़ा या अपशब्द कहने अथवा पशुओं की खेती में मुक्त–चराई पर प्रतिबंध लगाने के नियमों को न मानने वाले परिवारों से दंड वसूलने की व्यवस्था संगठनों ने की है। इस प्रकार से प्राप्त होने वाली धनराशि को महिला संगठन के कोष में जमा कर दिया जाता है। इस धनराशि का उपयोग महिलाएं बिना किसी दबाव के स्वयं निर्णय लेकर करती हैं। संगठनों ने सामुहिक आयोजनों में काम आने वाला सामान जैसे–बड़ी दरियाँ, छोटे–बड़े बर्तन, कुर्सी–मेज, चाँदनी–कनात इत्यादि खरीदे हैं। गाँवों में हो रहे विवाह–जनेऊ–नामकरण आदि सभी अवसरों पर इस सामग्री का उपयोग सामुहिक रूप से किया जाता है। सामग्री के गाँव में ही उपलब्ध हो जाने से धन भी बचता है और समय भी। सामग्री लेने वाले परिवार से महिला संगठन किराए के रूप में कुछ धनराशि लेता है। इस धनराशि को पुनः संगठन के कोष में जमा कर देते हैं। इस तरह, कोष का मूल धन बढ़ता जाता है।

उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़े हुए संगठनों की विशेषता यही है कि गाँव की सभी स्त्रियाँ एक ही संगठन की सदस्य हैं। ''सभी महिलाओं का एक संगठन'', यह भाव स्त्रियों में जोश भर देता है। सभी को एक संगठन में जोड़ने की चाहत स्वतः ही गाँव को एक कर देती है। छोटे–बड़े झगड़ों को निपटाकर एक–मन हो जाने की ललक उमड़ती है तो पीढ़ियों से चले आ रहे विवादों को सुलझने में वक्त नहीं लगता। घर–परिवार के भीतर सास–बहू, ननद–भाभी, जेठानी–देवरानी एक नये उद्देश्य के साथ जुड़ती है तो उनकी भाषा बदलने लगती है। एक–दूसरे को समझने और सम्मान देने की शुरूआत होती है। सभी स्त्रियाँ मिलकर ग्राम–गोष्ठियों में भाग लेती हैं, चर्चाएं करती हैं। समस्याओं को दूर करने की कोशिशें करती हैं। ''मैं'' का भाव छीजता है तो ''हम'' की भावना जोर पकड़ने लगती है। ''हम सब'' के इसी सूत्र से समस्याएं हल होती हैं।

सभी महिलाओं का एक संगठन होने से जाति–राठ उम्र और शिक्षा के भेद से उपजे व्यवहार को समझने और बदलने में मदद मिलती है। संगठन सामाजिक–राजनीतिक भेद–भावों को कम करने का माध्यम बन जाते हैं। यह कदम सामुहिक और व्यक्तिगत विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। महिलाएं खुद को अकेला नहीं समझतीं। साथ ही, संगठन की शक्ति से जुल्म का प्रतिकार करने की ऊर्जा पाती हैं। निरंतर बातचीत से न केवल सोच परिपक्व होती है बल्कि रचनात्मक कार्यों को करने से पहचान भी बनती है। इसी वजह से महिला संगठन एक सम्मानीय दर्जा पा सके हैं।

उत्तराखण्ड महिला परिषद् का मानना है कि सिर्फ धन जमा करने से स्त्रियों की प्रगति के रास्ते नहीं बन सकते। राज्य में सरकारी, गैर–सरकारी संस्थाओं के माध्यम से वृहद् स्तर पर समूह बन रहे हैं। आय–वृद्धि के कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं। स्त्री–केन्द्रित व्यवसायों के लिए विशेष अनुदानों की भी व्यवस्था है तथापि वांछित परिणाम नहीं मिल रहे। इसका एक प्रमुख कारण तो यही है कि आय–सृजन के कार्यक्रमों में ग्रामीण–स्त्रियाँ उत्पादक ही बनी रहती हैं। कृषि से उत्पादन के बदले बाजार में बिकने वाले उत्पाद बनाने लगती हैं। विपण्न का काम कार्यदायी संस्थाएं स्वयं करती हैं।

एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि बचत या आजीविका–सृजन के कार्यक्रमों में आय–वृद्धि प्रमुख उद्देश्य बन जाने से स्त्रियों की सोच को विस्तार देने, संगठनात्मक शक्ति

बढ़ाने जैसे महत्वपूर्ण प्रयास या तो समय की कमी की वजह से छूट जाते हैं अथवा इन मुद्दों को तवज्जो ही नहीं दी जाती। परिणामस्वरूप महिलाएं आय–वर्धन तो करती हैं परंतु सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्था में परिवर्तन के बगैर ''महिला–सशक्तिकरण'' के दावे खोखले लगते हैं। केवल धन की वृद्धि कर लेने से स्त्रियों के प्रति दोयम दर्जे का व्यवहार नहीं बदला जा सकता।

नन्दा पत्रिका के इस अंक में ग्रामीण महिलाओं एवं पुरूषों, अध्यापकों के अतिरिक्त किशोरियों के लेख शामिल किये गये हैं। इन लेखों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण महिलाएं ''झिझक दूर करने'', ''सामाजिक अवसरों पर बोल सकने'' और ''घर–समाज में निर्णय ले पाने'' की क्षमता विकसित कर सकने को महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ समझती हैं। स्त्री–पुरूष असमानता की सोच और व्यवहार के संबंध में यह एक महत्वपूर्ण पाठ है। सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक विसंगतियों पर सोचने एवं उन्हें बदलने की चाहत तभी पैदा होगी जब आपस में निरंतर बातचीत हो। केवल धन की ऊर्जा से जीवन नहीं चलता। संगठनों ने ग्रामीण महिलाओं को शारीरिक एवं मानसिक तौर पर मजबूत करने के साथ–साथ भावनात्मक संरक्षण प्रदान किया है। इसी वजह से स्त्रियाँ एक–साथ मजबूती से खड़ी हो सकी हैं। इन स्त्री–केन्द्रित लेखों के अतिरिक्त ग्राम मल्खा–डुगर्चा, जिला बागेश्वर, से श्री खुशाल सिंह मेहता ने एक पुराना लोक–गीत पत्रिका में प्रकाशन के लिए भेजा है। ऐसे पारंपरिक लोक–गीतों की संपदा अब छीज रही है। गौर से पढ़ें तो पता चलता है कि इस लोक–गीत में ऋतुओं के बदलाव का अद्भुत वर्णन हुआ है।

अगले अंक तक शुभकामनाएं,

अनुराधा पांडे

2015

राधिका

राधा खनका

ग्राम टुणीगैर, मुवानी, विकास खण्ड कनालीछीना, जिला पिथौरागढ़ की निवासी राधिका मेहता महिला संगठन की एक सक्रिय सदस्य हैं। उनका मायका मुवानी से पन्द्रह किमी दूर मुसगूँ में है। उनके दो भाई और दो बहनें हैं। परिवार में बड़ी बेटी होने के कारण वे बचपन से ही घर के काम में माता–पिता की मदद किया करती थीं। पिताजी की गाँव में छोटी सी दुकान थी। माँ कृषि का काम करती थी। घर में काफी जानवर पाले थे। घर में काम अधिक होने के कारण उन्होंने कक्षा दो तक पढ़ाई की।

सत्रह वर्ष की उम्र में राधिका का विवाह हो गया। ससुराल में भी परिवार की बड़ी बहू बनी। इस तरह, परिवार की सभी जिम्मेदारियाँ उनके ऊपर आ गयी। जब राधिका का विवाह हुआ तब उनके ससुर जी की मृत्यु हो चुकी थी। एक ननद की शादी होने के बाद सास की भी मृत्यु हो गयी। उसके बाद राधिका परेशान हो गयी। पति ने छोटी सी दुकान खोली थी। राधिका के लिए चार ननदों और दो बच्चों को मिलाकर आठ लोगों के परिवार को पालना बहुत कठिन हो गया। दूध बेचकर बड़ी परेशानी से धीरे–धीरे चारों ननदों की शादी की। दोनों बच्चों को पढ़ाया। जब बेटी हाईस्कूल में पढ़ रही थी तब उसकी शादी कर दी। दुर्भाग्यवश शादी के छः महीने बाद ही दामाद की मृत्यु हो गयी। राधिका के ऊपर दुःख का पहाड़ टूट पड़ा। बेटी को मायके वापस बुलाकर फिर से विद्यालय में दाखिल कर दिया। बी.ए. करने के बाद बेटी को सरकारी अस्पताल में नौकरी मिल गयी। कुछ समय बाद बेटी की पुनः शादी कर दी। अब वह ससुराल में खुश है।

सन् 2012 में उत्तरापथ सेवा संस्था ने गाँव में महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र खोलने के लिए बातचीत की। यह जानकर राधिका बहुत प्रसन्न हुई। उन्होंने गाँव में सभी को सूचना दी। हर एक महिला से पढ़ना–लिखना सीख लेने का आग्रह किया। गाँव में बैठक करने के पश्चात् उन्होंने केन्द्र के लिए कमरे का चुनाव किया। संचालिका के चयन में भी सक्रिय भूमिका निभाई। राधिका कहती हैं कि उन्होंने बचपन में नहीं पढ़ा तो कोई बात नहीं, वे अब पढ़ती हैं। जब वे केन्द्र में आती तो व्यर्थ की बातों में जरा भी समय नहीं गवाँती थीं। हर समय पढ़ने–लिखने की कोशिश करतीं। नियमित रूप से केन्द्र में आती। महिलाएं हर माह केन्द्र में ही बैठकें करने लगीं। उसके बाद संगठन बनाने के लिए बातचीत की।

25.01.2013 को गाँव में महिला संगठन बनाया गया। जब राधिका को अध्यक्षा बनाने का मुद्दा उठा तो उन्होंने मना कर दिया। कहा कि वे तो हर जगह जाती हैं, हर काम में सहयोग देती हैं। अन्य महिलाओं में से कोई पदाधिकारी बने तो वे संगठन की सदस्य बन कर सक्रिय रूप से काम करेंगी। इस तरह उन्होंने महिलाओं के बीच से ही नेतृत्व को उभारने में संस्था की मदद की।

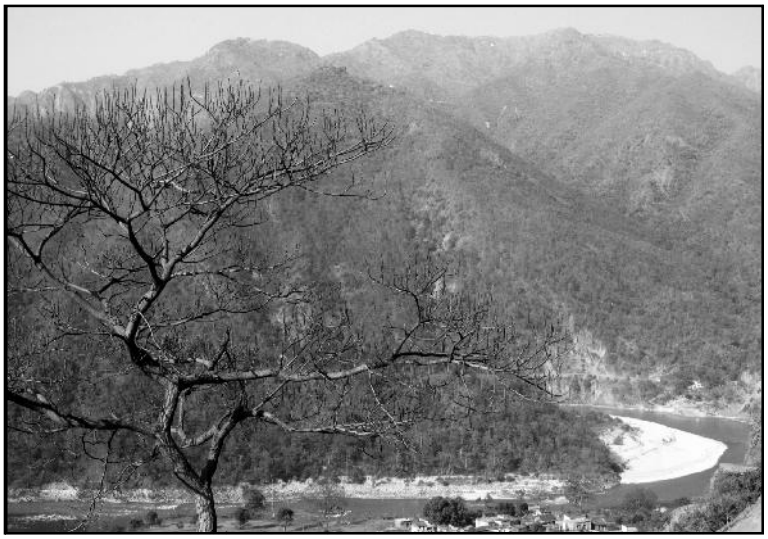

संगठन द्वारा हर माह गाँव में महिलाओं की गोष्ठी होने लगी। अपनी समस्याओं पर चर्चा करते हुए धीरे–धीरे महिलाएं अपने हक की बातें समझने लगीं। महिलाओं का कहना है कि आज तक जो भी अत्याचार सहन किया, वह गलत है। अब वे अपनी समस्याओं का समाधान खुद मिलकर करना चाहती हैं। संगठन की मासिक गोष्ठियों में राधिका अक्सर कहती कि जब महिलाओं के लिए भ्रमण का कोई कार्यक्रम होगा तो वे सबसे पहले स्वयं तैयार होंगी। अपने साथ एक–दो अन्य महिलाओं को भी तैयार करेंगी। वे उत्तराखण्ड महिला परिषद् द्वारा आयोजित गोष्ठी में भाग लेने के लिए अल्मोड़ा गयीं। महिला सम्मेलनों व गोष्ठियों में जाने से उनका आत्म–विश्वास बढ़ गया है।

एक बार महिलाएं पंचायत की गोष्ठी कर रही थीं। उसमें मनरेगा योजना के अन्तर्गत नौले–धारों के निर्माण–संबंधी मुद्दों पर चर्चा हुई। राधिका ने सुझाव दिया कि उनके घर के ऊपर सिंचाई वाली गूल को सुधारना चाहिए, सिंचाई के समय उसमें बहुत पानी आता है। अक्सर पानी उनके घर के भीतर तक चला जाता है। वे इस संबंध में ग्राम–प्रधान को अर्जी देंगी। उन्होंने अर्जी बनवायी। अर्जी की एक प्रति क्षेत्र–पंचायत सदस्य को दी। एक प्रति ग्राम–प्रधान के माध्यम से सिंचाई–विभाग को दे दी। प्रधान से मुहर लगवाकर एक प्रति अपने पास रखी। कुछ समय बाद ग्राम विकासखण्ड के प्रतिनिधियों ने पूछा कि उन्हें किसने भड़काया है। जवाब में राधिका ने कहा कि यह उनकी अपनी समस्या है, कौन भड़कायेगा? वैसे भी इस जमाने में लोग एक–दूसरे को बताना नहीं चाहते हैं। छः महीने इंतजार किया। सरकार द्वारा कोई काम न हुआ। पुनः सिंचाई–विभाग को एक अर्जी दी। राधिका का कहना है कि जब तक वे नहर को ठीक नहीं कर लेतीं तब तक अर्जी देती रहेंगी। कार्यालयों में जाकर अधिकारियों और कर्मचारियों से मिलेंगी, बात करेंगी तो कार्यवाही अवश्य होगी।

इस एकल महिला ने स्वयं बच्चों को पढ़ाया, उनकी शादियाँ की, अपने लिए एक मकान बनाया। इन कार्यों की वजह से कर्ज भी काफी हो गया। कर्ज से मुक्ति के लिए धन की जरूरत थी। इस वजह से राधिका ने घर में ही एक छोटी सी दुकान खोली। जलेबी बनाकर बेची और धीरे–धीरे सभी कर्ज चुका दिया। अब उन्होंने सड़क के किनारे ही एक नयी दुकान बना ली है।

वे सुबह–शाम खेती का काम करती हैं। दिन में दुकान का काम संभालती हैं।

रेशम–विभाग से वर्ष में दो बार रेशम के कीड़े पालने के लिए कर्मचारी मुवानी के इलाके में आते हैं। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत वे कीड़े लेकर पालती हैं और रेशम विभाग को बेचती हैं। जब सरकार की तरफ से कीड़े पालने के लिए मकान बनाने हेतु पचास हजार रूपये का अनुदान आया तो उस समय जमीन के कागजों की जरूरत थी। मुवानी की जमीन राधिका के नाम पर नहीं थी। उनकी पैतृक–भूमि मुवानी के कस्बे से लगभग पचास किमी की दूरी पर स्थित क्वीटी में थी। राधिका ने क्वीटी में पटवारी से मिलकर जमीन के कागज बनाए। तहसील में गयीं। जमीन अपने नाम करने के बाद खाता–खतौनी लेकर आयीं। उन्हें अनुदान के पैसे मिल गये। उनका कहना है कि ''यदि यह सब पहले मालुम होता तो मैं अपने काम स्वयं कर लेती। जब से महिला संगठन से जुड़ी, साक्षरता केन्द्र में पढ़ने लगी और सामाजिक चर्चाएं सुनीं तो आत्म–विश्वास बढ़ गया। स्वयं काम करने की ताकत आ गयी। पहले की तरह अब मुझे डर नहीं लगता। पहले सोचती थी कि अनपढ़ हूँ। कैसे सरकारी विभाग में जाऊँ?किस से कहूँ?मुझसे कुछ पूछेंगे तो क्या कहूँगी?अब डरती नहीं हूँ। सभी बहनों से कहती हूँ कि सरकारी काम पुरूष ही नहीं अपितु महिलाएं भी कर सकती हैं। यदि स्त्रियाँ स्वयं काम करने लगेंगी तो आत्म–विश्वास बढ़ेगा और काम भी अच्छा होगा।'' राधिका यह कहना कभी नहीं भूलतीं कि, ''मैं तो संस्था की बदौलत यहाँ तक पहुँची हूँ।''

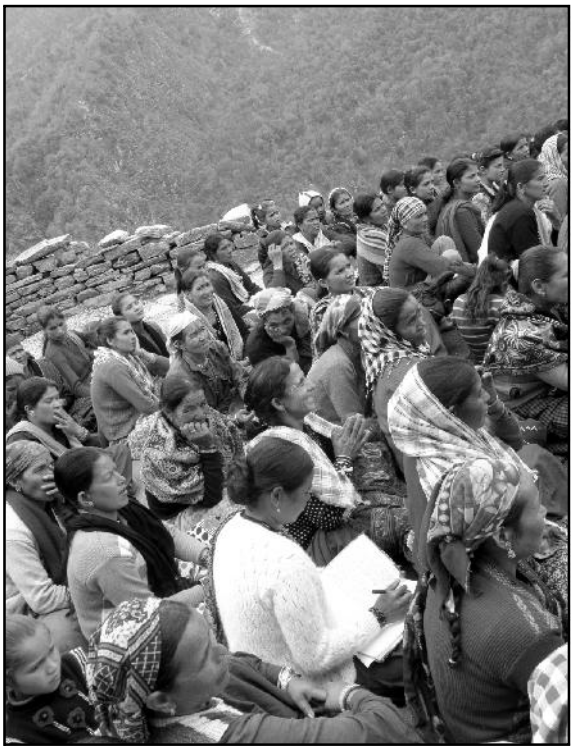

मेरा जीवन

कौशल्या रावत

मैं सुरना गाँव में रहती हूँ। मेरा जीवन बड़ा दुःखमय है। बचपन में अपने माँ–बापू के घर में बड़े ही प्यार से पली थी। उन्होंने मुझे कक्षा नौ तक पढ़ाया। मेरे बापू देहरादून में न्यू फॉरेस्ट में क्लर्क थे। वे बहुत ही सीधे और शान्त स्वभाव वाले इन्सान थे। किसी के कहने पर बापू ने एक ऐसी जगह शादी कर दी जहाँ डोली से उतरते ही जिम्मेदारियों का बोझ सिर पर आ गया। मेरे पति कुमाऊँ रेजीमेंट में कार्यरत थे। घर–गृहस्थी का कार्य ठीक ही चल रहा था कि घर के देवी–देवताओं के प्रकोप से पति जलन्धर पंजाब में परेड के समय बेहोश हो गये। वहाँ पर फौजी घर के देवी–देवताओं की बातें क्या जानते? उन्हें अस्पताल में ले जाकर बिजली का करेन्ट लगा दिया। कुछ समय बाद उन्हें घर भेज दिया। उस समय मुझे बीसवाँ साल लगा था। साल भर की एक बेटी थी। दूसरी बेटी चार माह के गर्भ में थी। कुछ ही वक्त बीता था कि पति का देहान्त हो गया। पति की मृत्यु के बाद मुझ पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा। फिर भी, बच्चों की खातिर खुद को संभाला और घर के काम–काज में जुट गई।

धीरे–धीरे मेरी बेटियाँ बड़ी हो गयीं। अब उनके बच्चे भी हो गये हैं। मेरी जान–पहचान के लोग और परिवारजन कहते कि क्या दो लड़कियाँ?यह सुनते ही मैं असहज हो जाती। सपने में मेरे पति बहुत समझाते कि भविष्य की ओर देखो। क्या देता है लड़का? तब मैं अपनी बेटियों पर भरोसा करती। ग्रामवासियों ने मुझे बहुत सहारा दिया। उन्हीं के सहारे से मैंने अपना जीवन निर्वाह किया है। मुझे अपने गाँव पर बड़ा नाज है।

मैं बचपन में गाँव के लिए जान कुर्बान करने की बातें ही सोचती रहती थी। आज गाँववासियों ने मुझे उप–सभापति बना दिया है। इस पद पर पहुँचकर मैंने भी अपने जीवन को धन्य माना। मैं अत्यंत गर्व महसूस करती हूँ कि इस गौरवशाली देश हिन्दुस्तान में जन्म लिया। एक ऐसा देश जहाँ झाँसी की रानी, चाँद बीबी, रानी दुर्गावती ने अपनी जान कुर्बान करने में जरा भी देर न लगाई। महात्मा गाँधी, भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस इत्यादि कई शीर्षस्थ नेताओं ने देश की रक्षा के लिए प्राणों की आहुती दी है। हम क्या ठहरे? यही सोचते हुए मैंने जीवन–निर्वाह किया है। जितना मुझ से हो सकेगा, अपने गाँव की रक्षा के लिए काम करूँगी। शरीर में प्राण रहने तक गाँव को सुधारने के बारे में सोचूँगी।

मेरा गाँव, सुरना, पर्वतीय घाटी में बसा हुआ है। यह एक बहुत ही सुन्दर और उपजाऊ घाटी है। घाटी के चारों ओर देवी–देवताओं का वास है। पूर्वी दिशा में गोलू देवता का मन्दिर है जो उदेपुर नाम से प्रसिद्ध है। गाँव की पश्चिम दिशा में पाण्डवखोली है। जहाँ पाँचों भाई, पाण्डव, वन–वास के लिए आये। दक्षिण–दिशा में माँ दूनागिरी का विशाल मन्दिर है। यह स्थान उत्तराखण्ड ही नहीं अपितु विदेशों में भी विख्यात है।

मेरे गाँव की पवित्र–पावन धरती में दौ सौ से कम ही ग्रामवासी निवास करते है। यहाँ का मुख्य काम पशु–पालन और खेती है। गाँव की सभी औरतें लगातार खेती और घर के कामों में जुटी रहती हैं। अब महिलाओं ने थोड़ा संगठन और समूह बनाने शुरू किये हैं। मैं अपने गाँव की महिलाओं से कहती हूँ कि हम लोगों को आगे बढ़ना चाहिए। इस समय हमारे देश में कई सुविधाएं हो गयी हैं। सभी अभिभावक बेटियों को आगे बढ़ायें। हमें अपने माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी पर बहुत गर्व है। वे सब को आगे बढ़ने का मौका दे रहे हैं। लड़का–लड़की में कोई अन्तर नहीं कर रहे हैं। अब हम औरतों को भी बहुत हिम्मत आ गयी है।

हमारे गाँव के किसान खेती में जी–जान लगाते हैं लेकिन फसल–पानी को बन्दर और सुअर बरबाद कर रहे हैं। पहले यह गाँव अरबी और अन्य साग–सब्जियों के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था। औरतें जंगल से बाँज की पत्तियाँ, चीड़ की लकड़ियाँ लाती थीं। जब हमने संगठन बनाया तो कच्ची लकड़ी के कटान को रोक दिया। आज मेरे गाँव की महिलाएं कच्ची लकड़ियाँ, बाँज की टहरियाँ नहीं काटती। अब गाँव में काफी सुधार होने लगे हैं। गाँव के महिला संगठन को माया जोशी जी ने जोड़ा। गाँव की औरतों को सक्षम किया। मैं संस्था के प्रतिनिधियों को हार्दिक धन्यवाद देती हूँ कि उनके प्रयत्नों से यह पिछड़ा हुआ गाँव विकास की ओर जाने लगा है। हम लोगों ने संगठन के माध्यम से गाँव के गधेरों (छोटी नदी) में झाड़ियाँ काटने का काफी प्रयास किया। यहाँ कई वर्षों की पुरानी झाड़ियाँ हैं। उन्हें काटने में काफी समय लग रहा है। अब जो भी हुआ, हम महिलाएं निरंतर प्रयत्न करेंगी। कठिनाइयों को हल करेंगी। मुझे अपने देश की उन्नति पर पूरा भरोसा है। मेरे गाँव का एक गीत इस प्रकार से है:

भली मेरी जन्म भूमि, के भाला पहाड़ा।
के भाला लागनी यांका, ऊँचा–ऊँचा डाना।
गोरू–बकारा ग्वाव जानी, छ्वाटा–छ्वाटा नाना।
गाड़ उनि, गध्यार उनि, डाना लागू होला।
के भाला लागुछाँ यांका हुड़किया बौला।।
के भाला लागनी यांका हरी–भरी सारी।
के भाला लागनी यांका धुर का घस्यारी।।
भली मेरी जन्म भूमि, के भाला पहाड़ा।
के भाला लागनी यांका, गध्यारा यूँ गाड़ा।।

कन्या भ्रूण हत्या क्यों

प्रभा बिष्ट

नारी को परमात्मा की एक अनुपम कृति कहा गया है। नारी के बिना इस संसार की कल्पना नहीं की जा सकती। आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं। वैज्ञानिक मंगल–ग्रह में जीवन की तलाश कर रहे हैं। फिर भी लड़का–लड़की के बारे में धारणाएं एवं सामाजिक मूल्य बदले नहीं है। आज के वैज्ञानिक और तकनीकी युग में लड़की से उसका जन्म लेने का अधिकार भी छिनता जा रहा है। विज्ञान अजन्मी बेटियों के लिये अभिशाप बन गया है। जिस संसार में एक नन्ही–सी कली जन्म लेने के लिए तैयार है, वही दुनिया उसके साथ दरिन्दों के समान व्यवहार करती है, उसे जन्म लेने से वंचित करती है।

आप को शायद यह जानकर हैरानी होगी कि वर्ष 2011 की जनगणना में हरियाणा राज्य के महेन्द्रगढ़ जिले में लिंगानुपात 895 है। इसका एक अर्थ यह हुआ कि इस इलाके में आने वाले समय में 105 लड़कों को शादी के लिये लड़कियाँ नहीं मिलेंगी। कल्पना कीजिये कि अगर लिंगानुपात में गिरावट जारी रही तो क्या होगा।

22 जनवरी 2015 से माननीय प्रधानमंत्री जी ने ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' राष्ट्रीय अभियान शुरू किया है। सरकार चाहे कितने ही कठोर कानून बना ले लेकिन जनगणना के जो नतीजे सामने आ रहे हैं, उनसे स्पष्ट होता है कि देश में लगातार बच्चियाँ कोख में मारी जा रही हैं। इस कृत्य में परिवार और कुछ लालची डॉक्टर, जो अपने कर्त्तव्य को भूलकर पैसों की चकाचौंध में अन्धे बने हुए हैं, लिप्त रहे हैं। मैं उन परिवारों को बुजदिल कहूँगी जो इस प्रकार का कृत्य करने से डरते नहीं। संतान की लालसा करना अच्छी बात है। बेटे की चाह में गर्भ में पल रही बेटी को मारना एक कुकृत्य है। ऐसे अपराधों से बचना चाहिये। हो सकता है कि हम संसार के कानून से बच जायें लेकिन अपनी आत्मा की आवाज और ईश्वर के कानून से कभी कोई नहीं बच सकता। मुझे इस बात पर गर्व है कि मैं अल्मोड़ा जिले की निवासी हूँ। यहाँ लिंगानुपात के आँकड़े अपेक्षाकृत बेहतर हैं परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि इस जिले में कन्या भ्रूण–हत्याएं नहीं होतीं।

प्रश्न यह है कि लड़की

को माँ की कोख में ही क्यों मारा जाता है? इसका सटीक सा उत्तर यही है कि आज भी बेटी को बेटे से कम आँका जाता है। मानसिकता ऐसी हो गयी है कि जिस माँ के बेटे वह सबसे अधिक ''भाग्यवान'' और जिस माँ–बाप के बेटियाँ, वे ''बेचारे'' हैं। समाज की मानसिकता तो ऐसी है कि चाहे बेटी घर को स्वर्ग बना दे लेकिन स्वर्ग पहुँचाने वाला तो बेटा ही है। बेटा चाहे आजीवन माँ–बाप से बचता रहे लेकिन मृत्यु के बाद तो वही श्राद्ध करने वाला है।

यह मत भूलें कि वह मकान घर जैसा नही लगता जहाँ पर बेटी की हँसी–खुशी और मधुर वाणी न हो। सोचें, समझे और विचार करें। कन्या भ्रूण हत्या न स्वयं करें, न ही किसी अन्य को करने दें। न ही इसके लिए किसी को प्रोत्साहित करें। दैनिक जीवन में ऐसे बहुत से लोग मिलते हैं जो कन्या–भ्रूण हत्या के घोर समर्थक हैं। उनकी सलाह पर ध्यान न दें। खुद विवेक से काम ले। हमें एक ऐसे युग की शुरूआत करनी है जहाँ लिंग–परीक्षण के लिये कभी भी अल्ट्रसाउण्ड न होता हो। आइये हम सभी बेटियों के जन्म पर खुशियाँ मनायें। उनके स्वागत में नाचें और मंगल–गीत गा कर शिशु को आशीर्वाद दें।

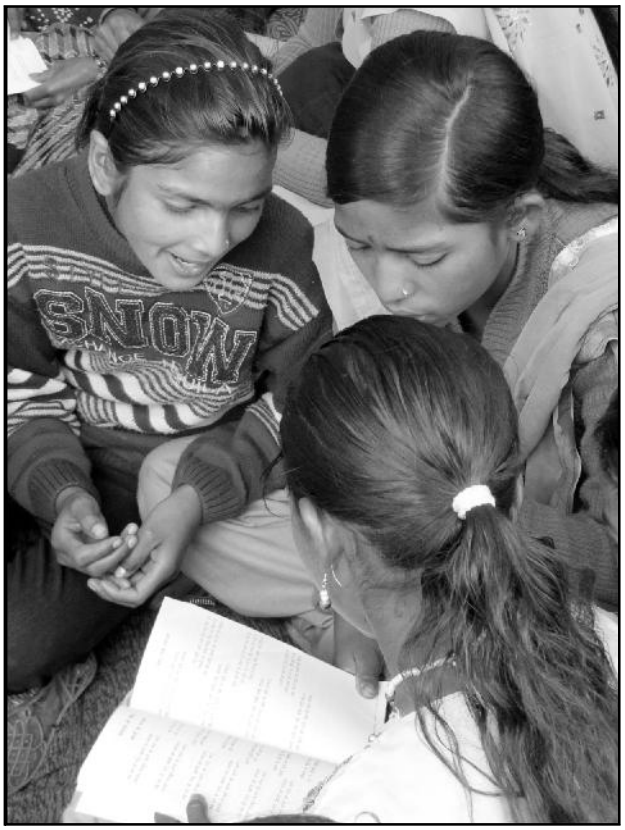

पर्यावरण की सच्ची प्रहरी है पहाड की नारी

भागचन्द केशवानी

उत्तराखण्ड में वन–क्षेत्र एक बडे भू–भाग में फैला हुआ है। वनों को सजाने–संवारने एवं इनका संरक्षण करने में पहाड़ की नारी की अहम् भूमिका है। पहाड़ की स्त्रियाँ पैदल ही लंबी दूरी तय करके मवेशियों के लिए चारा पत्ती एवं घास का प्रबन्ध करती हैं। उन्हें इस बात की चिन्ता सताती है कि कहीं वन–क्षेत्र विलुप्त तो नहीं हो रहा। वनों के संरक्षण के लिए गौरा देवी के अतिरिक्त कई अन्य स्त्रियों ने बहुत काम किया है। कुमारी बीना जैसी कई नारियों ने जल–जंगल बचाने के लिए जान की कुर्बानी दी है। इसी कारण आज उत्तराखण्ड के वन संवंर्धित हो सके हैं।

यह सत्य है कि चारा–पत्ती एवं जलाऊ लकडी के लिए पहाड़ की नारियाँ वनों का दोहन करती हैं परन्तु उनका तरीका विशेष होता है। वे पेड़ों को बचाती हुई काटती हैं। छोटे–झाड़ीनुमा पेड़ों को सँवारकर बड़ा करती हैं तथा अतिरिक्त पोषण ले रही टहनियों को चारे के लिए लाती हैं। वे जंगल के महत्व को भली–भाँति जानती हैं। ग्रामीण–स्तर पर जंगल बचाने में महिला संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। सामुहिक सहमति से बनाए गये नियमों के अनुसार संगठन की सदस्याएं जंगलों की सुरक्षा करती हैं। अधिकतर प्रौढ़ महिलाएं पढ़ी–लिखी नहीं हैं परन्तु उनका अनुभव इतना अच्छा होता है कि वे पेड़ों की वृद्धि, पतझड़ का समय एवं टहनियों का एपिथिलियम वाला भाग, जो सर्वाधिक वृद्धि करता है, पहचानती हैं। विद्यालयों में दी जाने वाली पर्यावरण शिक्षा प्रदान करने वाले अध्यापकों एवं छात्रों के पास वनस्पतियों के बारे में उतना अनुभव नहीं होता जितना ग्रामीण महिलाएं स्वयं अनुभव से सीख लेती हैं।

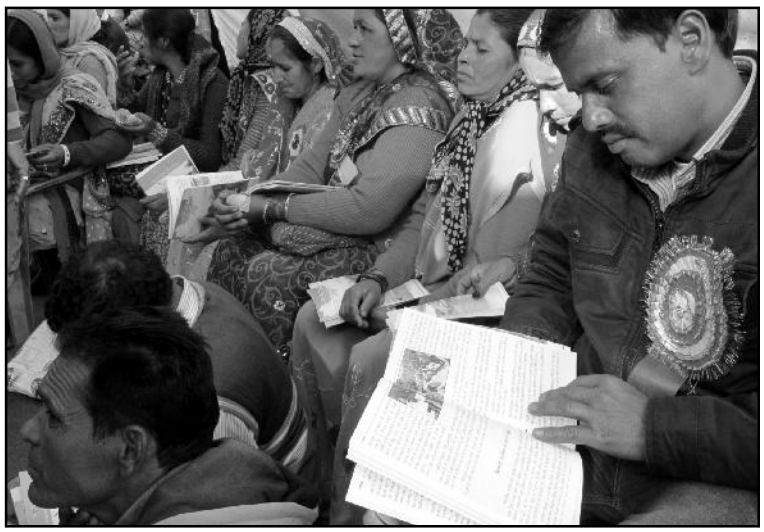

ग्राम वन सीमित भू–भाग में होने के बावजूद वे उसकी सुरक्षा हेतु खुद कठोर नियम बनाकर दो–दो महिलाओं की बारी लगाती हैं अथवा किसी अन्य व्यक्ति को चौकीदार रख लेती हैं। इसके लिए मासिक वेतन संगठन के कोष या हर घर से छोटी सी धनराशि इकट्ठा करके देती हैं। वे अपने बीच से किसी एक महिला को कोषाध्यक्षा बनाती हैं। उसके पास सम्पूर्ण

आय–व्यय का हिसाब रखा रहता है। इस कोष की आय का मुख्य स्रोत जंगलों को नुकसान पहुँचाने वाले व्यक्तियों से लिए गए जुर्माने की धनराशि है। इसके अलावा वे स्वयं गोष्ठी करके शराब के प्रभाव अथवा अन्य सामाजिक बुराइयों में लिप्त होकर हुड़दंग मचाने या झगड़ा करने वाले तत्वों से जुर्माना लेती हैं। जुर्माना न देने वाले व्यक्ति और उसके परिवार को गाँव के किसी भी कार्यक्रम में सम्मिलित न करने की शर्त रखी जाती है। इस प्रकार महिला संगठनों के द्वारा गाँव की एक अनुशासित पंचायत का कार्य भी किया जाता है।

उत्तराखण्ड के पहाड़ी गाँवों में विकास के कार्यों में महिला संगठनों ने अहम भूमिका निभाई है। अधिकतर महिला संगठनों ने स्वयं महिला कोष की धनराशि से शादी–ब्याह के लिए टेन्ट, सामाजिक आयोजनों में खाना बनाने के बड़े–छोटे बर्तन, दरियाँ इत्यादि सामान खरीदकर गाँव के पंचायत–भवन में रखे हैं। इससे गाँव के गरीब परिवारों को शादी–ब्याह में होने वाले व्यवस्था–संबंधी अतिरिक्त खर्च से छुटकारा मिल जाता है। महिलाएं स्वयं शादियों में विभिन्न प्रकार के व्यंजन तैयार करती हैं। इस वजह से गाँव में सभी परिवारों को सुविधा मिलती है।

मैं नंदा पत्रिका के माध्यम से पर्यावरण की सच्ची प्रहरी समस्त मातृशक्ति को प्रणाम करना चाहता हूँ। साथ ही, उत्तराखण्ड में कार्य कर रही उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा एवं शेप संस्था, बधाणी, को भी नमन करता हूँ कि उन्होंने पहाड़ की महिलाओं को एक मजबूत मंच दिया हैं। खास बात यह है कि इस मंच का संचालन पूर्णतया उत्तराखण्ड की महिलाओं, खासकर ग्राम संगठनों, के हाथ में है। यह एक अनूठा प्रयास है।

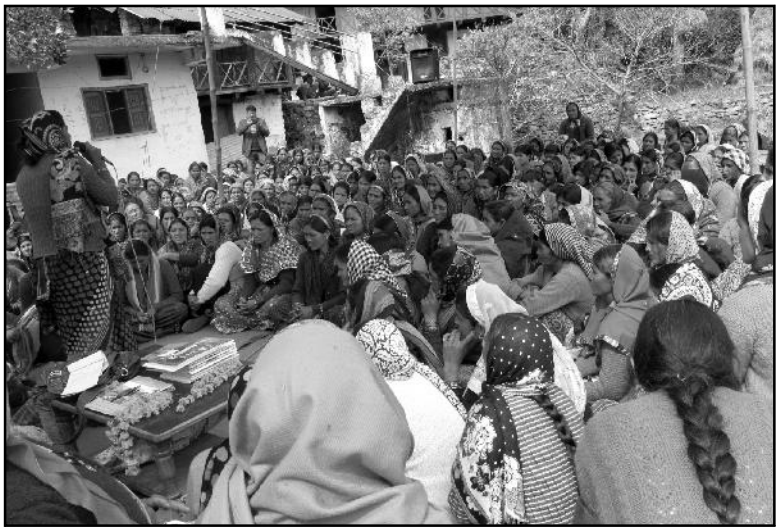

ग्राम बमियाला

सुरेशी देवी

मेरा बचपन एक गरीब घर में गुजर–बसर करते हुए बीता। खेती के अतिरिक्त आय का कोई साधन न था। खाने–पीने के लिए अनाज घर से ही उपलब्ध होता था। इसी से गुजर–बसर चलती थी। मेरे बचपन के दिनों में ग्रामवासियों का पहनावा बिल्कुल फर्क था। लड़कों के लिए चौथी तथा लड़कियों के लिए ऊन की बनी हुई आंगड़ी होती थी। इसी प्रकार के घर पर बने हुए ऊनी कपड़े सभी पहनते थे। मेरी शादी बारह साल में हो गयी। शादी में ऊनी कपड़ों के साथ बीस रुपये की आंगड़ी खरीदी। उस समय शादी के वक्त लहंगा–साड़ी कोई नहीं पहनता था।

पहले महिलाएं ससुराल से मायका तथा मायके से ससुराल तक पैदल ही आती–जाती थीं। ग्रामवासी चमोली तथा कोटद्वार की बाजार से नमक लाते थे। चाय के लिए थुनेर का प्रयोग किया जाता था। यह एक प्रकार का स्वादिष्ट एवं पौष्टिक पेय है। उस समय लोग चायपत्ती का प्रयोग नहीं करते थे। जेवर में नथ, साँगली, करैली, सुई आदि का उपयोग होता था। विवाह के अवसर पर अनाज तथा पशु दिये जाते थे। यह माता–पिता की तरफ से पुत्री को भेंट होती। दहेज शब्द किसी ने सुना भी न था।

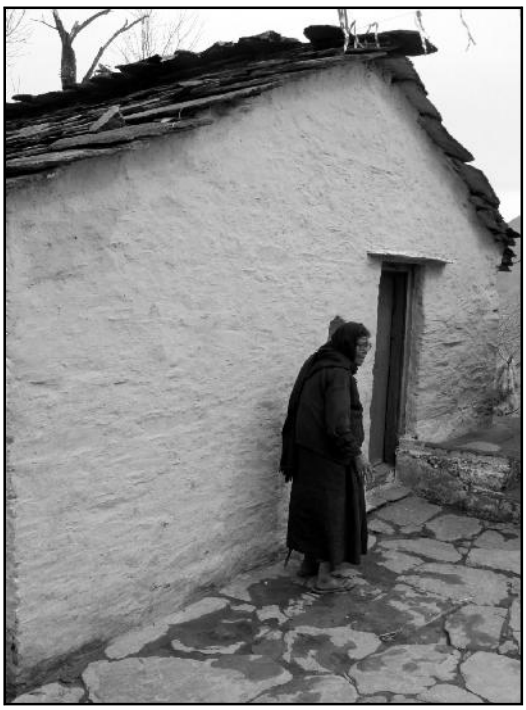

ससुराल पहुँचने पर बहू अपना चेहरा पूरी तरह से ढ़क लेती थी। नजर उठाकर देखने को मना करते थे। बहू कभी भी जेठ तथा ससुर के साथ बातचीत नहीं करती थी। यहाँ तक कि पति के साथ भी बात नहीं के बराबर ही होती। इससे उनकी इज्जत होती थी। खेती–बाड़ी के मुख्य साधन कुदाल, बैल तथा दराती थे। पहले जानवरों का आतंक न था। जंगली जानवरों के आतंक से न मनुष्य और न ही खेत प्रभावित होते थे। आज के समय में जंगली जानवरों ने पूरी खेती बर्बाद कर दी है।

बचपन में पढ़ाई का कोई मेल–मिलाप न था। विद्यालय दूर होने के कारण बच्चों के हाथों में कॉपी–पैन नहीं रहते थे। जो बच्चे विद्यालय जाते उनके लिए एक काठी के टुकड़े से लिखने का साधन बनता। रिंगाल को छील कर कलम बनायी जाती थी। चादर को चौकोर बाँधकर उसमें गाँठ लगा दी जाती। इस तरह, स्कूल जाने का बस्ता तैयार हो जाता। उस वक्त जिसके पास पैसा होता, वही पढ़ते थे। सभी घरों में खूब भेड़–बकरी रहते थे। गाय–भैंस कम पाले जाते

थे। ग्रामवासी घर–खेती की जरूरत का सभी सामान भेड़–बकरियों पर ढ़ोते या स्वयं अपनी पीठ पर रखकर लाते थे। पहले हमारे गाँव में विभिन्न प्रकार के अनाज होते थे। जैसे–गेहूँ, चौलाई, कोंणी, झिंगोरा, चीड़ा और अनेक प्रकार की दालें पैदा होती थीं। लोग घर में बीज रखते थे। आज अनाज कम हो गए हैं।

उस वक्त अनाज के बदले अनाज दिया और लिया जाता था। जैसे आलू देकर उसके बदले चावल लेते थे। हमारे घर में भी पहले आलू, चौलाई आदि खूब मात्रा में होता था। आज इसे नगदी फसल कहा जाता है लेकिन उस वक्त अनाज ही कहा जाता था। वर्तमान समय में जंगली जानवर अधिक हो गये हैं और उत्पादन कम हो गया है।

पहले जाखेश्वर शिक्षण संस्थान के प्रमुख स्व. आनंद सिंह बिष्ट जी के नेतृत्व में महिलाएं वृक्षारोपण, बालवाड़ी के साथ ही अन्य कई सामाजिक कार्य करती थीं। ग्रामीण महिलाएं भ्रमण में अल्मोड़ा, गैरसैंण, नैनीताल आदि कई स्थानों में गईं लेकिन बिष्ट जी की मृत्यु के बाद संगठन पूरी तरह से कमजोर हो गया। अब एक बार फिर से नव ज्योति महिला कल्याण संस्थान तथा उत्तराखण्ड महिला परिषद् द्वारा संगठनों को मजबूत करने के लिए लगातार गाँवों में बैठकें की जा रही हैं। इन बैठकों में भाग लेने से यह महसूस होता है कि महिलाएं आगे आकर कई प्रकार के काम कर सकती हैं। अब शिक्षण केन्द्र के संचालन से बच्चों को भी नये–नये कौशल सीखने का मौका मिल रहा है। वे कागज से ही अनेक प्रकार की आकृतियाँ बनाना सीख गए हैं। केन्द्र में बच्चों को अनेक किस्म के खेल भी सिखाए जाते हैं।

ग्राम पुस्तकालय खल्ला

सुंदरी बिष्ट

मेरे गाँव खल्ला में नवम्बर 2013 को ग्राम पुस्तकालय खुला। पुस्तकालय शुरू होने से पहले मैंने अल्मोड़ा में प्रशिक्षण लिया। गाँव में केन्द्र खुलने से बच्चों में बड़ी उत्सुकता पैदा हुई। तीस–चालीस बच्चे केन्द्र में आते। सबसे पहले बच्चों ने मुझसे यही पूछा कि किताबों के अलावा अन्य कौन–कौन सी सामग्री केन्द्र में उपलब्ध है। तब मैंने खेल की सामग्री दिखाई। इस सामग्री में रस्सी, लूडो, कैरम, बैडमिंटन, फुटबॉल इत्यादि के साथ ही खेल–खेल में गणित सीखने के लिए अनेक प्रकार के किट शामिल हैं। बच्चों की रूचि किताबें पढ़ने में थी इसलिए केन्द्र से पुस्तकों का लेन–देन शुरू हो गया। धीरे–धीरे विभिन्न प्रकार के खेलों में बच्चों की रूचि जागृत हुई। कैरम, लूडो, बैडमिंटन, रस्सी–कूद आदि खेल बच्चों के लिए नितांत नये थे। अधिकतर बच्चों ने इस प्रकार की सामग्री कभी देखी भी न थी। तेरह–चौदह वर्ष तक के लड़कों ने कैरम खेलने में अधिक रूचि प्रदर्शित की। साथ ही पढ़ने के लिए कहानी और कविताओं की किताबें घर ले जाने लगे।

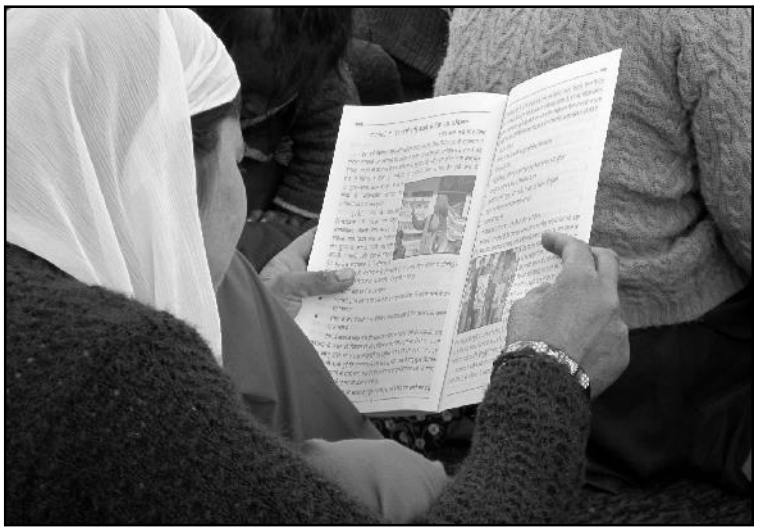

अगले प्रशिक्षण में अल्मोड़ा से शतरंज का खेल खेलने के लिए सामग्री मिली। केन्द्र में शतरंज आ जाने से बच्चे उसमें अधिक रूचि लेने लगे। खेलों में तेरह–चौदह वर्ष तक की उम्र के सभी लड़के–लड़कियाँ प्रतिभाग करते हैं। खेलते समय बच्चे बताते हैं कि सामग्री बहुत अच्छी है। उन्हें शतरंज खेलना पसंद है। गणित–माला पर भी बच्चों की रूचि विकसित हुई है। कहानी बनाना, गिनती करना, पहाड़े बोलना तथा जोड़ना–घटाना आदि सभी गतिविधियाँ गणित–माला की मदद से की जाती हैं। छः से आठ साल तक के बच्चे जोड़ो–क्यूब की मदद से गणित सीखते हैं। विशेष–तौर पर मेज, कुर्सी, बन्दूक आदि आकृतियाँ बनाते हैं। नौ से ग्यारह साल तक के बच्चे रंगोमेट्री की मदद से आकार–परिवार बनाते हैं। अलग–अलग रंगों के आधार पर चित्र बनाते हैं। कागज का कार्य भी बच्चों को अच्छा लगता है। थैला, कटोरी, टोपी, माला आदि सामग्री बनाने में बच्चों की रूचि दिखाई देती है। केन्द्र में आने वाली दस से चौदह साल तक की

सभी लड़कियाँ और लड़के ठप्पों द्वारा चित्र बनाने लगे हैं। यह गतिविधि मैंने प्रशिक्षण के दौरान अल्मोड़ा में सीखी थी। गाँव में वापस आकर यह कार्य सभी बच्चों को सिखाया।

साल में एक बार बाल मेले का आयोजन होता है। इस आयोजन में सभी बच्चे उत्साह–पूर्वक भाग लेते हैं। मेले में अनेक प्रकार की गतिविधियों में प्रतिभाग करने का मौका मिलता है। मुझे भी बच्चों के साथ नई–नई गतिविधियाँ करने में बड़ी खुशी होती है।

केन्द्र में नियमित पहुँचने वाले अखबार के द्वारा सभी ग्रामवासियों को देश–दुनिया की खबरें मिल रही हैं। ग्रामवासी मुझसे कहते हैं कि इस केन्द्र को कभी भी बन्द न होने देना। केन्द्र से नयी प्रकार की एक ऐसी शिक्षा मिलती है जो स्कूल से बिल्कूल फर्क है। विद्यालयों में छात्र–छात्राओं को सिर्फ पढ़ाया जाता है लेकिन केन्द्र में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ होती हैं। कभी खेल के माध्यम से तो कभी किताबों और अखबार के माध्यम से जानकारियाँ और कौशल बढ़ते हैं। केन्द्र के पास में ही एक बड़ा सा खेत है। गाँव के युवक इस खेत में क्रिकेट खेलते हैं। मौसम खराब होने पर वे भी केन्द्र में आकर बच्चों के साथ कैरम और शतरंज खेलने लगते हैं। इससे विभिन्न आयु–वर्ग के लड़कों और लड़कियों के बीच संवाद के पुल बन जाते हैं। यह एक अच्छी शुरूआत है।

जब केन्द्र में महिलाओं की बैठक होती है तो वे ''नन्दा'' पत्रिका ले कर पढ़ती हैं। चेतना–गीत की किताबें निकालकर कुछ ऐसे गीत गाती हैं जो समाज में एकता बढ़ाने, महिलाओं के कष्ट कम करने और शिक्षापूर्ण माहौल बनाने का संदेश देते हैं।

लोक गीत में ऋतु वर्णन

खुशाल सिंह मेहता
संकलन : केदार सिंह कोरंगा

बारह सी को बारह मास, इनू छः ऋतु की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

औनी रूनी–जानि रूनी, इनू ईश्वर की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।
चैत–बैशाख, बसन्त ऋतु, पाकुनी हिशालु–किरमण–काफल,
इनू दीनू मास–रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।
औनी रूनी–जानि रूनी, इनू ईश्वर की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

बारह सी को बारह मास, इनू छः ऋतु की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

जेठ–आषाण गर्मी ऋतु, ठुल छै दिन, नान छै रात,
खेत में काम घूम–घुमारि, घाम लागि रै आग की चारी,
सुखनी गधेरा–नाल–चुपटाला,
इनू दिनू मास–रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।
औनी रूनी–जानि रूनी, इनू ईश्वर की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

बारह सी को बारह मास, इनू छः ऋतु की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

सावन–भादो वर्षा ऋतु, झुम–झुमिया पाणि,
हुछ अन्यारा–रूछ कछ्यारा,
गाढ़–गधेरा भरिया रूछ,
डान–काना में हरिया रूछ,
इनू–दिनू मास–रंग–रंगीलों, ओ रंग–रंगीलो।
औनी रूनी–जानि रूनी, इनू ईश्वर की लीला,
रंग रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

बारह सी को बारह मास, इनू छः ऋतु की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

असोज–कार्तिक, शरद ऋतु,
खेत में काम धूम–धुमारी,
धान पाकुनी, भात चाखुनी,
साग–पात लै बाढ़ ढकि रै,

घास–पात लै बाट ढकि रै,
कदुवा करेली, घ्वाग–ककड़ा,
इनू दिनू मास–रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।
औनी रूनी–जानि रूनी, इनू ईश्वर की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।
बारह सी को बारह मास, इनू छः ऋतु की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

मंगशिर–पूस, ठंड क दिन,
अंगेठी चै छ बाँज क गीना,
बिन अंगेठी न रै सकिना,
धनिया–पालक–लाई झरिया,
इनू दिनू मास–रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।
औनी रूनी–जानि रूनी, इनू ईश्वर की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।
बारह सी को बारह मास, इनू छः ऋतु की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

माघ–फाल्गुन शिशिर ऋतु, खिचड़ी खानि,
मैत में पली, ध्याणी बुलोनी, खाणी बखत काँव बुलोनी,
फाल्गुन मास हु छ होली,
सर रररर भर पिचकारी,
इनू दिनू मास–रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।
औनी रूनी–जानि रूनी, इनू ईश्वर की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।
बारह सी को बारह मास, इनू छः ऋतु की लीला,
रंग–रंगीलो, ओ रंग–रंगीलो।

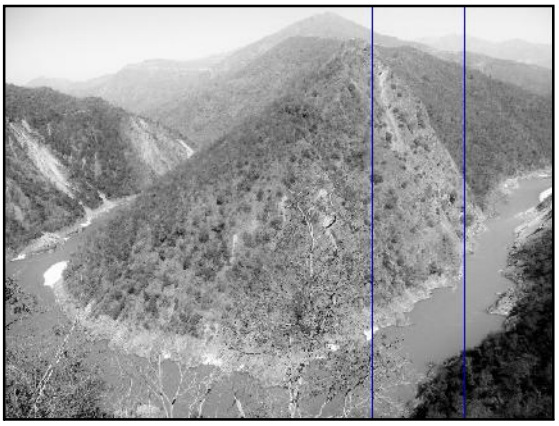

महिलाओं के बीच काम

बची सिंह बिष्ट

संस्था के कार्यकर्त्ताओं को महिलाओं के बीच काम करते हुए अनेक प्रकार के अनुभवों से गुजरना होता है। काम के मुद्दे जमीनी और वास्तविक होते हैं। मसलन महिला संगठन में नई पीढ़ी की बहुओं का नेतृत्व इस बात पर अधिक जोर दे रहा है कि उन्हें पशुतुल्य श्रम से निजात दिलाने वाले साधन उपलब्ध करवाये जायें। जबकि पुरानी पीढ़ी की महिलाएं आपस में एकता करने, जल–जंगल–जमीन को बचाने और खेती में अधिक सक्रियता से काम करने पर जोर देती हैं।

महिलाओं की आवाज को अनसुना करना, उन्हें कम अवसर देना, उन्हें पुरूषों से कम क्षमतावान समझने की अवधारणाएं हमारे समाज में सदियों से मौजूद रही हैं। संस्था के प्रयासों से लैंगिक–भेदभाव से जुड़े तमाम मुद्दे धीरे–धीरे महिलाओं की समझ का हिस्सा बन रहे हैं। महिलाएं ग्राम गोष्ठियों, सम्मेलनों तथा उत्तराखण्ड महिला परिषद् द्वारा अल्मोड़ा में आयोजित की जाने वाली बैठकों से इन मुद्दों पर समझ बना रही हैं। इसी समझ के आधार पर किशोरियों के बीच सक्रियता से कार्य करने की जरूरत उभर कर सामने आई। इसी समझ को जीवन–कौशल और व्यक्तित्व–विकास के मुद्दों से जोड़कर किशोरी कार्यशालाओं में रखा जाता है।

महिलाओं के समग्र–विकास की दृष्टि से किये जा रहे कार्यक्रमों में जल–जंगल–जमीन के संरक्षण और जलवायु–परिवर्तन के मुद्दों पर काम करने के अलावा सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वे स्वयं की ताकत को पहचानें। साथ ही, सामुहिक ताकत को बढ़ाने का प्रत्यन्न करें। उसे आधार बना कर संसाधनों, परिवार, गाँव व पंचायतों के विकास में भूमिका निभाएं। अपने काम का महत्व समझें ताकि लोग भी उसे महत्व दें। महिलाएं हमेशा ही यह चिन्ता प्रकट करती हैं कि खेतों में मेहनत से उगाई गयी फसलों को जंगली जानवर नुकसान पहुँचा रहे हैं और सरकार

इसका कोई उपाय नहीं खोज रही है। इससे कृषि का उत्पादन लगातार गिर रहा है। कृषि तो जीवन का हिस्सा है, आजीविका है। वे तमाम कष्टों के बाद भी कुछ न कुछ मेहनत करके फसलों का उत्पादन कर रही हैं। कृषि में लगाया गया शारीरिक श्रम समय के अनुसार तकनीकी सहायता की माँग करता है।

पंचायतों में महिलाएं विभिन्न पदों पर मनोनित हैं। वार्ड–सरपंच, प्रधान और क्षेत्र पंचायतों का काम पुरूष कर रहे हों तो भी यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है कि स्त्रियाँ सामाजिक क्षेत्र में स्वयं के योगदान और उसके प्रति जवाबदेही को लेकर सतर्क हो रही हैं। महिलाओं के साथ काम करते हुए हमने बातचीत के लिए कुछ मुद्दों का सहारा लिया। कुछ बिंदु इस प्रकार से हैं–

- निर्माण की योजनाओं से महिलाओं का कष्ट दूर नहीं होगा। न ही वे योजनाएं सफल हो सकती हैं जिनमें महिलाओं के हितों को नहीं जोड़ा जाता

- किशोर–किशोरियों के साथ काम करते हुए संस्था ने लगातार यही कोशिश की है कि एक ऐसे समाज का निर्माण हो जहाँ प्रत्येक किशोर–किशोरी को सुरक्षित चलने, पढ़ने, खेलने और बढ़ने का माहौल और एक समान अवसर मिल सकें

- संगठन समूह नहीं है। न ही यह कुछ क्रियाशील महिलाओं का गुट है। गाँव की प्रत्येक महिला की भागीदारी सामुहिक कार्यों में बनाने और उसे बढ़ाने के लिए बनाया गया एक सुविधाजानक ढ़ाँचा ही संगठन है। महिलाएं स्वयं कुछ ऐसा कार्य करें जिससे उनके जीवन के कष्ट कम हों। साथ ही, वे अन्य सभी महिलाओं के साथ समानता का व्यवहार कर सकें

- ग्रामीण महिलाओं को अधिक सतर्क, समझदार और जागरूक रहने की आवश्यकता है ताकि कोई भी उनकी सरलता का फायदा न उठा सके

- शारीरिक, भावनात्मक, शाब्दिक और यौन–उत्पीड़न के खिलाफ माहौल बनायें और इसका प्रतिकार करें।

संस्था ने अनुभव से यह भी सीखा है कि महिलाएं भ्रमण करने, गोष्ठियों में हिस्सा लेने और आपस में अनौपचारिक चर्चाओं से सीखती हैं। एक दूसरे से बात करते हुए ही पुराने दायरे तोड़ने और सोच को व्यापक बनाने की क्षमता बढ़ती है। अभी यह प्रयास जारी है कि पुराने संगठनों के अनुभव नये संगठनों एवं नयी पीढ़ी की महिलाओं को विकास के मुद्दे तय करने में मदद करें।

श्रमदान विवरण–महिला संगठन रूँगड़ी

बची सिंह बिष्ट

महिला संगठन रूँगड़ी की सदस्याओं ने गाँव में अनेकानेक कार्य श्रमदान से किये हैं। इस मुद्दे की समीक्षा के लिए 9 नवम्बर, 2014 को गाँव में एक सामुहिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में गाँव की लगभग सभी महिलाएं एवं पुरूष सम्मिलित हुए। गाँव की मंदिर–समिति ने महिलाओं से राय माँगी कि वे भागवत् के आयोजन में क्या कार्य करेंगी। पहले से इस प्रकार के कार्यों में आम–तौर पर पुरूष एक–तरफा निर्णय लेते थे और उसी को पूरे गाँव की सहमति समझ लिया जाता था।

संगठन बनने के बाद बैठकों में महिलाओं को आमंत्रित करके उनसे राय ली जाने लगी है। उनके सुझावों का सम्मान हो रहा है, यह एक विशेष बात है। अब सामुहिक कार्यों में महिलाएं एवं पुरूष बराबर की भागीदारी करते हैं। मिलजुलकर कार्यों का संपादन करते हैं। मंदिर–समिति द्वारा आयोजित बैठक में लिए गये निर्णयों पर अमल करते हुए प्रत्येक महिला ने हर दिन चार घंटे का श्रमदान किया। सयानी महिलाओं ने संगठन की युवा सदस्याओं का मार्गदर्शन किया। 11 नवम्बर से 21 नवम्बर, 2014 तक प्रतिदिन क्रमशः कुल मानव–दिवस का श्रमदान इस प्रकार से हुआः

दिनाँक	कार्य का स्वरूप	उपस्थित महिलाएं	श्रमदान दिवस	लागत मूल्य (रूपये)
11.11.2014	लकड़ी काटना	20	10	2500
12.11.2014	पत्थर ढोना	26	13	3250
13.11.2014	पत्थर ढोना	29	14.5	3625
14.11.2014	पत्थर ढोना	33	16.5	4125
15.11.2014	मिट्टी खलाना/हटाना	35	17.5	4375
16.11.2014	मिट्टी हटाना	22	11	2750
17.11.2014	मिट्टी हटाना	29	14.5	3625
18.11.2014	ईंट हटाना	47	23.5	5875
19.11.2014	ईंट लाना	46	23	5750
20.11.2014	पत्थर लाना	29	14.5	3625
21.11.2014	पत्थर/बालू लाना	94	47	11750
कुल		**410**	**205**	**51,250**

(8 घंटा=1 दिन) (1 दिन= रूपये 250)

कुछ समय पहले रूँगड़ी महिला संगठन की पूर्व–सचिव ने विधायक–निधि के माध्यम से किये गए काम में प्रत्येक महिला को आठ घंटे का मेहनताना रूपये 250, यानि पुरूषों के बराबर,

दिया था। इस बार ग्यारह दिनों में महिलाओं ने रूपये 51,250 मूल्य का श्रमदान करके जहाँ गाँव के सामुहिक कार्य में योगदान दिया, वहीं सर्वाधिक चौरानब्बे तक की संख्या में चार घंटा श्रमदान करके आपसी एकता का भी परिचय दिया।

महिलाएं स्वयं अपने श्रम का मूल्य आर्थिक तौर पर नहीं आँकती, न समाज ही उनके श्रम को इस दृष्टि से महत्व देता है। इसी मुद्दे को चर्चा का विषय बनाने के लिए 21.11.2014 को महिला संगठन ने पुनः एक बैठक की। इस बैठक में गाँव की अड़तालीस महिलाएं उपस्थित थीं। उन्होंने स्वयं किये गए कार्य की समीक्षा भी की। इस गोष्ठी में श्रमदान करने वाली प्रत्येक महिला का नाम सहित विवरण दिया गया।

ग्रामोन्नति शिक्षण समिति का मानना है कि उत्तराखण्ड महिला परिषद् से जुड़ा हुआ प्रत्येक महिला संगठन वर्ष भर में किये गये श्रमदान का लेखा–जोखा अपने पास रखे। वर्ष के

अन्त में उसका श्रममूल्य निकाले और जो भी राशि प्राप्त हो उसे चर्चा के लिए गाँव के बीच में रखे ताकि लोग जान सकें कि महिलाएं कितना श्रम सामुहिक–हित में कर रही हैं। आशा करते हैं कि सभी संगठन ऐसा करने का प्रयास करेंगे और महिलाओं के श्रम–मूल्य की राशि को संस्था की जानकारी में भी लायेंगे। इस विवरण को उपलब्ध कराने के लिए संस्था हंसी डसीला, नंदी आमा, रेखा डसीला, लीला डसीला एवं रूँगड़ी तथा डिगारकोली ग्राम संगठन की सभी सदस्याओं को धन्यवाद देती है।

एक स्त्री की कथा

गीता नाथ

ग्राम बड़ेत (बदला हुआ नाम) में एक स्त्री रहती थी। उसका नाम गायत्री था। गायत्री के दो भाई और चार बहनें थी। वह परिवार में सबसे बड़ी थी। उसके पिताजी मजदूरी और माँ खेती का काम करती थी। गायत्री बचपन से ही माँ–पिताजी के साथ घर और खेती के हर एक काम में सहयोग करती थी। छोटे भाई–बहनों की देखभाल करना उसकी जिम्मेदारी थी। जब वह कक्षा दस में पढ़ रही थी तब उसकी शादी जिला मुख्यालय के नजदीक बसे हुए एक गाँव में हो गई। उस वक्त गायत्री की उम्र सोलह वर्ष की थी।

ससुराल में देवर, ननद और सास–ससुर सहित भरा–पूरा परिवार था। शादी के कुछ समय बाद ही पति ने उसके साथ हिंसापूर्ण व्यवहार शुरू कर दिया। गायत्री कुछ समय तक चुपचाप सहन करती रही लेकिन जब स्थिति बिगड़ने लगी तो मायके में सभी बातें बता दीं। मायके में परिजनों ने उसे ससुराल में रहने की सलाह दी। बताया कि लड़की का मायके में रहना अच्छा नहीं होता। वह अपनी ससुराल में ही रहे। वे मायके से ही उसकी देखरेख करेंगे। गायत्री ने सोचा कि घर में छोटे भाई–बहन हैं, गरीब परिवार है, माँ–पिता को बच्चों का पालन–पोषण करना है। यह सोचकर वह ससुराल वापस चली गयी।

ससुराल में खेती, जानवरों और घर का पूरा काम करती पर परिजन उसे भरपेट खाना नहीं देते थे। अपशब्द कहने व मारपीट करने का सिलसिला जारी रहा। पति स्वास्थ्य विभाग में काम करते थे। वे रात को घर वापस आते और उल्टी–सीधी बातें कहकर उसे मारते। वे हर वक्त "मर जा" या "मायके चली जा" कहकर उसे दुत्कारते। जली हुई बीड़ी से हाथ–पैर और बदन जलाकर उसे कुरूप कर देने की चेष्टा करते। एक बार मारते हुए गायत्री का पैर तोड़ दिया। चीख–पुकार करने पर उसका मुँह बन्द कर दिया और जान से मारने की धमकी दे दी।

एक दिन परेशान होकर गायत्री ने अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डालकर आग लगाने की कोशिश की। तब परिजनों ने उसके हाथ से माचिस छीन ली। गायत्री गर्भवती थी। मार–पीट करने पर चिल्लाने लगी। तब पड़ोसी आये और उन्होंने घर के लोगों को खूब डांटा कि वह एक सुशील स्त्री की जिन्दगी बर्बाद करने पर तुला हुआ है। परिणामस्वरूप मारपीट कम हो गई।

कुछ समय बाद वही पुरानी दिनचर्या शुरू हो गयी। धीरे–धीरे गायत्री को मालुम हुआ कि पति के किसी अन्य स्त्री के साथ सम्बन्ध हैं। गायत्री निराश हो गई। पति से कहने लगी कि वे बाहर कुछ भी करें परन्तु उसे न मारें, घर में रहने दें। होने वाली संतान की चिंता उसे खाए जा रही थी परन्तु पति पर कोई असर न हुआ। शादी के दो वर्ष बाद गायत्री की जुड़वा बेटियाँ पैदा

हुई। दो बेटियाँ पैदा होने के शोक में परिजनों ने प्रसव के बाद उसे भरपेट खाना नहीं दिया।

अत्यंत परेशान हो जाने से गायत्री बेटियों को लेकर मायके वापस आ गयी। उसके मायके आ जाने के दो महिने बाद उसकी सास, जेठ और पति बुलाने आ गये। गायत्री ने ससुराल वापस जाने से मना कर दिया। उसने सोचा कि ससुराल जाकर वही पुराने हालात हो जायेंगे। तब पति ने दोनों बेटियों को उसकी गोद से ले लिया और अपने साथ वापस ले गये। लड़कियों की याद में गायत्री पागल सी होकर जंगलों–खेतों में इधर–उधर फिरने लगी। कहीं पेड़ के नीचे बैठकर जोर–जोर से रोती। तब उसका मन लगाने के लिए पिताजी ने दुबारा पढ़ने के लिए भेज दिया। इस तरह, गायत्री ने इन्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। उसी गाँव के प्राथमिक विद्यालय में शिक्षा–मित्र का पद निकला तो वह बच्चों को पढ़ाने लगी। कुछ समय बाद गाँव के ही किसी एक व्यक्ति ने विभाग में शिकायत कर दी कि गायत्री बड़ेत गाँव की स्थायी निवासी नहीं है। इसे पद नहीं मिलना चाहिए। इस तरह गायत्री का वह काम छूट गया।

अब वह दिन भर घर के भीतर बैठी रहती। किसी से बोलती नहीं थी। कहीं जाती नहीं थी। जब कोई घर पर आ जाये तो तुरंत बिस्तर में लेट जाती या फिर भीतर किसी कमरे में जा छिपती। उसे किसी से भी बातचीत करने की इच्छा नहीं होती थी।

कुछ समय बाद एक स्वैच्छिक संस्था ने बच्चों के लिए शिक्षा का एक केन्द्र खोलने के लिए गाँव में सर्वेक्षण किया। गाँव में बच्चों की संख्या काफी थी। ग्रामवासियों ने कार्यकर्त्री के लिए गायत्री का नाम दे दिया। अगले दिन गोष्ठी करने की योजना बनाई। गाँव के सभी लोगों ने सहमति दी कि गायत्री को भी गोष्ठी में आना होगा लेकिन वह नहीं आयी। गोष्ठी में न आने की वजह पूछने के लिए संस्था के प्रतिनिधि उसके घर में गये। तब पड़ोसियों ने बताया कि वह किसी से भी बोलती नहीं है। संस्था की दीदी उससे मिली। कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। गायत्री ने हामी तो भर दी लेकिन कहा कि वह काम नहीं कर पायेगी। कारण पूछने पर चुप्पी साध ली।

पुनः संस्था के कार्यकर्त्ता उसके पास गये। बार–बार पूछने पर गायत्री ने आप–बीती बता

दी। साथ ही यह भी पूछा कि संस्था उसके बारे में इतना क्यों सोच रही है। लगभग दो माह तक इसी तरह से अनौपचारिक बातचीत होती रही। धीरे–धीरे गायत्री को विश्वास हुआ कि केन्द्र में काम करने से समय कट जायेगा। तब वह काम करने को सहमत हुई। संस्था के कार्यक्रमों को समझने लगी। शिक्षिका का प्रशिक्षण लिया। जानकारी बढ़ती गयी। अप्रैल 1994 में उसने गाँव में एक अनौपचारिक केन्द्र खोला। गोष्ठी का आयोजन किया। गोष्ठी में गाँव के सभी लोग सम्मिलित हुए परन्तु गायत्री एक शब्द भी नहीं बोली।

गायत्री नियमित रूप से केन्द्र को खोलती थी। धीरे–धीरे बच्चों से बातचीत करने लगी। संस्था के कार्यकर्त्ताओं के साथ गाँवों की गोष्ठियों में जाना शुरू किया। मार्च 1995 में गाँव में महिला संगठन बना। संगठन की गोष्ठी में वह कभी–कभी महिलाओं के साथ बातचीत करती। कुछ समय बाद बालवाड़ी का काम छोड़कर किशोरियों के साथ काम करने लगी। किशारी संगठन बनाये। उनके साथ समस्याओं पर चर्चा करती। वह किशोरियों की परेशानियों को समझती थी। सशक्त बनो, देर से शादी करो, स्वास्थ्य पर ध्यान दो, यही संदेश देती। उसके साथ किशोरियाँ खुश रहती थीं। जब वह गाँव में जाती तो किशोरियाँ ''दीदी आ गयी'' कहती हुई तुरंत एक जगह पर इकट्ठा हो जाती। सभी आपस में मिलती–जुलतीं और गाँव, महिलाओं एवं किशोरियों की समस्याओं पर चर्चा करतीं।

धीरे–धीरे गायत्री ने स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। संस्था की दीदी के साथ शैक्षणिक भ्रमण के लिए देश के अलग–अलग राज्यों में गयी। अब वह गोष्ठियों में कहने लगी कि,''मैं काम करने को मना करती थी। यदि मुझे संस्था ने समझाया न होता तो घर के अन्दर बैठकर रोती रहती। एक समय आता कि पागल हो जाती और मेरी जिंदगी यूँ ही खत्म हो जाती।'' जब ससुराल पक्ष को उसके संस्था में काम करने की बात मालुम हुई तो जवाब भिजवाया कि वह घर वापस आ जाये। इस बीच उसके पति का स्वास्थ्य बिगड़ गया था। दो साल तक बिस्तर में पड़े रहने के बाद उनकी मृत्यु हो गयी। लगभग तीन वर्ष बाद ससुर की भी मृत्यु हो गयी। ससुराल में ननद और देवरों की शादी हुई पर गायत्री को पता भी नहीं चला। छोटी बच्चियों का लालन–पालन दादी किया करती थी। बेटियों के थोड़ी बड़ी हो जाने पर परिजनों ने उन्हें बताया कि उनकी माँ एक खराब औरत है। यदि वह अच्छी माँ होती तो बेटियों को ससुराल में छोड़कर मायके में आराम से न रहती।

गायत्री उस गाँव में कुछ परिवारों को जानती थी। उन्हीं से बेटियों के बारे में पूछती रहती। उनसे पास आकर रहने को कहती परंतु वे माँ पर भरोसा न करती थीं। माँ समझती थी कि बेटियों का पालन–पोषण अच्छी तरह से नहीं हो रहा। पति की मृत्यु के बाद जब गायत्री मृत्यु का प्रमाण–पत्र लेने ग्राम–प्रधान के पास गयी तो उन्होंने भी उसकी असुरक्षित जिन्दगी के बारे में बातचीत की। उसे सलाह दी कि बेटियों को अपने पास रखे। गायत्री ने पुनः बच्चियों को

बुलाने की कोशिश की लेकिन वे नाराज हो गईं। बड़ी होती हुई लड़कियों की पढ़ाई–लिखाई, संस्कार आदि जिम्मेदारियों को लेकर गायत्री बहुत चिन्तित रहती थी। कुछ समय बाद एक निकटवर्ती गाँव के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में गायत्री को काम मिल गया।

सास की मृत्यु के बाद उसने पुनः बेटियों को अपने पास बुलाने की कोशिश की। चाचा–चाची द्वारा देखरेख हो भी सकेगी या नहीं, इसी चिंता में गायत्री घुलती रहती थी। परन्तु बेटियाँ उसके पास आने को सहमत न हुईं। वे सयानी हो रही थीं और समझदार भी। घर का सारा काम करतीं, फिर विद्यालय जातीं। धीरे–धीरे काम का बोझ बढ़ता गया। ग्रामवासियों ने भी उनसे माँ के पास जा कर रहने को कहा। गाँव में गायत्री की रिश्तेदारी थी। उसने बड़ी बेटी का फोन नम्बर माँगा। फोन करके बच्चों की खोज–खबर लेती रही। फोन से उन्हें समझाती, शिक्षित और संस्कारशील बनाने की कोशिशें करती।

एक दिन गायत्री गाँव में गयी। बेटियों को पास बुलाकर बहुत समझाया। वे मान गयीं। माँ से घर चलने को आग्रह किया। गायत्री ने कहा कि यदि वे उसके साथ आयेंगी तो वह घर चलेगी, अन्यथा नहीं। उस समय दोनों बेटियाँ बारहवीं कक्षा में पढ़ रही थीं।

कुछ समय बाद गायत्री की पुत्रियों ने बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। माँ और बच्चों में फोन से बातें होने लगी। गायत्री की देवरानी ने भी उस से घर आने का आग्रह किया। तब गायत्री ने शर्त रख दी कि यदि बेटियाँ उसके पास आयें तो वह घर आयेगी।

मायके में उसने छोटे भाई–बहनों को पढ़ाने और उनकी शादी तय करने में अभिभावकों की बहुत मदद की। साथ ही, गाँव में सभी के सुख–दुःख में मदद करती। गाँववासी कहने लगे कि गायत्री पहले से बदल गयी है। पहले घर के अन्दर बैठ कर रोने वाली यह स्त्री सभी की सहयोगी बन गयी थी। ''किसी से डरती नहीं,'' यह कहते हुए ग्रामवासी उसकी प्रशंसा करने लगे।

जब बेटियों ने बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली तो वे माँ के पास आ गईं। आगे की पढ़ाई के लिए महाविद्यालय में दाखिला ले लिया। जब गायत्री प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में काम करने लगी तो कहती कि जितनी खुशी किशोरियों के साथ काम करने में होती थी उतनी इस काम में नहीं है। यह अलग तरह का काम है। संस्था द्वारा आयोजित किये गये किशोरियों के जीवन–कौशल प्रशिक्षण में माँ और बेटियाँ साथ–साथ आयीं। संस्था के कार्यकर्त्ताओं के लिए भी यह पल विलक्षण बन गया। गायत्री ने संतोष जताते हुए सभी को बताया कि उसने कभी भी यह नहीं सोचा था कि बच्चे उसके पास आकर रहेंगे। वे सभी एक घर की चौखट से बाहर निकल कर साथ–साथ आगे बढ़ेंगे। संस्था के सहयोग से वह अपने पैरों पर खड़ी हो पाई है। अब गायत्री अन्य ग्रामवासियों को भी सलाह देती है कि वे कभी भी निराश होकर न बैठें। मेहनत और लगन से काम करें तो सफलता अवश्य मिलती है।

महिला संगठन बोरखोला (खकोली)

माया जोशी

बोरखोला गाँव, जिला अल्मोड़ा, का महिला संगठन काफी सक्रिय है। संगठन की सदस्याओं ने गाँव में काफी अच्छा जंगल बनाया है। महिलाएं संरक्षित किये गए जंगल से कच्ची लकड़ी, बाँज तथा चारा–पत्ती नहीं काटती हैं। खास बात यह है कि गाँव के पुरूष और युवक भी महिला संगठन का भरपूर सहयोग करते हैं। जब गर्मी के मौसम में जंगलों में आग लगती है तो महिलाएं आधी रात को भी दौड़ पड़ती हैं। अपने गाँव के ही नहीं अपितु दूसरे गाँव के जंगलों में भी आग बुझाने और पेड़ों को बचाने के लिए जाती हैं। आग बुझाने की एवज में उन्हें वन–विभाग द्वारा पुरस्कार भी मिले हैं। महिलाएं इनाम की धनराशि को कोष में जमा करती हैं। वे हर माह झाड़ियों व रास्तों की सफाई करती हैं। महिलाओं ने गाँव में शराब की रोक–थाम भी की है।

गाँव में शराब पीकर गाली–गलौज की घटनाएं नहीं होती। न ही महिलाएं आपस में अपशब्दों का प्रयोग करती हैं। हर माह की पाँच तारीख को संगठन की गोष्ठी होती है। गोष्ठी में गाँव के पूरे हिसाब–किताब पर चर्चा होती है। संगठन के पास गाँव की जरूरत के लिए सामान रखा रहता है। जैसे सामुहिक कार्यक्रमों में उपयोग होने वाले छोटे–बड़े बर्तन, गैस का चूल्हा, चाँदनी, दरियाँ, कुर्सियाँ, पन्द्रह मेजें आदि सामान गाँव में ही उपलब्ध है।

महिला संगठन ने धीरे–धीरे लगभग एक लाख रुपये की धनराशि जमा की है। कुछ धन कर्ज पर दिया है और कुछ बैंक में जमा कर रखा है। संगठन की सभी सदस्याएं दस रुपये प्रति माह जमा करती हैं। वे ग्राम शिक्षण केन्द्र को देखने के लिए बराबर वहाँ पर जाती हैं। उनके सहयोग से केन्द्र सुचारू रूप से चलता है। महिलाएं हर काम मिलकर करती हैं। संगठन की अध्यक्षा तारा जोशी को सहयोग देने के लिए राधिका बोरा दीदी हर वक्त तैयार रहती हैं। संगठन की अन्य सभी सदस्याएं भी एक–दूसरे की मदद करती हैं।

इस गाँव में तीन तोक हैं। सत्तर महिलाएं संगठन की सदस्याएं हैं। सभी सदस्याएं अध्यक्षा की बातें मानती हैं और आपसी सहयोग एवं एकता की भावना से काम करते हुए महिलाओं की पहचान को मजबूती देती हैं। क्षेत्र में बोरखोला महिला संगठन की पहचान एक सम्मानीय एवं अनुकरणीय पहल के तौर पर होती रही है। महिलाओं के आपसी सहयोग और निष्काम कर्म की भावना से ही उन्हें यह पहचान मिली है।

दियारकोट गाँव में महिला संगठन

दीपा बिष्ट

दियारकोट गाँव, जिला चमोली, में लगभग चार–पाँच वर्षों से महिला संगठन सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है। इस गाँव की महिलाओं ने विकास के प्रति बहुत जागरूकता दिखाई है। संगठन ने गाँव के जंगल का संरक्षण किया है। पेड़–पौधे लगाकर एक बड़ा जंगल बनाया है। जंगल की सुरक्षा के लिए एक चौकीदार रखा। जंगल के संरक्षण के लिए वन–चौकीदार, भजन सिंह जी, ने पूरी तरह महिला संगठन को सहयोग दिया है।

पहले गाँव में पानी की बहुत कमी थी। इस समस्या से ग्रामवासी निरंतर जूझते थे। जब बाँज के जंगल का संरक्षण और संवर्धन किया तो गाँव में पानी की मात्रा थोड़ा–सा बढ़ गई। संगठन बनने के बाद महिलाएं सामाजिक क्षेत्र में आगे बढ़ी हैं। कहीं भी किसी प्रकार का कार्यक्रम करना हो तो वे गोष्ठी करके उस विषय पर चर्चा करती हैं। कार्यक्रम की रूपरेखा बनाती हैं। अनेक अवसर ऐसे भी आए हैं जब महिलाओं ने दिन भर खेती का कार्य पूरा करके रात को कार्यक्रमों की तैयारी की है। संगठन ने सामाजिक बुराइयों पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये। गाँव के पुरूष भी संगठन को सहयोग देते हैं।

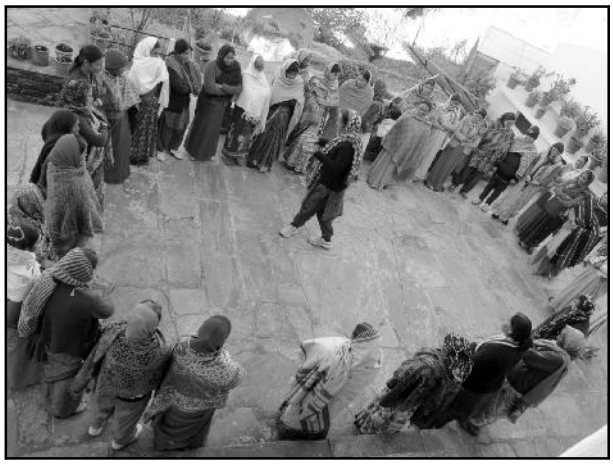

प्रत्येक माह की पाँच तारीख को महिलाओं की गोष्ठी होती है। संगठन की सदस्याएं जंगली जानवरों द्वारा किए जा रहे नुक्सान पर चर्चा करती हैं। गाँवों में बंदरों और सुअरों ने फसलों को नष्ट कर दिया है। इसे बचाने के लिए महिलाओं ने बारी–बारी से उन्हें भगाने की कोशिश की। इस प्रयास की वजह से खेतों में खड़ी फसल नष्ट होने से बच गयी।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने के पश्चात् गाँव के बच्चों, किशोरियों व महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। केन्द्र से सभी को लाभ व नयी–नयी जानकारी मिली। स्थानीय समाज में जागरूकता आयी है। ''शेप'' संस्था द्वारा गाँव में किए गये सम्मेलनों और पुस्तक मेलों में ग्रामवासियों की संपूर्ण भागीदारी और सहयोग रहता है। शैक्षणिक–भ्रमण तथा उत्तराखण्ड महिला परिषद् द्वारा आयोजित की जा रही गोष्ठियों में महिलाओं को जानकारी प्राप्त करने का मौका मिलता है। इससे महिलाओं का शिक्षण हुआ है। वे अपने गाँव के अतिरिक्त पंचायतों और क्षेत्र की समस्याओं पर भी चर्चा करती हैं। संगठन की सदस्याएं विकास के कार्यों को आगे बढ़ाने की लगातार कोशिश कर रही हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र को चलाने का अनुभव

नीमा सगोई

मैं ''शेप'' संस्था के माध्यम से सुन्दरगाँव, जिला चमोली, में ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन करती हूँ। मैंने पहले कभी भी ग्राम शिक्षण केन्द्र के बारे में नहीं सुना था। जब मैं ग्राम शिक्षण केन्द्र के विषय में प्रशिक्षण लेने के लिए अल्मोड़ा गयी तो शिक्षा की विभिन्न गतिविधियाँ सीखने का मौका मिला। प्रशिक्षण लेने के बाद केन्द्र के संचालन में मदद मिली। साथ ही, नये अनुभव भी हुए। पहले अपनी बात को दूसरों के सामने बोलने में झिझक होती थी। अपने ही बारे में कुछ ऐसी बातें हैं जो मैं नहीं जानती थी। बच्चों से बातें करना और उन्हें केन्द्र में खुश रखने के तरीके भी प्रशिक्षण से सीखे।

जब से गाँव में केन्द्र शुरू हुआ, तब से खुद में भी बदलाव महसूस किया है। आज मैं खुद के फैसले लेने में सक्षम हूँ। आज अपनी बात को दूसरों के सामने बोलने में झिझक नहीं होती। केन्द्र में बच्चों को भी संभाल लेती हूँ। ग्राम शिक्षण केन्द्र से बहुत खुशी होती है क्योंकि मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका मिला।

ग्राम शिक्षण केन्द्र का मतलब पूरे गाँव का शिक्षण करना है। इसलिए हम बच्चों, किशोरियों तथा महिलाओं के साथ कार्य करते हैं। पहले बच्चों के साथ ज्यादा बातें नहीं करती थी। उनके साथ ज्यादा मेल–मिलाप नहीं था लेकिन अब बच्चों के साथ ज्यादा से ज्यादा बातें करती हूँ। उनके साथ अच्छी तरह घुल–मिल गयी हूँ। वे भी मेरे साथ खुश रहते हैं। अब मैं ग्राम शिक्षण केन्द्र के संचालन के लिए पूर्णतया सक्षम हूँ।

जब तक ग्राम शिक्षण केन्द्र नहीं खुला था तब तक शाम के समय बच्चे यूँ ही घूमते रहते थे। वे एक–दूसरे से झगड़ते और समय बर्बाद कर देते। जब से केन्द्र खुला तब से बच्चे समय से एक निश्चित जगह पर इकट्ठा हो जाते हैं। आपस में मिल–जुलकर रहते हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र में हमेशा कुछ नयी गतिविधियाँ सिखाई जाती हैं। केन्द्र में बहुत सी सामग्री है जो बच्चों को प्रेरित करती है। केन्द्र में खेल के सामान के अलावा कुछ ऐसी सामग्री हैं जिससे बच्चे खेल–खेल में गणित सीखते हैं। इसके अलावा केन्द्र में अच्छी किताबें उपलब्ध हैं। बच्चे कविताएं, कहानियाँ और प्रेरक–निबंधों की पुस्तकें अत्यंत भावुक होकर पढ़ते हैं। केन्द्र के खुलने से बच्चों में बहुत बदलाव आया है। अब सभी बच्चे मिलजुलकर रहते हैं। मेरे गाँव में शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चे बहुत खुश हैं।

किशोरी संगठन बधाणी

वन्दना नेगी

मैं ईड़ा–बधाणी गाँव, जिला चमोली, की निवासी हूँ। हाल ही में हमारे गाँव में ग्राम शिक्षण केन्द्र खुला है। पहले यह केन्द्र पुस्तकालय के रूप में था। अब इसमें बदलाव करके ग्राम शिक्षण केन्द्र का नाम दिया गया है। केन्द्र के माध्यम से छः से चौदह वर्ष के बच्चों, ग्यारह से उन्नीस वर्ष की किशोरियों और महिला संगठनों के साथ काम किया जाता है। इसका उद्देश्य बच्चों को शिक्षा की ओर अग्रसर करना, भेदभाव मिटाना, ग्राम–समाज में जागरूकता लाना, आपसी प्रेम बढ़ाना और स्वयं तथा गाँव का विकास करना है।

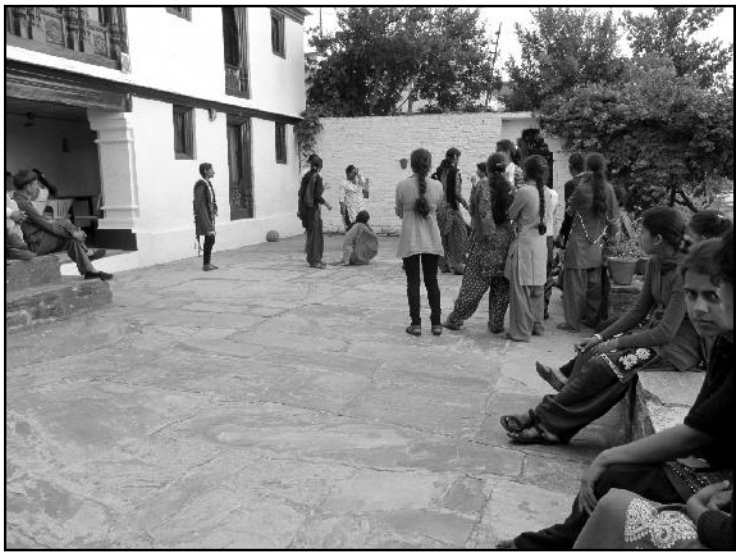

बच्चे, किशोरियाँ तथा महिलाएं ग्राम शिक्षण केन्द्र में आती हैं। केन्द्र में अखबार व पत्रिकाओं की व्यवस्था रहती है। बच्चों के लिए भी अनेक प्रकार की गतिविधियाँ हैं। जैसे–रंगोंमैट्री, कैरम, शतरंज, डाइस–ब्लॉक, रस्सी–कूद इत्यादि। केन्द्र में पढ़ने के लिए तरह–तरह की किताबें और अखबार उपलब्ध हैं। इसमें सामान्य–ज्ञान, देश–विदेश की खबरें, कहानियाँ और कविताएं, नाटक इत्यादि शामिल हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से बच्चों से लेकर वयस्कों तक सभी को बहुत लाभ मिला है। पढ़ाई के प्रति बच्चों की जिज्ञासा बढ़ी है। साथ ही, खेल–कूद संबंधी गतिविधियाँ भी अत्यंत लाभकारी हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र में समय–समय पर किशोरी गोष्ठियों का आयोजन होता है। इसमें संस्था के संचालक भाई किमोठी जी एवं कमलेश विभिन्न प्रकार के मुद्दों पर चर्चा करते हैं। ये मुद्दे देखने और सुनने में छोटे लगते हैं लेकिन अगर गंभीरता से विचार करें तो वास्तविक जीवन से जुड़े हुए हैं। इस वर्ष केन्द्र में अनेक मुद्दों जैसे–मैं और मेरी पहचान, आत्मविश्वास, हिंसा–अहिंसा, भेद–भाव, समाज में नागरिकों की भूमिका, कुछ महान व्यक्तियों की जीवनी आदि विषयों पर चर्चा की गई। संचालकों ने किशोरियों के साथ स्वास्थ्य एवं शिक्षा संबंधी मुद्दों पर गहराई से कार्य किया। इससे किशोरियों में आत्म–विश्वास बढ़ा। सबसे बड़ी बात कि हमारे गाँव में जागरूकता बढ़ गई है।

संकोची स्वभाव की किशोरियाँ, जो बोलने में झिझकती हैं, केन्द्र के माध्यम से आगे बढ़ रही हैं। गोष्ठियों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि हर एक किशोरी अपने विचारों को निर्भीक हो कर कह सके। इससे सभी के विचार सुनने को मिलते हैं। किशोरियों के लिए भी कई प्रकार के कार्यक्रम जैसे–नाटक, कविताएं, कहानियाँ आदि आयोजित किये जाते हैं। इससे हर एक किशोरी की प्रतिभा को उभरने का मौका मिलता है। ये सभी गतिविधियाँ भविष्य–निर्माण में सहायक हैं। लड़कियाँ निसंकोच अपने सपनों को पूरा कर सकती हैं। समाज में शिक्षण का माहौल होना जरूरी है तभी किशोरियाँ आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ेंगी।

कुल मिलाकर संस्था का यही उद्देश्य रहता है कि किशोरियों ने जो समय गोष्ठियों में दिया है उसका पूर्ण लाभ मिल सके। जीवन–कौशल बढ़े और हर एक किशोरी उन्नति करे।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में समय–समय पर महिलाओं की गोष्ठियाँ की जाती हैं, जिससे वे जागरूक रहें। समाज–निर्माण में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह जरूरी है कि स्त्रियाँ स्वयं के महत्व को पहचाने। पुरूष–प्रधान समाज में अपनी पहचान को खोने न दें। इस उद्देश्य से काम करने के बाद निश्चित रूप से समाज में समानता आ सकती है।

किशोरी संगठन तोली

ममता नेगी

मैंने जबसे ग्राम शिक्षण केन्द्र की शुरूआत की तब से बच्चों में बहुत बदलाव आए हैं। केन्द्र के खुलने से किशोरियों में भी काफी परिवर्तन हुआ। पहले किशोरियाँ बात करने में बहुत झिझकती थीं। जब कभी गाँवों में गोष्ठियाँ होती तो किशोरियाँ कुछ भी बोल नहीं पाती थीं लेकिन अब धीरे–धीरे बहुत परिवर्तन आया है। पहले तो जब गाँव में किशोरियाँ कुछ बोलना चाहती थीं तो उन पर रोक लगा दी जाती थी। डर के कारण किशोरियाँ कुछ नहीं कहती थीं। गाँव में किशोरियों को आजादी नहीं थी कि वे अपने विचारों को प्रकट कर सकें। अब ऐसा नहीं है। जब से हमारे गाँव में शिक्षण केन्द्र खुला तब से एक शैक्षणिक माहौल बना। अगर ग्राम शिक्षण केन्द्र नहीं खुलता तो गाँव की किशोरियाँ और बच्चे अपने अधिकारों को नहीं जान पाते। गाँवों में ऐसे कोई भी अवसर ही उपलब्ध नहीं हो पाते हैं कि बाल–अधिकार, महिला–अधिकार इत्यादि मुद्दों पर जानकारी मिल सके।

ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने के बाद किशोरियों में जो परिवर्तन आये, उनमें से कुछ का उल्लेख करना उचित होगा–

- गाँवों में नियमित किशोरी–गोष्ठियाँ होने से किशोरियाँ बेहिचक बोलना सीख गई हैं
- गोष्ठी से किशोरियाँ एक–दूसरे के विचारों को जानने लगी हैं
- किशोरियों में अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ी है
- किशोरियाँ आत्म–निर्भर होना सीख रही हैं
- किशोरियाँ अपने विचारों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करने लगी हैं
- ग्राम शिक्षण केन्द्र तोली की किशोरियाँ स्वच्छता पर बहुत ध्यान दे रही हैं
- अब किशोरियाँ अपने परिवार और गाँव की अन्य महिलाओं के सामने झिझकती नहीं हैं।

केदारनाथ की पंचमुखी उत्सव डोली

रेशमी भट्ट

केदारनाथ की पंचमुखी उत्सव डोली भारतवासियों की आस्था का प्रतीक है। भगवान केदारनाथ की पंचमुखी चल–विगृह उत्सव डोली की अगवानी करने के लिए कई यात्रा–पड़ावों पर जिस प्रकार से श्रृद्धालुओं का हुजूम उमड़ पड़ता है उससे प्रतीत होता है कि जनमानस की गहरी आस्था डोली से जुड़ी है। कहा जाता है कि भगवान केदारनाथ की पंचमुखी उत्सव डोली का निर्माण लगभग 1962–63 में कोलकता के एक श्रृद्धालु और मंदिर–समिति के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। उससे पूर्व भगवान केदारनाथ के शीतकालीन गद्दीस्थल ओंकारेश्वर

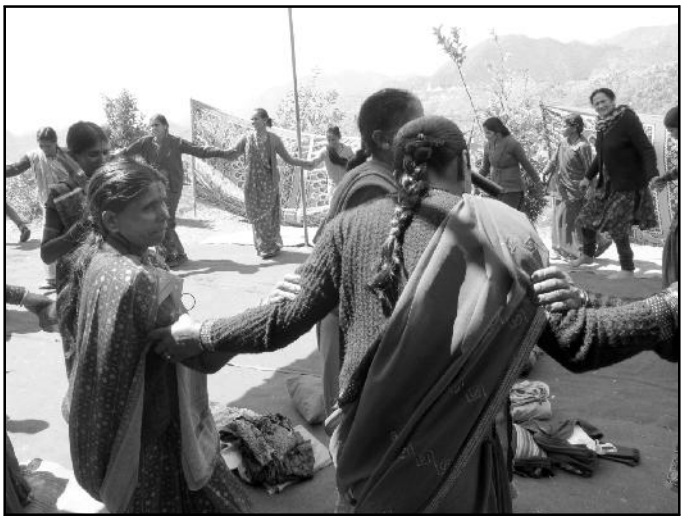

मंदिर, ऊखीमठ से देव–कंडी के साथ–साथ लोहे की नागरूपी चाबी को भगवान केदारनाथ का स्वरूप माना जाता था। भक्तगण नागरूपी लोहे की चाबी की पूजा–अर्चना करके मनौती माँगते थे। यही लोहे की नागरूपी चाबी केदारनाथ धाम के कपाट खोलने व बन्द करने के लिए प्रयोग होती थी। सत्तर के दशक तक अधिकांश घरों में भी लोहे की नागरूपी चाबी से ही लकड़ियों के दरवाजे खोले और बन्द किये जाते थे। कई घरों में आज भी लोहे की नागरूपी चाबी पायी जाती है। अब अधिकांश ग्रामीणों द्वारा चाबी को पूजा–स्थल में रख दिया गया है।

दीपावली के तीसरे दिन भैयादूज के पर्व पर केदारनाथ के कपाट बन्द होने के बाद डोली को शीतकालीन गद्दीस्थल ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ तक लाया जाता है। भगवान केदारनाथ की डोली के ऊखीमठ धाम पहुँचने तक विभिन्न यात्रा–पड़ावों पर श्रृद्धालु अगवानी करते हैं। विगत कई वर्षो से आर्मी की बैंड–धुनों के द्वारा डोली की अगवानी करके पदयात्रा को अधिक भव्य बनाया गया है। भगवान केदारनाथ की पंचमुखी चल विगृह उत्सव डोली के केदारनाथ धाम से रवाना होने से पहले क्षेत्र–रक्षक भगवान भैरवनाथ के पूजन की प्राचीन परंपरा प्रचलित है। क्षेत्र–रक्षक भैरवनाथ की पूजा करते हुए यात्रा को निर्विध्न रूप से संपन्न कराने की कामना की जाती है। इस वक्त ओंकारेश्वर मंदिर के प्रधान पुजारी शिवशंकर लिंग हैं। वे विधि–विधाओं के ज्ञाता एवं एक संवेदनशील इंसान हैं। वे मंदिर–संबंधी कार्यों को नियम से सम्पन्न करते हैं। इस में सभी स्थानीय ग्रामवासी उनका सहयोग करते हैं।

शैक्षणिक भ्रमण

लक्ष्मी नेगी

दिनाँक 19.03.2015 को 'शेप' संस्था बधाणी के तत्वाधान में इस वर्ष महिला संगठनों की सदस्याओं का शैक्षणिक भ्रमण रूद्रप्रयाग जिले में ऊखीमठ क्षेत्र के आपदा–प्रभावित गाँवों में किया गया। भ्रमण के साथ ही इस दल ने ऊखीमठ क्षेत्र में आयोजित महिला सम्मेलन में भाग लिया। इस भ्रमण में 'शेप' संस्था बधाणी के सभी कार्यकर्त्ता एवं संचालक भी शामिल थे। 18 मार्च 2015 को प्रातः आठ बजे सभी यात्री ऊखीमठ के लिए चल पड़े। महिलाएं काफी उत्साहित थीं। सभी हँसते–बोलते, चेतना–गीत गाते हुए ऊखीमठ पहुँचे।

भोजन के बाद मंगोली गाँव में गये। यह गाँव 2012 में आई आपदा की वजह से क्षतिग्रस्त हो गया था। गाँव में पहुँचकर भ्रमण दल ने आपदा से हुई हानि का जायजा लिया। ग्रामवासियों के दुःख को शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। महिलाओं से बातचीत के दौरान पता चला कि स्थानीय लोगों ने अपना जीवन बड़ी कठिनाई से सँभाला है। आज वे लोग किसी तरह आगे बढ़ रहे हैं। सभी महिलाओं ने विचारों का आदान–प्रदान किया। तब तक अल्मोड़ा से उत्तराखण्ड महिला परिषद् के अन्य सदस्य भी मंगोली गाँव में पहुँच गये।

सभी साथी मिलकर चुन्नी गाँव में पहुँचे। चुन्नी गाँव में बातचीत के लिए महिलाएं एकत्रित हुई थीं। सभी ने अगले दिन आयोजित होने वाले सम्मेलन में अपनी उपस्थिति दर्ज करने की बात की। गाँव के संगठन के कार्यों पर चर्चा की। उसके बाद भ्रमण–दल रात्रि–विश्राम के लिए भारत सेवा आश्रम ऊखीमठ में पहुँचा। सभी लोग थके हुए थे। सम्मेलन की व्यवस्था और कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने के बाद सभी ने विश्राम किया।

हिमालयन ग्रामीण विकास संस्था ऊखीमठ द्वारा आयोजित किया गया सम्मेलन प्राथमिक विद्यालय पठाली में दिनाँक 20.03.2015 को होना था। बधाणी भ्रमण–दल के सदस्य भी चेतना–गीत गाते और नारे लगाते हुए सम्मेलन के लिए निश्चित किए गये स्थल पर पहुँचे। ऊखीमठ के महिला संगठनों ने कर्णप्रयाग और अल्मोड़ा से आयी हुई महिलाओं का स्वागत किया।

ग्यारह बजे सम्मेलन शुरू हुआ। सम्मेलन में महिलाओं, किशोरियों एवं बुर्जुगों ने विचार रखे। नाटक, गीतों, झुमेला के द्वारा शैक्षणिक संदेशों को उपस्थित प्रतिभागियों तक पहुँचाया। संगठन की सदस्याओं के द्वारा जंगल बचाओ, बाल–विवाह, शराब, दहेज–प्रथा आदि विषयों पर नाटक प्रस्तुत किये गये। 'शेप' संस्था से आयी हुई महिलाओं ने भी सम्मेलन में प्रतिभाग किया। उन्होंने शराब–उन्मूलन एवं महिला–अधिकारों पर स्वरचित नाटक प्रस्तुत किये। साथ ही, स्वरचित झुमेला भी गाया। ऊखीमठ क्षेत्र के संगठनों ने आपदा के संबंध में अनेक स्वरचित झुमेले गाये और नाटकों का मंचन किया। गीत–नाटकों, विचारों के आदान–प्रदान के बीच पता ही नहीं चला कि सम्मेलन के समापन का समय भी आ गया।

सम्मेलन के समापन के पश्चात् बधाणी भ्रमण दल की सदस्याएं ओंकारेश्वर मंदिर देखने के लिए गयीं। ऊखीमठ क्षेत्र और प्राचीन मंदिर के इतिहास पर स्थानीय लोगों से बातचीत की।

अगली सुबह भ्रमण–दल कालीमठ मंदिर देखते हुए वापस कर्णप्रयाग की ओर चला। इस तरह यह शैक्षणिक–भ्रमण पूरा हुआ। इस भ्रमण से महिलाओं में एक चेतना उभरी। स्थानीय लोगों से बातचीत और विचारों का आदान–प्रदान होने से आपदा की वास्तविक स्थिति का पता चला। संगठन की सदस्याओं ने ऊखीमठ का नाम व गाँवों के इतिहास को समझा। प्रभावित लोगों की स्थिति को समझने का मौका मिला। भ्रमण से ऊखीमठ क्षेत्र की महिलाओं के उत्साह व साहस को जानने–समझने का मौका भी मिला। कठिन परिस्थितियों से गुजरते हुए महिलाओं ने न साहस खोया और न ही धैर्य। आपदा की मार के बावजूद घर–परिवार, खेती–जंगलों को संभालते–संजोते हुए ऊखीमठ क्षेत्र के संगठन निरंतर महिलाओं की प्रगति के लिए कटिबद्ध रहे हैं।

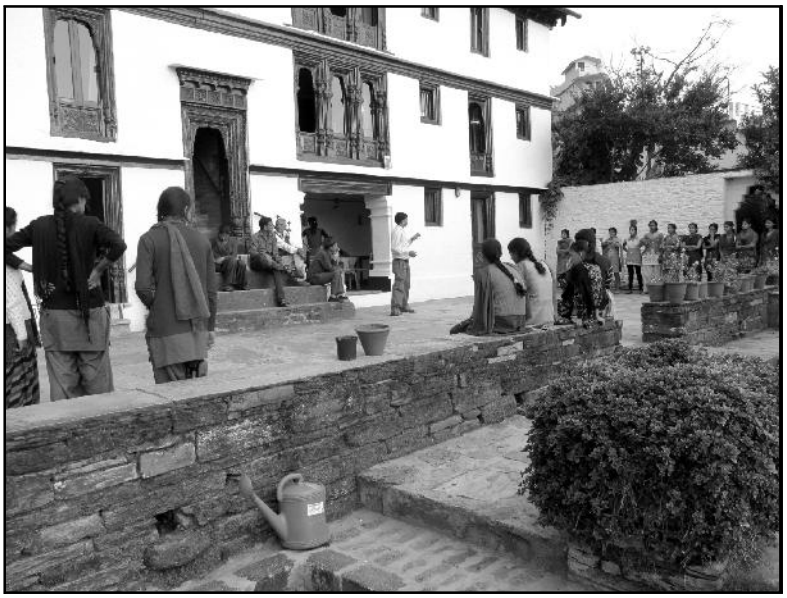

ग्राम शिक्षण केन्द्र चौरा

भावना साह

मैं ग्राम चौरा में शिक्षण केन्द्र का संचालन करती हूँ। इस कार्यक्रम से एक मई 2010 से जुड़ी। पहले चार साल संध्या केन्द्र चलाया और अब पिछले एक साल से ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन कर रही हूँ। मुझे शुरू में बच्चों के साथ काम करने में अजीब लगा। बहुत परेशानी हुई। बच्चे हो–हल्ला करके बहुत परेशान करते थे। उनसे जो कहती उसे अनसुना कर देते थे। फलस्वरूप मैंने बच्चों को डराना–धमकाना शुरू कर दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि बच्चों ने केन्द्र में आना कम कर दिया। तब मुझे आभास हुआ कि वे डर की वजह से केन्द्र में नहीं आ रहे हैं।

अब मैंने उनसे प्यार से बात की और यह समझने की कोशिश करने लगी कि वे क्या करना चाहते हैं। धीरे–धीरे बच्चे मेरे साथ घुलने–मिलने लगे। तब मैं समझी कि बच्चों के साथ बच्चा बन कर रहना होगा, तभी केन्द्र चल सकता है। बच्चों की इच्छानुसार काम किया तो वे भी मेरे साथ मिलकर विभिन्न गतिविधियाँ करने लगे।

उसके बाद मैंने अपनी समझ के अनुसार केन्द्र की गतिविधियों को व्यवस्थित करते हुए काम किया। हालाँकि पहले भी बच्चे दो साल तक केन्द्र में आ चुके थे पर नई–नई शिक्षिका होने की वजह से वे मनमानी करने लगे। केन्द्र का अनुशासन बिगड़ गया। बच्चों ने मुझे बताया कि कुछ गतिविधियाँ वे पहले कर चुके हैं। जब मैंने पहला पाँच–दिवसीय प्रशिक्षण लिया तो उस वक्त कक्षा बारह में पढ़ती थी। प्रशिक्षण से शिक्षण सामग्री के सदुपयोग की समझ बन गई तो केन्द्र के संचालन में कोई दिक्कत नहीं आयी। आसानी से केन्द्र का काम सम्भाल लिया। प्रशिक्षण में जो मैंने सीखा उसे अपने स्कूल में भी किया, जैसे–प्रार्थना, नाटक आदि। विद्यालय में अध्यापक बहुत प्रभावित हुए।

इतना सब करने के बावजूद मेरी परेशानियों का कोई अंत न था। जब मैं गाँवों में गोष्ठी के लिए जाती तो आस–पास के जंगल के बीच सुनसान जगह से गुजरते हुए बहुत डर लगता था। दूर गाँवों तक पहुँचने में बड़ी दिक्कत होती। मैं अपने साथ किसी बच्चे को ले जाती थी। बाद में महसूस होने लगा कि मुझे तो रोज ही गाँवों में जाना है, कब तक किसी अन्य के सहारे से चलूँगी? फिर मैं अकेले ही गोष्ठियों में भाग लेने के लिए जाने लगी। अब मुझे अकेले जाने में

कोई दिक्कत नहीं होती। कहीं भी अकेली चली जाती हूँ। पहले बच्चों से ज्यादा लगाव नहीं था। बच्चे अच्छे भी नहीं लगते थे। केन्द्र में जुड़ने से बच्चों के प्रति लगाव बढ़ गया। स्वयं मुझमें बहुत परिवर्तन हुआ है। जैसे कि पहले जो कुछ भी पढ़ा था, वह सब भूल गयी थी। केन्द्र में जुड़ने से धीरे–धीरे मैं नयी गतिविधियाँ सीख गई। सभी ग्रामवासियों से अच्छा व्यवहार भी बना सकी हूँ। अन्य लड़कियों से अलग पहचान बनायी है।

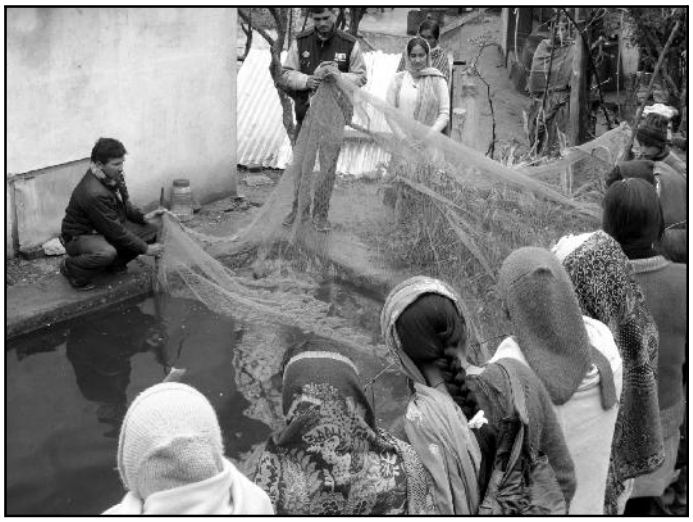

जब से शिक्षण केन्द्र खुला तब से मेरा जुड़ाव महिलाओं और किशोरियों से हुआ। पहले तो गाँव में संध्या केन्द्र होता था लेकिन अब शिक्षण केन्द्र के माध्यम से महिलाओं और किशोरियों के साथ भी काम करना है। पहले–पहले महिलाओं की गोष्ठी में जाना अजीब सा लगा। किशोरियों को एकत्रित करने में बहुत परेशानी हुई। शुरूआत में भगवती दीदी, मार्गदर्शिका, के साथ महिलाओं व किशोरियों की गोष्ठियों में गई लेकिन अब अकेली चली जाती हूँ। अब ग्राम शिक्षण केन्द्र में अखबार, किताबों और खेल–सामग्री से सभी ग्रामवासी लाभ लेते हैं। जब से गाँव में बालवाड़ी व महिला संगठन बना तब से बहुत सुधार हुआ।

पहले गाँव के बच्चे यूँ ही निरर्थक घूमते रहते थे। महिलाओं में एकता नहीं थी। ग्रामवासी स्वयं में सिमटे रहते थे। छोटी–छोटी बातों में झगड़ते थे। बाहर अकेले नहीं जाते थे। अब ये सभी व्यवहार बदल गये हैं। सभी ग्रामवासी प्रगति चाहते हैं और इसके लिए काम करने से नहीं घबराते। जब से महिला संगठन बना तब से गाँव में एकता हुई। सभी महिलाएं एकजुट होकर रहने लगीं। अब महिलाएं कहीं भी अकेले जाने से नहीं घबरातीं। वे गोष्ठियों में भाग लेती हैं। हर माह गाँव में गोष्ठी करती हैं। सभी मिलकर गाँव के रास्ते और नौलों की साफ–सफाई करती हैं।

हमारे गाँव में पिछले बारह सालों से महिला संगठन कार्य कर रहा है। पहले महिलाएं समाज में अपनी बातें नहीं रख पाती थीं, अब खुद बोल लेती हैं। यह बदलाव महिला संगठन में जुड़ने से आया है। बालवाड़ी, संध्या केन्द्र व ग्राम शिक्षण केन्द्रों को भी उतना ही समय हो गया जितना महिला संगठन को हुआ है। इस वजह से चौरा गाँव के बच्चों की अलग से पहचान बन गयी है। अन्य बच्चों की अपेक्षा चौरा गाँव के छात्र–छात्राएं अध्यापकों से अपनी बात बेझिझक होकर कह पाते हैं।

आपदा के बाद आजीविका

सदस्या महिला संगठन किमाणा

मैं किमाणा गाँव, जिला रूद्रप्रयाग, में महिला संगठन की एक सक्रिय सदस्या हूँ। विगत कई वर्षों से हमारे संगठन को हिमालय ग्रामीण विकास संस्था उखीमठ एवं उत्तराखण्ड महिला परिषद् अल्मोड़ा द्वारा सहयोग एवं मार्गदर्शन मिलता रहा है। जून 2013 से पूर्व मेरे पति की श्री केदारनाथ में एक छोटी सी दुकान थी। उसी से परिवार की आजीविका चलती थी परन्तु आपदा की त्रासदी से उक्त दुकान बाढ़ में बह गयी। परिवार की कमाई का स्रोत बन्द हो गया। फलस्वरूप परिवार के सम्मुख घोर आर्थिक–संकट उत्पन्न हो गया।

मेरे परिवार में बूढ़े सास–ससुर एंव पति के अतिरिक्त दो बच्चे हैं। बच्चे कक्षा एक और दो में पढ़ते हैं। मुश्किल की इस घड़ी में हिमालय ग्रामीण विकास संस्था ने मदद के लिए हाथ बढ़ाया और उखीमठ में बुनाई प्रशिक्षण केन्द्र खोला। मैंने उक्त केन्द्र में प्रशिक्षण लेने का मन बनाया। मेहनत और लगन के साथ प्रशिक्षण लिया। इस दौरान विभिन्न प्रकार के स्वेटर बनाना सीखा। टोपी, दस्ताने, मफलर, स्कार्फ इत्यादि भी बनाये। एक दिन स्वयं बनाई हुई स्वेटर प्रशिक्षण केन्द्र से अपने घर ले गयी और पति को भेंट की। उन्हें मुझ पर विश्वास ही नहीं हुआ। अगले दिन प्रशिक्षण केन्द्र में आकर मेरे काम–काज को देखा और प्रसन्न होकर एक बुनाई मशीन मँगवा दी। उसके बाद हमने स्वयं बनायी गयी वस्तुओं को बेच कर आजीविका चलाने का संकल्प लिया।

एक दिन मेरे पति गाँव के प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक से मिले। वहाँ से बच्चों के पन्द्रह स्वेटर बनाने का आर्डर मिला। प्रति स्वेटर का मूल्य एक सौ तीस रुपया तथा प्रति टोपी तीस रुपया तय किया गया। अब ठंड का मौसम नजदीक है। आशा है कि मेरी आमदनी में निरंतर वृद्धि होगी। अब घर के काम के अतिरिक्त मैं अपने परिवार की आजीविका बढ़ाने में सहायता करती हूँ। परिवार के सभी सदस्य मेरे काम से खुश हैं।

खुले और बन्द प्रश्न

विनोद कुमार

शिक्षा से संबंधित गतिविधियों में प्रश्नों का बहुत महत्व होता है। वैसे तो प्रश्न कई प्रकार के होते हैं लेकिन दो मोटी श्रेणियाँ हैं–बन्द प्रश्न और खुले प्रश्न। सामान्यतया बन्द प्रश्न जानकारी हासिल करने के लिये होते हैं। इन प्रश्नों के जवाबों को सही और गलत की श्रेणी में रखा जाता है। इनका उत्तर निश्चित होता है। जैसे–भारत के प्रधानमंत्री का क्या नाम है?दशरथ कहाँ के राजा थे आदि। इन प्रश्नों का जवाब सभी लोग करीब–करीब एक जैसा ही देंगे। इस तरह के प्रश्नों का उद्देश्य बच्चे की जानकारी बढ़ाना, प्राप्त की गई जानकारी को याद रखना और समयानुसार उसे व्यवस्थित तरीके से दूसरों के सामने रखना है।

खुले प्रश्न बच्चों में मौलिकता जगाने और उसे जाँचने के लिये किये जाते हैं। इस प्रकार के प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। इनसे बच्चों में चिन्तन, मनन के कौशलों का विकास होता है। इस प्रकार के प्रश्न बच्चे को स्वयं सोचने के लिये प्रेरित करते हैं। इन प्रश्नों का जवाब मौलिकता के अनुसार स्वतंत्र रूप से दिया जाता है। बच्चे को सही या गलत का भ्रम नहीं रहता। ये प्रश्न सही और गलत के दायरे से परे होते हैं। इनसे आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। ग्राम शिक्षण केन्द्र की गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बच्चे का आत्मविश्वास जगाना और विचारों की मौलिकता को बढ़ाना है।

बच्चों का आत्म–विश्वास कैसे बढ़ाया जाये?यह एक गंभीर प्रश्न है। आजकल विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा में तो अधिकतर बन्द प्रश्न देखने को मिलते हैं। बच्चा जानकारियाँ रटकर स्वयं को दूसरों की तुलना में कम या ज्यादा आँकने लगता है। इससे उसके आत्म–विश्वास में कमी आती है। बच्चे का आत्म–विश्वास बढ़ाने के लिए निरंतर सार्थक प्रयासों की जरूरत होती है।

मार्गदर्शक के रूप में गाँवों में आते–जाते रहने से मुझे यही अनुभव हुआ कि बच्चे ग्राम शिक्षण केन्द्र में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं। गतिविधि करने में बच्चे झेंपते नहीं लेकिन

वे प्रश्न करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे। अगर साहस जुटा भी लें तो केवल इस तरह के बन्द प्रश्न पूछेंगे जो जटिल न हों। जैसे–उत्तराखण्ड की राजधानी कहाँ है? फूलों की घाटी कहाँ है? खुले प्रश्न उनकी समझ में नहीं आ रहे। इस समस्या को देखते हुए इस वर्ष ग्राम शिक्षण केन्द्र के माध्यम से आत्म–विश्वास बढ़ाने के लिये निरन्तर बच्चों के साथ संवाद शुरू किया। ''कहीं प्रश्न गलत तो नहीं हो गया,'' इस भ्रम को दूर करना ही केन्द्र की प्रमुख गतिविधि बन गया।

बच्चों के साथ खुले प्रश्न करने से आत्म–विश्वास में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिये कुछ इस तरह के प्रश्न पूछे जा सकते हैं कि वे अपने बारे में पाँच वाक्य बोलें। अपने गाँव के संबंध में दस वाक्य लिखें। इससे शुरुआत हो सकती है। केन्द्र में इस प्रकार की गतिविधि करने से धीरे–धीरे बच्चे आपस में ही सवाल–जवाब करने लगते हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र में जब बच्चों का आत्म–विश्वास बढ़ा तो प्रश्नों का महत्व समझ में आने लगा।

मैं आजकल जब भी केन्द्रों में अवलोकन के लिये जाता हूँ बच्चे कुछ नये, खास प्रकार के, प्रश्न पूछते हैं। बहुधा इन प्रश्नों के जवाब देने में स्वयं मुझे भी काफी मशक्कत करनी पड़ती है। इन प्रश्नों के जवाब ढूँढ़ कर बच्चों के साथ लंबी चर्चा करना मुझे भी अच्छा लगा। कुछ ऐसे प्रश्न जिन के जवाब देने के लिये मौलिकता के साथ–साथ गहन अध्ययन की जरूरत होती है, मेरे सामने एक चुनौती खड़ी करते हैं। जैसे–एक केन्द्र में बच्चों ने पूछा कि क्या बादल फटता है? बादल फटने का मतलब निकालना आसान काम नहीं। ऐसे प्रश्नों के जवाब देने के लिये कई लोगों की मदद ली। कुल मिला कर खुले प्रश्नों से बच्चों व ग्राम शिक्षण केन्द्र की संचालिकाओं के बीच में एक सार्थक संवाद स्थापित होता है। इससे बच्चे का आत्म–विश्वास तो बढ़ता ही है, कार्यक्रम से जुड़े अन्य सभी लोग भी चुनौतियाँ स्वीकार करने के लिये उद्यत होते हैं। अगर केन्द्र में निरंतर खुले प्रश्न किये जायें तो निश्चित ही बच्चे खुलकर बोलने लगते हैं।

बोझ तले

लक्ष्मी पुष्पवान

आज के युग में महिलाएं आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षणिक पक्षों को मजबूत करती हुई आगे बढ़ रही हैं। अभी तो मंजिल दूर है। राह में अनेक कठिनाइयाँ भी हैं। महिलाएं आगे तो बढ़ी हैं लेकिन फिर भी सामाजिक दृष्टिकोण ऐसा है कि वे निचले पायदान पर रखी जाती हैं। घर, खेती, परिवार की देखभाल, शुभ–कार्यों में परिवारिक हिसाब–किताब, लेना–देना आदि कार्यों को सोचती–समझती हुई महिलाएं समाज के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। लेकिन इसी दायरे में सिमट जाने से सामाजिक क्षेत्र में उनकी पहचान सीमित हो जाती है। उत्तराखण्ड के गाँवों में ऐसी साहसी महिलाओं की लाखों कथाएं मौजूद हैं जिन्होंने विषम परिस्थितियों में घर–परिवार को मजबूती से संभाले रखा। आधुनिक सुविधाओं से युक्त इस दौर में महिलाओं को कुछ घरेलू कार्यों को करने के लिए सुविधाएं एवं आराम तो मिला है लेकिन घर–परिवार–गृहस्थी की संपूर्ण जिम्मेदारी वे ही उठा रही हैं।

एक गाँव में एक स्त्री ने अपने ही श्रम की बदौलत बेटे को पूर्ण शिक्षा दी। उसके पति मेहनत–मजदूरी करते लेकिन शाम को शराब में पैसा बर्बाद कर देते। केदारनाथ में आई आपदा के बाद उन्हें मकान ठीक करने के लिए दो लाख रुपया मिला। उस महिला ने मेहनत से कंकरीट, पत्थर, बजरी ला कर एक कमरा तैयार किया। फिर पैसा कम हो गया। केदारनाथ आपदा के बाद राहत के लिए मिले हुए पैसे बैंक में रखे थे। इस धनराशि को पति निकालते रहे लेकिन उन्होंने बजरी–सीमेंट–सरिया के पैसे दुकानदार को नहीं दिए। जब वह महिला फिर से सामग्री लेने गई तो दुकानदार ने सामान देने से इन्कार कर दिया। अगले दिन वह महिला पति के साथ बैंक में आयी। सब हिसाब–किताब देखा। बमुश्किल दुकानदार का हिसाब चुकता किया और धीरे–धीरे स्वयं ही मेहनत करके कमरा बनाया।

आज महिलाएं बच्चों की शिक्षा के लिए गाँवों से पलायन कर रही हैं। निजी–सम्पत्ति एवं

पूर्वजों की जोड़ी हुई खेती, जिसमें उन्होंने स्वयं मेहनत करके मकान बनाए, उसे बेचकर शहरों में जमीन खरीद रही हैं। आज नेपाल से आये हुए प्रवासी इस जमीन पर सब्जी उगाकर स्थानीय निवासियों को ही बेच रहे हैं।

राष्ट्र कानून तो बनाता है लेकिन दैनिक जीवन में नियमों का सदुपयोग नहीं हो रहा। आज घरेलू हिंसा, बलात्कार, महिला–उत्पीड़न, किशोरी–उत्पीड़न जैसी समस्याएं आम हो गई हैं। आये दिन समाचार पत्रों में उत्पीड़न और शोषण की खबरें आती हैं। फिर भी समाज बेखबर बना हुआ है। जमीनी समस्याओं के हल ढूँढने के प्रयास नहीं हो रहे।

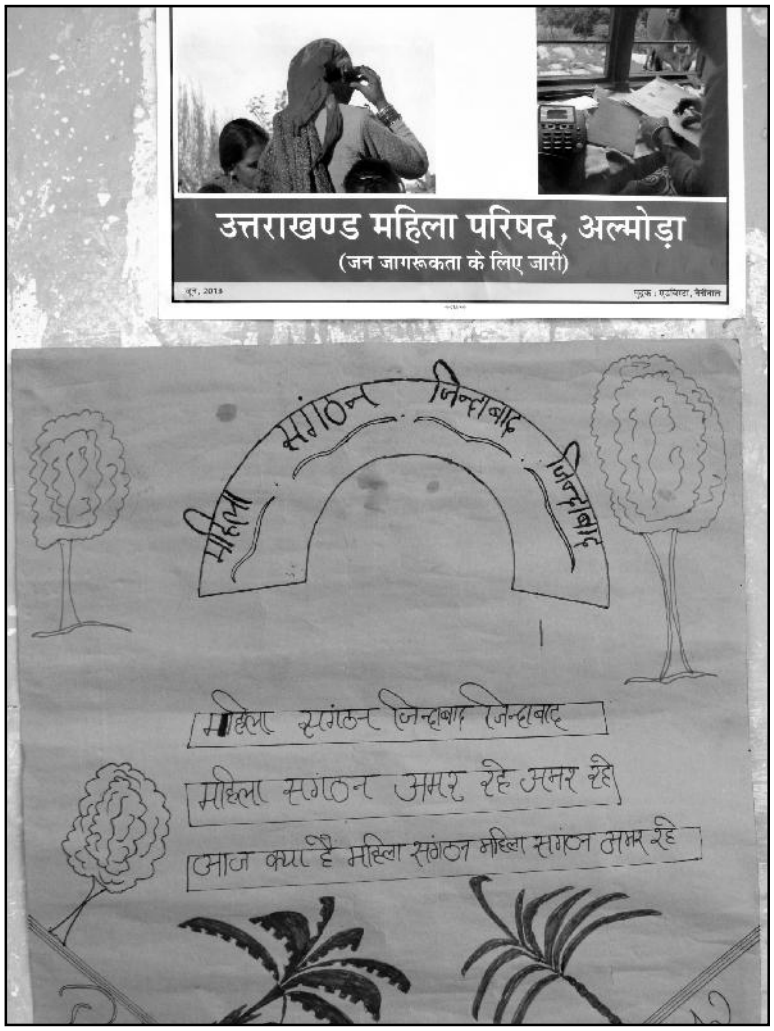

आज भी विधवा महिलाओं को शुभ–कामों में आगे नहीं आने दिया जाता। यह कृत्य स्त्रियों के जीवन में बुरा असर डालता है। स्त्रियाँ स्वयं को कचोटने लगी है। वैसे तो नारी की तुलना धरती माता से की जाती है। इसके अलावा दुर्गा, काली, सरस्वती, पार्वती इत्यादि रूप भी नारी के ही हैं तथापि आज के हिंसा और असहिष्णुता से भरपूर माहौल में यह सर्वमान्य उक्ति भी पर्याप्त नहीं है कि "यत्र नारयस्ते पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता।"

आधुनिक समाज कन्या भ्रूण–हत्या जैसे अमानवीय कृत्य को अंजाम देता है। कन्याओं को कोख में ही नष्ट कर देने से वह मूल जड़ समाप्त हो जाएगी जिससे मनुष्य का विकास होता है, संसार की रचना होती है। आज की महिला ये सभी बोझ उठाते हुए जी रही है। इस व्यवस्था में बदलाव की जरूरत से इंकार नहीं किया जा सकता।

हरयालो

लक्ष्मी भण्डारी

गढ़वाल के चाँदपुर क्षेत्र का एक प्रमुख उत्सव हरियालो है। यह भाद्रपद–आश्विन माह में मनाया जाता है। यह त्यौहार माँ ऊँफराई देवी के उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है। इस समय पहाड़ों में ककड़ी, मुगंरी (मक्का), धान आदि फसलें तैयार होती हैं। ग्रामवासी मानते हैं कि इसी पर्व के साथ शरद ऋतु प्रारम्भ हो जाती है। इस अवसर पर माँ नन्दा, ऊँफराई देवी एवं अन्य देवताओं के जागर–गीत, चौफला आदि गाये जाते हैं।

जब गढ़वाल में बारह वर्ष में राज–जात यात्रा होती है तो उससे पहले माँ ऊँफराई देवी की मोडवी होनी जरूरी है। यह चाँदपुर क्षेत्र के सबसे ऊँची पहाड़ी पर है। इसे ऊँफराई–काँठा के नाम से जाना जाता है। ऊँफराई–काँठा के ठीक पूर्व में बेनीताल में नैंणा देवी, पश्चिम में पौड़ी के कंडोलिया महादेव, उत्तर में कार्तिक स्वामी तथा दक्षिण में बिनसर महादेव के देवालय स्थित हैं। ऊँफराई–काँठा इन सभी देवस्थलों के बीच में स्थित है। इस कारण भी यह ईष्ट है। इस पहाड़ी की तलहटी में शैलेश्वर महादेव (बेनोली), कोटेश्वर महादेव (झुरकण्डे) व भेलेश्वर महादेव (नौटी) मठी महादेवी स्थित हैं। राजमहल के अवशेष चाँदपुर गढ़ भी इसी क्षेत्र में स्थित हैं। इस के अतिरिक्त श्री आदि–बद्री धाम भी इसी तलहटी में स्थित है।

माँ ऊँफराई देवी के दो भाई लाटू और हित हैं। हरियालों में माँ ऊँफराई देवी व उनके दोनों भाई लाटू व हित की पूजा–अर्चना की जाती है। भाद्रपद–आश्विन के महीने में माँ के नौ रूपों की पूजा की जाती है। देवी को च्यूरे, भुजोवे (खाजा), ककड़ी, मुंगरी (मक्का), तिल, अखरोट आदि स्थानीय अनाज व फल अर्पित किये जाते हैं। पर्व की समाप्ति पर गीतों और जागरों के साथ अश्रुपूर्ण आँखों से देवी की विदाई करते हैं।

यह पर्व बड़े उल्लास के साथ ढोल–दमाऊँ, शंख–भंकोरे आदि बाज–साज के साथ मनाया जाता है। इस अवसर पर आटे तथा चावल का प्रसाद (हलवा) बनाया जाता है। हरियालों के अवसर पर जब पड़वा लगता है तब जौ से हरियाली डाल दी जाती है। यह पर्व आठ दिन तक मनाया जाता है। सप्तमी के दिन रात में जागरण होता है। सभी ग्रामवासी मिलकर गीत, चौफला, जागर आदि गाते हैं। माँ ऊँफराई देवी चाँदपुर क्षेत्र की ईष्ट देवी, ध्याण (बेटी), भी है। ऊँफराई देवी का नाम उमा व अपर्णा भी है। यह नन्दा देवी की बड़ी बहन है। माँ ऊँफराई की विशेष पूजा के उत्सव को हरियालो कहा जाता है।

ग्राम शिक्षण केन्द्र नन्दासैंण

रवि कुमार

आने वाले समय में ग्राम शिक्षण केन्द्र, नन्दासैंण, क्षेत्र में शैक्षणिक गतिविधियों का एक केन्द्र बिन्दु होने जा रहा है। ग्राम शिक्षण केन्द्र से बच्चे, किशोरियाँ, आस–पास के अन्य स्थानीय निवासी एवं सरकारी कर्मचारी इत्यादि सभी परिचित हैं। केन्द्र में अनेक प्रकार की रचनात्मक गतिविधियों से शिक्षण–कार्य किया जाता है।

ग्राम नन्दासैंण में दिनाँक 25.02.2015 को महिला–सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें महिलाओं की जागरूकता की झलक दिखाई दी। वर्तमान जलवायु–परिवर्तन पर उठे सवालों के बीच पूरे दिन वर्षा का कहर भी जारी रहा। इस वजह से सम्मेलन में संचालित की जाने वाली अनेक गतिविधियों को स्थगित करना पड़ा। यद्यपि महिलाओं के सम्मुख केन्द्रों में तैयार किये गये कार्यक्रमों का संचालन न हो सका लेकिन वर्षा को नजरंदाज करते हुए उन्होंने पूर्ण जोश के साथ सम्मेलन को जारी रखा। शराब के विरोध में महिलाओं ने खूब प्रदर्शन किया। आस–पास के गाँवों से आयी हुई सभी महिलाओं ने शराब के विरोध में आवाज उठाई। महिलाओं की पूर्ण भागीदारी को देखते हुए अन्य स्थानीय सामाजिक कार्यकर्त्ताओं ने भी उनका सहयोग किया। यह एक अच्छा संकेत है। सरकार द्वारा शराब की बिक्री के लिए अनुमति दी जा रही थी लेकिन स्थानीय महिलाओं तथा सकारात्मक सोच रखने वाले ग्रामवासियों के सहयोग से यह बुराई समाज में न आ सकी।

किशोरी संगठन बैनोली

दिव्या चौधरी

किशोरी संगठन बनने से गाँवों में बहुत परिवर्तन आया है। पारंपरिक व्यवस्था में लड़कियों को घर से बाहर निकलने, घूमने–फिरने की मनाही थी। अभिभावक लड़कियों को घर से बाहर नहीं भेजते थे। लड़कियों को घर के कामों में व्यस्त कर देने से वे अपनी शिक्षा और उन्नति के बारे में सोच भी नहीं पाती थीं। उनके खान–पान पर भी नजर रखी जाती थी जबकि लड़कों को इस प्रकार के बंधनों से मुक्त रखा जाता था।

बैनोली गाँव में किशोरी संगठन बनने के बाद बदलाव हुआ। जो लड़कियाँ कभी घर से बाहर नहीं निकलती थी वे आत्मविश्वास के साथ काम करने लगीं। किशोरी संगठन बनने से लड़कियाँ काफी हद तक अपने बारे में सोचने लगी हैं। आज भी अनेक किशोरियाँ केन्द्र में आती तो हैं पर अपने विचार प्रकट नहीं कर पातीं। शुरू–शुरू में अनेक अभिभावकों ने अपनी बेटियों को केन्द्र में भेजने से मना कर दिया पर धीरे–धीरे लड़कियों की संख्या बढ़ रही है। किशोरी संगठन बनाने से लड़कियों की एक अलग पहचान बनी है। वे गोष्ठियों में अपनी समस्याएं बताती हैं। विचारों का आदान–प्रदान करती हैं। किसी भी विषय पर जानकारी ले सकती हैं। जैसे–स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त करना। बैनोली गाँव में किशोरी संगठन की गतिविधियों से कुछ महत्वपूर्ण मुद्दे उभरकर आये हैं:

- सभी किशोरियों को अपनी बात कहने का अवसर मिला है
- बैठक में गाँव की सभी किशोरियों की सहभागिता व सहयोग रहता है
- हर एक किशोरी स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहती है
- किशोरियों ने शारीरिक साफ–सफाई के महत्व को भली–भाँति समझा है
- किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक परिवर्तनों की जानकारी एवं स्वयं की देखभाल के तरीके सीखते हुए किशोरियाँ आगे बढ़ रही हैं
- सभी किशोरियाँ मिलकर कार्य करें तो सफलता मिलना निश्चित है।

अगर गाँव में हर सप्ताह किशोरियों की बैठक हो तो समाज में अवश्य ही परिवर्तन आयेगा। मैं तो यही कहती हूँ कि:

गाँव की सोच बदलो, किशोरी संगठन बनाओ।
संगठन से, हर किशोरी जागरूक होगी।
किशोरियों के हित के लिए, संगठन बनाओ।
माँ–बाप का यही कर्तव्य, लड़कियों को आगे बढ़ाओ।।

किशोरियों में आया बदलाव

निर्मला जोशी

मैं विकासखण्ड धौलादेवी, जनपद अल्मोड़ा, ग्राम धारी में किशोरी संगठन की सदस्या हूँ। कक्षा बारह में पढ़ती हूँ। मेरी उम्र सत्रह वर्ष है। मैं पिछले तीन वर्षो से किशोरी संगठन की सदस्य रही हूँ। जब संगठन में नहीं जुड़ी थी तब अपरिचितों के सामने बात करते वक्त और गाँव से बाहर जाते हुए बहुत झिझक होती थी। जब संस्था से जुड़ी और अल्मोड़ा में प्रशिक्षण के लिए गयी तब समझ में आया कि झेंपने या किसी से डरने की कोई वजह नहीं है।

जब मैं पहली बार भ्रमण के लिए अल्मोड़ा गयी तो डर था कि न जाने क्या होगा लेकिन वहाँ जाकर समझ में आया कि लड़की को कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। किशोरियाँ भी स्वयं निर्णय ले सकती हैं। जब मैं पहली बार अल्मोड़ा आयी तो बारह वर्ष की थी। मुझे गाँव से बाहर की दुनिया की कोई समझ नहीं थी। जब अल्मोड़ा से घर वापस लौटी तो गाँव में सभी को यह अहसास हुआ कि लड़कियों को उनका हक देना चाहिए। पहले तो परिजन मुझे कहीं बाहर भेजने के लिए राजी नहीं होते थे। वे सोचते कि लड़की बाहर जायेगी तो बिगड़ जायेगी। मैंने उन्हें समझाया कि कहीं आने–जाने से कोई बिगड़ नहीं जाता।

धीरे–धीरे गाँव में समझ बनी। जब भी भ्रमण का अवसर आता तो मेरी माँ ग्राम–गोष्ठी में कहती कि वे अपनी बेटी को जरूर भेजेंगी। मेरी माँ महिला संगठन की सदस्य हैं। मुझे कहीं जाना हो तो माँ आसानी से अनुमति दे देती हैं। पहले घर–परिवारों में लड़की को कोई दर्जा नहीं दिया जाता था। ग्रामवासी कहते कि लड़कियों को घास ही काटना है, पढ़ने से क्या लाभ?परिवार में हम पाँच बहनें और भाई हैं। दो बहनों ने दसवीं कक्षा तक पढ़ा। उसके बाद उनकी शादी हो गयी। तीन छोटी बहनों की पढ़ाई जारी है। हम सभी बहनें पढ़ना चाहती हैं।

जब मैं छोटी थी तो मुझे ज्यादा बोलने के लिए टोका जाता था। बड़े–बुजुर्ग झुक कर चलने को कहते थे। मैं घर के हर एक काम में मदद करती और हिम्मत से काम लेती। जब भी मौका आता तो अपना निर्णय खुद लेती। घर में बुजुर्ग और ग्रामवासी रोकते पर मैं सही राह पर थी। अब मैं बोल सकती हूँ और सर उठाकर चल सकती हूँ। अपने निर्णयों और उनके परिणामों

के लिए स्वयं जिम्मेदार रहूँगी। आज अपनी जिंदगी से खुश हूँ। यह अवसर मुझे किशोरी संगठन द्वारा प्राप्त हुआ।

आज हमारे गाँव की किशोरियाँ संगठन में जुड़ी हैं। वे एक–दूसरे को देखकर आगे बढ़ने की सोचती हैं। समय निकालकर हमेशा संगठन के कार्यों में सम्मिलित होती हैं। हमारे गाँव की किशोरियाँ बहुत आगे बढ़ चुकी हैं। जब मुझे किशोरियों के अधिकारों के विषय में जानकारी हुई तो मैंने उसे गाँव, विद्यालय के अतिरिक्त अपने भाई–बहनों, दोस्त–मित्रों और माँ को भी बताया। इस वजह से मैं उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा की आभारी हूँ। इसी संस्थान की वजह से मुझे आगे बढ़ने का मौका मिला है।

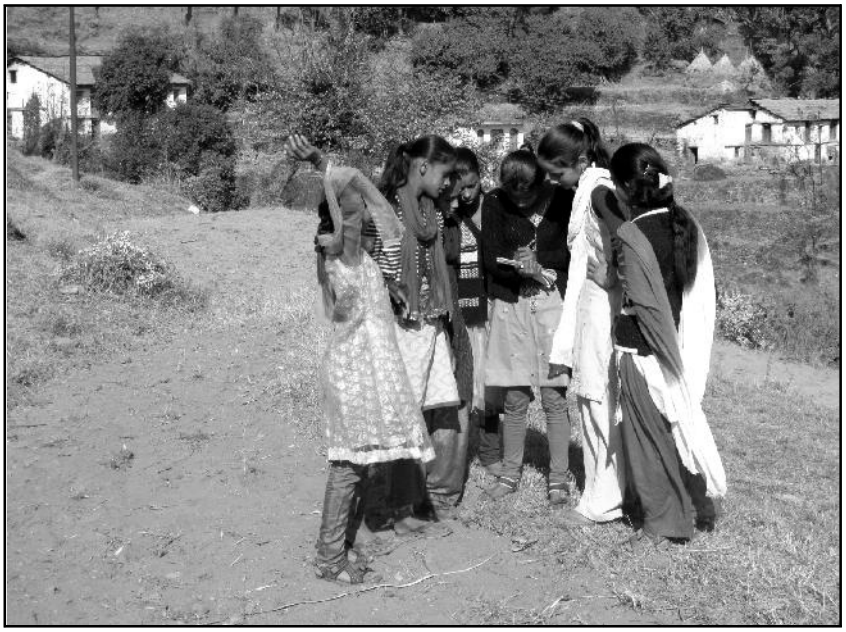

केदारनाथ में आपदा

बबीता तिवारी

उत्तराखण्ड के रूद्रप्रयाग जिले में केदारनाथ एक सुप्रसिद्ध तीर्थ–स्थान है। देश–विदेश से तीर्थयात्री दर्शनों के लिए केदारनाथ आते हैं। शीतकाल में केदारनाथ की डोली छः माह के लिए ऊखीमठ में भगवान ओंकारेश्वर मंदिर में पूजा के लिए रखी जाती है। गर्मी के मौसम में महादेव की पूजा केदारनाथ मंदिर में होती है। जब 2013 में भगवान की डोली केदारनाथ पहुँची तो एक माह के बाद आपदा आ गई। 16–17 जून 2013 को उस वर्ष मानसून की पहली वर्षा हुई। स्थानीय ग्रामवासी केदारनाथ यात्रा–मार्ग में रोजगार के लिए गये थे। वे यात्रा–मार्ग में दुकान, होटल, ढाबा, लॉज आदि खोलकर आजीविका अर्जित करते। घोड़ा, खच्चर, डांडी–कण्डी में यात्रियों को ले जाने का काम करते।

केदारनाथ क्षेत्र की प्राकृतिक आपदा से भारी मात्रा में जन–धन का नुकसान हुआ। केदारनाथ मंदिर के पीछे ही ऊँचाई पर गाँधी सरोवर स्थित है। अत्यधिक वर्षा के कारण तालाब में पानी भर गया। तालाब के एक हिस्से के टूट जाने से दूध–गंगा ओर सरस्वती नदी ने विकराल रूप ले लिया। ये दोनों नदियाँ पानी के साथ पत्थर, मलवा, पेड़ आदि बहाकर ले आयीं। वहाँ पर मौजूद लोगों ने नदी का यह रूप देखा तो वे भयभीत हो गये। देखते–देखते हजारों की संख्या में स्थानीय निवासी, तीर्थयात्री, पशु और मकान, होटल इत्यादि सभी मलवे के नीचे दब गये। रामबाड़ा, गौरीकुण्ड, घेनुरपाणी, सोनप्रयाग में भी दुकानें, लॉज–होटल, घोड़े, खच्चर आपदा की भेंट चढ़ गये। 16–17 जून 2013 की इस आपदा में गुप्तकाशी के लमगोण्ड़ी गाँव में कोई भी पुरूष जीवित नहीं बचा। पास ही में स्थित ल्वाणी गाँव में एक ही संयुक्त परिवार के आठ भाइयों की मौत हो गयी। उस वक्त विद्यालयों में छुट्टी होने के कारण बच्चे भी परिजनों की मदद के लिए केदारनाथ गये थे। वे भी आपदा की भेंट चढ़ गये।

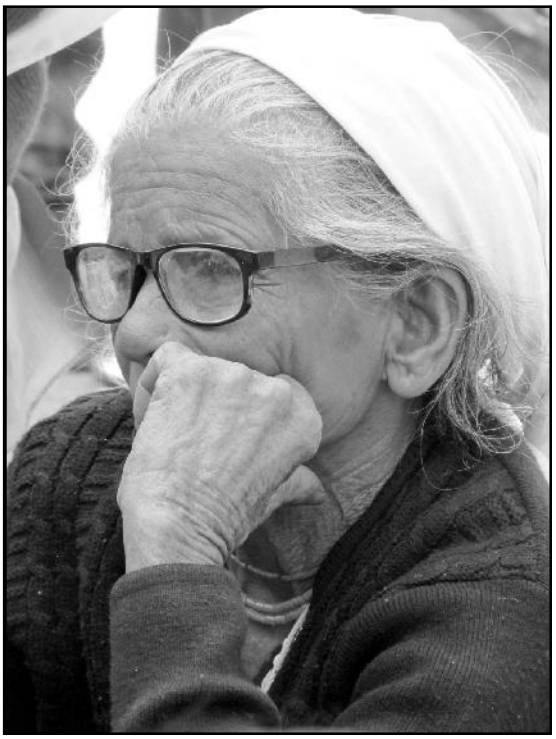

2013 में आई आपदा को याद करते हुए आज भी डर लगता है। मलवा आने से रास्ते टूट गये। लोग जंगलों में इधर–उधर भटक गये। इसके अतिरिक्त अनेक यात्रियों की मृत्यु जंगल में प्यास, भूख एवं ठंड से हुई। इस आपदा ने भाई को बहनों से अलग कर दिया। माताओं ने अपने बेटे खो दिये। सुहागिनों से उनके पति छिन गये। इन में से कुछ नवविवाहितों की शादी को सिर्फ एक–दो माह ही हुए थे।

आपदा के बाद किसी मृतक बच्चे का कक्षा दस और किसी का बारहवीं की बोर्ड की परीक्षा का परिणाम आया, यह एक सपना ही था। घर में माताओं ने सपना देखा था कि उनके बेटे बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण करेंगे, आगे बढ़ेंगे। आपदा से घरों के चिराग ही बुझ गये। परीक्षा का परिणाम कौन सुनता?

आपदा के बाद कई संस्थाएं मद्द के लिए आगे आईं, घर–घर जाकर लोगों को सांत्वना दी। दुःख की घड़ी में लोगों को फिर से घर बनाने में मदद की। आपदा में केदारनाथ मंदिर बच गया क्योंकि इस प्राचीन देवालय के पीछे एक बड़ी शिला आ टिकी। इस आपदा में हमारे देश के सैनिकों ने पैदल एवं हवाई जहाज के द्वारा लोगों की बहुत मदद की। आपदा में पठाली, किमाणा, पैंज, डूंगर–सेमला गाँवों में भी जन–धन का नुकसान हुआ। न तो दुकानदार, न खच्चर वाले, न लॉज मालिक, न ही तीर्थ–पुरोहित घर वापस आये। अभी भी लोगों का रो–रोकर बुरा हाल है।

2012 में ऊखीमठ के मंगोली–चुन्नी गाँवों में भी इसी प्रकार की भयंकर आपदा आई थी। इसमें भी ग्रामवासियों ने परिजनों को खोया। इस आपदा के बारे में जितना कहा जाये वह कम ही है। यही प्रार्थना करती हूँ कि मृतकों की आत्मा को शान्ति मिले और उनके घरवालों को इस दुःख को सहने की शक्ति रहे।

कैसा अथक प्रयास है

विमला बहन

मैं पिछले सैंतीस वर्षों से लक्ष्मी आश्रम में बच्चियों के साथ काम करती रही हूँ। पिछले साल नवम्बर माह से उत्तराखण्ड शिवा शक्ति समिति चल्मोड़ीगाड़ा संस्था, दन्यां, में रह रही हूँ। मैं पहली बार उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा में 2014 को दिसम्बर माह में संवाद विमर्शशाला में शामिल हुई। इस तीन दिवसीय बैठक में काफी कुछ सीखने को मिला। यह संस्था मेरे लिये नयी थी किन्तु मैंने इसे समझने की कोशिश की। दन्यां में संस्था की प्रमुख बहनों अनिला पंत एवं पुष्पा पुनेठा के साथ कार्य–क्षेत्र को देखने गाँव–गाँव में गयी। गाँवों में ग्राम शिक्षण केन्द्र, महिला संगठन, महिलाओं में आत्म–विश्वास बढ़ना, कोष जमा करना, धन का सही उपयोग, सामुहिक उपयोग, बर्तन खरीदना, स्वास्थ्य एवं साफ–सफाई के प्रति जागरूकता, कानून, महिलाओं के हक, सही–गलत की पहचान, किशोरियों के साथ बातचीत, पंचायती चुनाव के बारे में पूर्व जानकारी, बालमेलों का आयोजन, शैक्षणिक–भ्रमण के दौरान जिम्मेदारी लेना, संस्था में व्यवस्था, उत्तराखण्ड महिला परिषद्, अल्मोड़ा में समय–समय पर गोष्ठियों में शामिल होने और अनुभव लेने–देने, लोगों से मैत्री–भाव बढ़ाने एवं एक दूसरे के कार्य को समझने का प्रयास किया।

इसी बीच मैंने अपनी बात श्री पाण्डे जी एंव अनुराधा दीदी के सामने रखी। उन्होंने बड़ी खुशी से मुझे बच्चों के लिये कुछ किताबें, खेल का सामान, मानचित्र इत्यादि दे दिये। गाँव में वापस आने के बाद आस–पास के बच्चों से बातें की। उन्होंने खुशी से मेरे पास आने को हामी भर दी। सबसे पहले मैंने उनसे दोस्ती की। इससे आपस में विश्वास जागा। उसके बाद कविता, कहानी, चुटकुले, खेल, प्रार्थना, नाच–गीत उन्हीं से सुने। तब मेरे भीतर सोई हुई चेतना भी जागी। मेरा भी शिक्षण हुआ। अपनी शक्ति को पहचानने का मौका मिला।

स्कूल से वापस आने के बाद बच्चे संस्था में शाम को साढ़े छः बजे तक रहते हैं। जय–जगत कहना, जूते–चप्पलों को एक पंक्ति में रखना, शान्तिपूर्वक बैठना, प्रार्थना, सुलेख करना, गलतियों को सुधारना, लिपि पर ध्यान देना, शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना, भाषा–ज्ञान एवं रंगों की पहचान, कहानियाँ पढ़ना, चिड़ियाँ को दाना देना, उनकी आवाजें सुनना, चित्र बनाना, फूलों को छूना, पेड़ों की पहचान, व्यायाम, भावगीतों के साथ प्रतिदिन की गतिविधियाँ सपन्न होती हैं। इस कार्य से मुझे बड़ा सन्तोष मिलता है।

बच्चों के वापस चले जाने के बाद मैं कुछ देर बैठकर खुद की समीक्षा करती हूँ। स्वयं में संयम लाना, गलत शब्दों को न बोलना, भेद–भाव कम करने के प्रयास करना, संगठन में रहना, मैत्री–भाव बढ़ाना, बच्चों में एकाग्रता विकसित करना आदि प्रतीकों से खुद की सफलता का आंकलन करती हूँ। यही इच्छा करती हूँ कि हर दिन खुद में सुधार लाऊँ, बच्चों की मित्र और मार्गदर्शक बनकर रहूँ। क्षेत्र के बच्चे निरंतर प्रगति करें।

मेरी बात

दीपा पाण्डे

मैं ग्राम चौड़ा में रहती हूँ। मेरी उम्र सत्रह वर्ष है और मैं कक्षा बारह में पढ़ती हूँ। किशोरी संगठन में दो वर्षों से जुड़ी हूँ। मुझे किशोरी संगठन की सदस्या बन जाना बहुत अच्छा लगा। इससे भ्रमण करने का मौका मिला और बहुत सी ऐसी जानकारी मिली जो नयी थी। मैं इन चर्चाओ से अचंभित हो गई। पहले से हम घर से बाहर नही निकलते थे, जानकारियाँ कहाँ से मिलती?

घर–समाज में किशोर–किशोरियों के बीच अनेक प्रकार के भेदभाव होते हैं। जैसे–हिंसा, लिंग और जातिगत–भेदभाव इत्यादि से संबंधित मुद्दे दैनिक जीवन में प्रभावी बने रहते हैं। पहले हम किशोरियाँ घर से बाहर के काम स्वयं नहीं करती थीं। घर के पुरूष सदस्य जैसे–पिताजी या भाई काम करते थे। लड़कियाँ अपने काम करने के लिये उन्हें दे देती थीं। घर–गाँव में किसी के भी सामने ज्यादा नहीं बोलती थीं।

जब हम किशोरी संगठन में जुड़ी तो सीखा कि इन्सान का अत्यधिक चुप रहना अच्छा नहीं है। हर नागरिक को संवैधानिक रुप से बराबरी का हक प्राप्त है। अब किशोरियाँ अपना कार्य स्वयं करने के लिये पहल कर रही हैं। घर से बाहर जाने की हिम्मत आयी है। मैं समाज के बारे में बहुत कुछ जानना और सीखना चाहती हूँ। भविष्य में किशोरी संगठनों की संचालिका बनना चाहती हूँ। इस वजह से संगठन के माध्यम से ज्यादा से ज्यादा जानकारी प्राप्त करने की इच्छा करती हूँ। किशोरी संगठन से जुड़कर मुझमें बहुत बदलाव आया है। पहले से मुझे सामाजिक अवसरों पर बोलना नहीं आता था। अब मैं गोष्ठियों में अपनी बातें कहना सीख गयी हूँ।

ग्राम शिक्षण केन्द्र वलना

प्रभा बसेड़ा

मैं वलना गाँव में शिक्षण केन्द्र का संचालन करती हूँ। इससे पहले दो वर्षों तक संध्या केन्द्र से जुड़ी थी। मुझे किशोरियों के साथ काम करना पसंद है। जब ग्राम शिक्षण केन्द्र शुरू हुआ तो महिलाओं व किशोरियों के साथ घुलने–मिलने का एक अच्छा अवसर मिल गया।

हमारे गाँव में पन्द्रह किशोरियाँ रहती हैं। वे सभी ग्राम–गोष्ठियों में भाग लेने के लिए आती हैं। गोष्ठियों में सर्वप्रथम चेतना–गीत गाते हैं। गाये हुए गीत के सम्बन्ध में चर्चा करते हैं। सबके अपने–अपने मत होते हैं। कई बार बहस भी हो जाती है। यदि किसी मुद्दे को लेकर बहस हो जाये तो कभी–कभी आस–पास के घरों से ग्रामवासी भी एकत्रित हो जाते हैं। हम उनके सामने भी वही बातें रखते हैं। इससे हमें सही सुझाव मिलने में आसानी हो जाती है। अधिकतर मुद्दे एक प्रश्न "ऐसा क्यों?" को लेकर चर्चा में आते हैं। हर एक किशोरी अपनी–अपनी बात कहती है।

सभी किशोरियाँ केन्द्र में आती हैं। वे अखबार पढ़ती हैं तथा पढ़ी हुई खबरों का सार अन्य बच्चों को बताती हैं। कभी–कभी बच्चों से प्रश्न पूछती हैं। जानकारी न होने पर सही जवाब बताती हैं। गोष्ठी के दिन किशोरियाँ रस्सी–कूद एवं अन्य खेलों में भाग लेती हैं। कुछ किशोरियाँ कैरम–बोर्ड खेलती हैं तो कुछ किताबें पढ़ती हैं। किशोरियों की पसंदीदा पुस्तकों में किरण बेदी, मानव शरीर एवं कहानियों की किताबें शामिल हैं। वे पुस्तकों को घर भी ले जाती हैं। कभी–कभी मैं उन्हें चित्रांकन करने के लिए कहती हूँ। वे कागज के कार्य सिखाने को कहती हैं। मैंने उन्हें कागज से चिड़िया और मछली बनाना सिखाया।

सभी किशोरियाँ मिलकर कहीं घूमने के लिए जाती हैं। एक साथ घूमना–फिरना सभी को पसंद है। गाँव की प्रत्येक किशोरी अल्मोड़ा जाने के लिए उत्साहित रहती है। वे अल्मोड़ा में उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान का दफ्तर देखना चाहती हैं। वहाँ किशोरी कार्यशालाओं में भाग लेना चाहती हैं। पहले गोष्ठियाँ कम होती थीं लेकिन अब माहौल बदल गया है। किशोरियाँ सम्मेलन में भाग लेने के लिए उत्सुक रहती हैं। वे स्वयं भी सम्मेलनों में शिक्षाप्रद–नाटकों का मंचन करती हैं। किशोरियाँ अलग–अलग गाँवों में सम्मेलनों में भाग लेने के लिए जाती हैं। ग्राम शिक्षण केन्द्र की वजह से मैं भी गाँव की सभी किशोरियों से घुलमिल गयी हूँ। अपने गाँव से बाहर के तोकों में किशोरियों व महिलाओं से बातें भी कर लेती हूँ। मैं जब से शिक्षिका बनी हूँ, तब से खुद पर विश्वास बढ़ गया है।

नामिक

केदार सिंह कोरंगा

पिथौरागढ़ एवं बागेश्वर जनपद की सीमा में पूर्वी रामगंगा नदी के पार नामिक नाम का गाँव बसा हुआ है। सड़क एवं यातायात की सुविधाओं से वंचित परंतु जंगलों, हिमाच्छादित चोटियों, गिरि–कन्दराओं, हिमनदों, झीलों, कुंडों एवं बुग्यालों से सुसज्जित यह गाँव अनुपम प्राकृतिक सौन्दर्य का नमूना है। समुद्र सतह से नामिक की ऊँचाई लगभग 2200 मीटर है। इसकी उत्तरी दिशा में कालाकोटी (4000 मीटर) तथा चकुवा (3000 मीटर) की चोटियाँ विराजमान हैं। इस गाँव से होते हुए नामिक और हीरामणी ग्लेशियर के लिए रास्ता बना हुआ है।

ग्लेशियर तक पहुँचने के लिए बने हुए रास्ते में लगभग बीस किमी की दूरी में पेनठंगा, गोसी एवं खारबगड़ नाम के स्थान मिलते हैं। ये स्थान एक–दूसरे से ऊपर–नीचे चार–पाँच सौ मीटर की दूरी पर स्थित हैं। खारबगड़ नाम की गुफा में एक शिवलिंग की बेदी–सी बनी हुई है। उसमें अनेक देवी–देवताओं की मूर्तियाँ बनायी गई हैं। गुफा में पानी टपकता है। अनेक प्रकार के जंगली जानवर यथा–थार, थरड़ी, कस्तूरी–मृग आदि इन मूर्तियों को चाटते रहते है। इसी नमकीन पानी की वजह से इस गाँव का नाम नामिक हुआ। इस गाँव में बालछन व नन्दादेवी का पौराणिक मन्दिर स्थित है। गाँव से पाँच किमी की दूरी पर बालछन का कुंड एवं बीस किमी की दूरी पर नन्दा–कुंड स्थित है। स्थानीय ग्रामीण हर तीसरे साल कुंड तक जा कर वहाँ से पूजा के लिए ब्रह्म–कमल लाते हैं।

नामिक गाँव में लगभग आठ–नौ पीढ़ी से लोग रह रहे हैं। वर्तमान में इस गाँव में एक सौ बीस परिवार निवास करते हैं। इसमें अनुसूचित जाति के चालीस, अनुसूचित जनजाति के अड़तीस, सामान्य (जो कि सीमान्त जनपद होने के कारण राज्य सरकार द्वारा पिछड़े के रूप में घोषित हुए) बयालीस परिवार हैं। इन परिवारों में मुख्यतः परिहार, रौतेला, दानू, ताकुली, भंडारी आदि हैं। जनपद पिथौरागढ़, तहसील मुन्स्यारी, विकासखण्ड मुन्स्यारी, न्याय पंचायत मंडलकियाँ, पट्टी गिरगाँव के इस इलाके में अधिकांश महिला–पुरूष पशुपालन व खेती पर निर्भर हैं। अधिकांश परिवार भेड़–बकरी पालन का कार्य करते हैं। कुछ परिवारों से पुरूष सेना, राज्य सरकार के कर्मचारी व अन्य निजी व्यवसायों में कार्यरत रहे हैं।

गाँव में रह रहे प्रौढ़ पुरूष एवं महिलाएं परम्परागत ऊनी पोशाक पहनते हैं। पुरूष ऊनी कोट (बखुला), ऊनी पाजामा (सुतुण) और टोपी एवं महिलाएं घाघरा, आड़णा, काला पिछौड़ा की गादी पहनती हैं। घर में बने ऊनी वस्त्र जैसे कम्बल, थुलमा, कालीन (दन), चुटुका आदि का प्रयोग बिस्तर के रूप में होता है। ग्रामवासी पशुपालन करके घी बनाने का काम करते हैं। ठंड होने के कारण, इस क्षेत्र में चौलाई (चुवा), फाफर, राजमा, आलू, रैंस, जौ, ऊवा (गेहूँ की तरह एक प्रजाति) तथा मडुवा, झिंगोरा एवं चिड़ा आदि फसलों का उत्पादन होता है। ये सभी अनाज अत्यंत पौष्टिक एवं गुणकारी हैं।

उद्देश्य एवं सफलता

प्रमोद त्रिवेदी

हिमालयन ग्रामीण विकास संस्था विगत कई वर्षों से उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा के सहयोग से ऊखीमठ क्षेत्र के विभिन्न गाँवों में गोष्ठियाँ करके जन–जागरूकता अभियानों का संचालन कर रही है। महिला एवं बाल शिक्षण, किशोरी कार्यक्रम की संभावनाएं तथा समस्याएं, पर्यावरण संरक्षण, आपदा से निपटने जैसे अनेक पहलुओं पर ग्रामवासियों का सहयोग करने एवं उन्हें संगठित करते हुए विकास के कार्य करने के लिए संस्था निरन्तर प्रयासरत है। संस्था के कार्यकर्त्ता निरंतर प्रयास करते हुए निम्नलिखित सकारात्मक परिणाम पा सके हैं–

- 2013 की आपदा से प्रभावित हुई निराश्रित एवं विधवा महिलाओं के लिए ऊखीमठ क्षेत्र के आसपास स्थित गाँवों में बुनाई–प्रशिक्षण केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है
- महिलाओं को विभिन्न प्रकार के स्थानीय मौसमी फलों एवं फूलों से रस निकालने का प्रशिक्षण दिया गया। संस्था के प्रयासों से ऊखीमठ में एक फल–प्रसंस्करण इकाई की स्थापना हुई है
- बाल–विवाह, दहेज, घरेलू हिंसा, कन्या–भ्रुण हत्या आदि विषयों पर निरंतर चर्चाएं एवं गोष्ठियों से सामाजिक बुराइयों पर गहराई से बातचीत हो रही है
- अनेक गाँवों में शादी एवं अन्य सामाजिक–राजनीतिक समारोहों के आयोजन में शराब के प्रचलन पर पूर्ण–रूप से प्रतिबन्ध लगा दिया गया है
- संस्था ने जन–धन योजना के अन्तर्गत वृद्ध एवं विकलांग नागरिकों के बैंक में खाते खोलने में मदद की है
- महिला अधिकारों पर जागरूकता बढ़ने से पंचायतों में ग्रामीण महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है
- संस्था के कार्यकर्त्ता क्षेत्र के सभी गाँवों में पौधरोपण हेतू तकनीकी जानकारी देते हुए ग्रामवासियों को जंगलों के संरक्षण, संवर्धन एवं परिवर्धन के लिए प्रेरित करते रहे हैं
- बच्चों के चहुँमुखी विकास हेतु ग्राम शिक्षण केन्द्रों में विभिन्न प्रकार की पठन–पाठन संबंधी रचनात्मक गतिविधियाँ की जाती हैं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र उषाड़ा

पूनम बजवाल

ग्राम शिक्षण केन्द्र में निरंतर आने से बच्चों में आत्मविश्वास, धैर्य, मेल–मिलाप, अनुशासन, आज्ञापालन, उत्साह एवं परिश्रम की भावना विकसित हुई है। केन्द्र में आकर बच्चे हमेशा उत्साहित रहते हैं और कुछ नया करने की एक ललक सी दिखायी देती है। केन्द्र में कुछ ऐसी शैक्षणिक गतिविधियाँ होती हैं जो विद्यालयों में नहीं होतीं। बच्चे खेल के माध्यम से सीखते हैं। इससे उनका शारीरिक, भावनात्मक व मानसिक विकास होता है। केन्द्र में निरंतर आने से बच्चों में कुछ परिवर्तन आये हैं–

- बच्चों में काम के प्रति लगन बढ़ी है। वे छोटी–छोटी अनेक गतिविधियों को उत्साहपूर्वक मन लगाकर करते हैं। शाम को यूँ ही वक्त बिताने वाले बच्चे केन्द्र में पढ़ते हैं
- केन्द्र में आने से बच्चों की हिचकिचाहट कम हुई है। वे आसानी से अपनी बातों को कह लेने में सक्षम हुए हैं
- बच्चे सफाई पर बहुत ध्यान देते हैं। हमेशा केन्द्र और अपने घर के आस–पास की जगह को साफ रखते हैं
- केन्द्र में आने से बच्चे चित्रांकन में रूचि लेने लगे हैं। वे हर रोज कुछ नयी गतिविधि करते हैं
- बच्चे सबसे अधिक रूचि खेलकूद में लेते हैं। वे उत्साह व सहयोग की भावना से खेलते हैं। इससे उनका शारीरिक एवं मानसिक विकास हुआ है
- बच्चे हर दिन नयी किताबें पढ़ते हैं और कहानियाँ याद करते हैं। कहानियाँ पढ़ने के बाद वे अन्य बच्चों को बताते हैं। जब भी उन्हें समय मिलता है वे किताबें पढ़ते रहते हैं
- केन्द्र में बच्चों के साथ विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं जैसे–निबन्ध, सुलेख आदि की जाती हैं। बच्चे एक–दूसरे से बेहतर और कुछ नया करने की सोचते हैं। हर बच्चा दूसरे से अलग गतिविधि करना चाहता है
- अब बच्चों को अखबार से गाँव, जिले, प्रदेश, देश–विदेश की विभिन्न जानकारियाँ मिलने लगी हैं। बच्चों के अलावा अन्य वयस्क ग्रामवासी भी अखबार पढ़ते हैं
- हर बच्चे में एक–दूसरे की सहायता करने की भावना है। अधिक उम्र के बच्चे खेल व पढ़ाई में कम उम्र के साथियों की सहायता करते हैं। सभी प्रेम से रहते हैं।

प्रशिक्षण लेने और केन्द्र का संचालन करने के बाद किताबें पढ़ने में स्वयं मेरी रूचि बढ़ी है। खेलों के प्रति रूचि जागृत हुई है। मैं अखबारों से महत्वपूर्ण जानकारियाँ इकट्ठा करती हूँ और उन्हें बच्चों एवं किशोरियों को बताती हूँ। अपने काम के प्रति जागरूक हूँ। नियमित रूप से संचालन करने के बाद काम के प्रति मेरा उत्साह हुआ और आत्मविश्वास बढ़ गया।

बदलाव की लहर

लीला नेगी

मैं ग्राम सभा पुडियाणी जिला चमोली की निवासी हूँ। वर्तमान में महिला संगठन पुडियाणी की अध्यक्षता कर रही हूँ। इस पद पर स्वयं को बहुत गौरवान्वित महसूस करती हूँ क्योंकि हमारे गाँव की महिलाएं जागरूक और हिम्मती हैं। महिलाओं की वजह से क्षेत्र में जुआ, नशाखोरी और अन्य जो भी असमाजिक गतिविधियाँ होती थी, आज कोसों दूर हैं।

बीते दिसम्बर 2014 को हुई भयंकर बर्फबारी और दैवीय आपदा ने इस गाँव के जंगल का लगभग दस प्रतिशत हिस्सा क्षतिग्रस्त कर दिया था। नालों और जंगलों के रास्तों में टूटे हुए पेड़ कुछ इस तरह बिखरे हुए थे मानो महाभारत के युद्ध में योद्धा धराशायी हो गये हों। ग्रामवासियों ने मिलकर टूटे हुए पेड़ों को अन्य पेड़ों से अलग किया। जो छोटे पौधे टूट कर झुक गए थे, उन्हें सीधा और सुरक्षित करने का प्रयास किया। लगभग दो माह तक महिलाओं ने रोजमर्रा के सभी कार्यों को छोड़कर जंगलों और रास्तों की सफाई और निर्माण का काम किया। आज संगठन की एकता और परिश्रम की वजह से जंगलों की तरफ से स्कूलों तक जाने और मवेशियों के आवागमन के रास्ते साफ–सुथरे और सुव्यवस्थित हो गये हैं।

जब 2006 में मेरा विवाह इस गाँव में हुआ था तब माहौल फर्क था। कोई भी अभिभावक लड़कियों को इण्टरमीडियट के पश्चात् आगे पढ़ाने के बारे में नहीं सोचता था। आज नई पीढ़ी की सोच में बदलाव हुआ है। माहौल ऐसा है कि कोई भी बालिका घर में बैठकर अपना समय बर्बाद नहीं करती।

कई लड़कियाँ विद्यालयों से डिप्लोमा और कोचिंग कर रही हैं। कई लड़कियाँ सिलाई, कताई, बुनाई में अपना करियर बना रही हैं। कुछ लड़कियाँ प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत हैं। गाँव में शराबी और जुआरी दूर–दूर तक नहीं दिखाई देते। लड़कियाँ और महिलाएं सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती हैं। मेरी सभी माताओं और बहनों–बेटियों से यही विनती है कि हमें किसी भी परिस्थिति से डरकर पीछे नहीं हटना चाहिए। जो मन में ठान लिया उस कार्य को पूर्ण करना चाहिए। जिस प्रकार महिला के हाथ में परिवार है, उसी प्रकार समाज को सुधारने और व्यवस्थित करने में भी उनकी भूमिका को नजरंदाज नहीं किया जा सकता।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में मेरा अनुभव

ज्योति नेगी

मैं ग्राम शिक्षण केन्द्र जाख में संचालिका के रूप में कार्य करती हूँ। ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ने के बाद बहुत से नये–नये अनुभव हुए। पहले मुझे किसी भी विषय पर गहराई से जानकारी नहीं थी लेकिन केन्द्र से जुड़ने के बाद बहुत से कौशल विकसित कर पाई हूँ।

केन्द्र के माध्यम से गाँव में महिलाओं तथा किशोरियों के साथ अधिक सम्पर्क हुआ है। हर हफ्ते रविवार को किशोरियों की बैठकें होती हैं। इन बैठकों में अनेक मुद्दों पर चर्चा होती है। जब मैं किशोरी बैठक में भाग लेने के लिए केन्द्र में गयी तो कई प्रकार की नई चीजें देखने को मिलीं। कुछ महत्वपूर्ण बातें भी हमें बताई गईं। उसमें मुख्य मुद्दे जीवन कौशल, आत्मनिर्भर होना, अपनी पहचान बनाना, खान–पान और झिझक दूर करना इत्यादि थे।

किशोरी गोष्ठियों से हमने आत्मनिर्भर होने, समाज में अपनी पहचान बनाने तथा झिझक दूर करने के तरीके सीखे। साथ ही, यह भी सीखा कि खान–पान पौष्टिक होना चाहिए। इन विषयों पर चर्चा हमें बहुत ही अच्छी लगी। उसके बाद किशोरियों ने यह सोचा कि समाज में अपनी पहचान बनानी है। मैं हमेशा यही सोचती हूँ कि अनेक परेशानियों के बावजूद माँ ने मेरी पढ़ाई नहीं रोकी। मुझे पढ़ाने के लिए मेरे भाई की पढ़ाई रोक दी। उसने सिर्फ बारहवीं कक्षा तक पढ़ा। लोग कहते हैं कि अभिभावक बेटे और बेटी में भेद–भाव करते हैं लेकिन मेरी माँ ने ऐसा नहीं किया। मुसीबतों के बावजूद उन्होंने मेरी सभी जरूरतों को पूरा किया। माँ ने हमेशा यही कहा कि लोगों के साथ समाज में रहकर हम भी आगे बढ़ेंगे। मेरी माँ ने दूध बेच कर मुझे और भाइयों को पढ़ाया। हमें पढ़ाने के लिए माँ को बहुत मेहनत करनी होती है। मेरी माँ दुनिया की सबसे अच्छी माँ है। कभी–कभी डाँटती भी है पर वह ऐसा हमारी भलाई के लिए करती है। अब मैं अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हूँ। मैं कुछ ऐसा करना चाहती हूँ जिससे माँ को भी महसूस हो कि उन्होंने बेटी को पढ़ाकर गलत नहीं बल्कि अच्छा किया है।

मैं ''नंदा पत्रिका'' के माध्यम से यही कहूँगी कि सभी अभिभावक अपनी बेटियों को पढ़ायें। बच्चों में भेद–भाव न करें। बेटी को आगे बढ़ने का मौका देना चाहिए। बेटियाँ अपने माँ–बाप के बारे में ज्यादा सोचती हैं। किसी भी अभिभावक को बेटी की शादी कम उम्र में नहीं करनी चाहिए। उन्हें आगे बढ़ने का मौका अवश्य दें।

नई सीख नई दिशा

दलीप राज

नैणी गाँव, जिला चमोली, में ज्यादातर परिवार खेती–बाड़ी, मजदूरी व रिगांल के व्यवसाय से जुड़े हुए हैं। गाँव में संगठन बनने से महिलाएं घर–गृहस्थी के साथ–साथ अपने परिवेश का संरक्षण और संवर्धन तथा सामाजिक–सौहार्द बढ़ाने समेत कई महत्वपूर्ण विषयों पर चितंन कर रही हैं। संगठन बनने से पहले वे घर, खेती व जंगल से संबंधित कामों में उलझी रहती थीं। महिलाओं को कभी अपने विचार रखने के लिए कोई खुला मंच नहीं मिल पाया था। संस्था द्वारा समय–समय पर बैठक आहूत करके महिला अधिकारों की जानकारी दी गई। साथ ही, संगठन के माध्यम से एकजुट होकर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। क्षेत्र में हर वर्ष आयोजित किए जाने वाले महिला सम्मेलनों में सभी संगठनों को आमंत्रित किया गया।

सम्मेलन से पूर्व गाँव में एक आम बैठक का आयोजन किया गया। इस खुली बैठक में गाँव के महिला–पुरूष, युवा सभी सम्मिलित हुए। सभी की सहमति से सम्मेलन की विषय–वस्तु और रूपरेखा तय की गई। क्षेत्र में पहली बार आयोजित हुए सम्मेलन में ज्यादातर गाँवों की बुजुर्ग महिलाओं ने प्रतिभाग किया। वे अल्मोड़ा से आई हुई महिला परिषद् की सदस्याओं के विचारों से अत्यंत प्रभावित हुईं। इस सम्मेलन में कुमाऊँ–गढ़वाल की महिलाओं का आपसी परिचय भी हुआ। सम्मेलन में नुक्कड़–नाटको के माध्यम से कई जानकारियाँ दी गईं। धीरे–धीरे युवा–स्त्रियाँ एवं किशोरियाँ भी सम्मेलनों में आने लगी हैं। गाँव की बुजुर्ग महिलाओं ने नई बहुओं को मार्गदर्शन दिया और संगठन में मजबूती से कार्य करने की प्रेरणा दी।

सम्मेलन के बाद उत्तराखण्ड महिला परिषद् से अनुराधा पाण्डे, रेनू जुयाल एवं लटवाल जी द्वारा गाँव में एक आम बैठक का आयोजन किया गया। महिलाओं ने अपने विचार प्रस्तुत किए और कार्यक्रम में सुधार लाने के लिए सुझाव दिये। साथ ही, महिला परिषद् द्वारा अल्मोड़ा में आयोजित की जाने वाली बैठकों में प्रतिभाग करने का निवेदन किया। फलस्वरूप नैणी महिला संगठन की अनेक सदस्याएं बैठक में प्रतिभाग करने अल्मोड़ा गयीं तथा अपने अनुभवों को अन्य संगठनों की महिलाओं के साथ बाँटा।

गाँव में संगठन के माध्यम से स्वच्छ शौचालय, महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र, रिंगाल प्रशिक्षण आदि कई रचनात्मक कार्य किए जा रहे हैं। संस्था द्वारा समय–समय पर गाँव में स्वच्छता अभियान, पर्यावरण संरक्षण,''बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ'' आदि मुद्दों पर खुली चर्चा की जाती है। साथ ही, 2014 में आयोजित हुए पंचायती चुनावों में महिला संगठन की सदस्याओं को वार्ड–सदस्या के रूप में निर्विरोध चुना गया है। आज नैणी गाँव का संगठन एकता, पारस्परिक सहयोग की भावना और महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के दृढ़–निश्चय के साथ आगे बढ़ रहा है।

सुनहरा अवसर

जायसी नेगी

मैं पिछले कुछ समय से ''शेप'' संस्था बधाणी के मार्गदर्शन में गाँव पुडियाणी में ग्राम शिक्षण केन्द्र की संचालिका का कार्य कर रही हूँ। मैं इससे पहले पुस्तकालय की संचालिका के रूप में काम करती थी। पुस्तकालय में मुख्य रूप से बच्चों के साथ ही कार्य करती थी। ग्राम शिक्षण केन्द्र के द्वारा बच्चों के अतिरिक्त किशोरियों तथा महिला संगठनों के साथ भी कार्य करती हूँ। माह के प्रत्येक रविवार को किशोरियों की गोष्ठी होती है। प्रत्येक माह महिला संगठन की गोष्ठी में भी भाग लेती हूँ।

विकासखण्ड कर्णप्रयाग में स्थित पुडियाणी गाँव में काफी पुराना तथा मजबूत महिला संगठन है। संगठन की सभी सदस्याएं जागरूक हैं। संगठन में एकता भी बहुत है। ''शेप'' संस्था के सहयोग से पुडियाणी गाँव में वर्ष 2015 में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसके लिए महिलाओं ने तीन–चार दिन पहले से ही तैयारियाँ शुरू कर दी थीं। रास्तों की सफाई तथा अन्य सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई। सम्मेलन में आस–पास के गाँवों से आई हुई सभी महिलाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत नाटक, मंच–संचालन के अतिरिक्त अपने–अपने अनुभव व्यक्त किये।

इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय मेले एवं ब्लॉक–स्तरीय सरकारी कार्यक्रमों में भी पुडियाणी गाँव की महिलाएं बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती हैं। संगठन को कई बार पुरस्कार भी मिले हैं। इसका अर्थ यह है कि अब महिलाओं की झिझक दूर हो चुकी है। आत्म–विश्वास से भरपूर महिलाएं सामुहिक गतिविधियों में अगुवाई करती हुई उन्नति कर रही हैं।

किशोरी–शिक्षण कार्यक्रम के तहत गाँव की सभी किशोरियों को साथ लेकर गोष्ठियों का आयोजन किया गया। पहले किशोरियाँ गोष्ठी में विचार रखने से झिझकती थीं लेकिन धीरे–धीरे वे महिला–अधिकारों के प्रति जागरूक हुई हैं। जैसे घर–बाहर के काम–काज हों या पढ़ना–लिखना अथवा स्वास्थ्य सम्बन्धी बातें, वे खान–पान, हिंसा, दहेज, सामाजिक भेद–भाव, कम उम्र में शादी, इत्यादि मुद्दों पर चर्चा करती हैं। ये सभी मुद्दे आपस में जुड़े हुए हैं। पुडियाणी गाँव की किशोरियों ने वर्ष 2015 में हुए सम्मेलन में महिला–हिंसा के सम्बन्ध में एक नाटक भी किया। नाटक से एक संदेश समाज में गया जिसका सकारात्मक प्रभाव हुआ है।

मुझे बच्चों के साथ काम करने, किशोरियों की गोष्ठियों तथा महिला संगठनों के साथ अनुभव बाँटने का जो सुनहरा अवसर मिला है उससे बहुत प्रभावित हूँ। मुझमें बदलाव आया है, झिझक दूर हुई है, किशोरियों से सम्बन्धित बहुत सी जानकारियाँ मिलीं हैं। बहुत से खट्टे–मीठे अनुभव भी हुए हैं। मैं इन अनुभवों को कभी नहीं भूलूँगी।

धरती माँ

पुष्पा पुनेठा

धरती माँ की महिमा न्यारी, देती हमको फसलें सारी।
खेतों में हम बीज डालते, फिर ऊपर से खाद डालते।
खेतों में रोपाई करते, खेतों में सिंचाई करते।
फसलें जब तैयार हो जातीं, सब बहनें खेतों में जातीं।
खेतों से अनाज ले आती, प्रसाद बनातीं, पूजा में चढ़ाती।
आजकल खेतों का हो गया बुरा हाल, जंगली जानवरों ने खाया सब माल।
अगर हमारे जंगल न कटते, बन्दर–सुअर गाँव में न आते।

खुद को बदलें

पीताम्बर गहतोड़ी

मेरी माता, ओ मेरी बहिनो! क्यों लाचार बनती हो तुम
जुल्म सहने के लिये क्यों तैयार हो तुम?
आज गाँव–समाज के अलावा दुनिया में ढल के देखो
वक्त के साथ जरा खुद को बदल के देखो।।
मजबूरियाँ समझते हैं लोग, औरत की जिन्दगी
सोचो जरा, कैसा वरदान है, औरत की जिन्दगी।।
गाँव में रात–दिन दौड़ी, शहरों में उछाली
फुटबाल की तरह बना दी है, औरत की जिन्दगी।।
बेटे के लिये माँ और भाई के लिये बहन
जैसे सिर का सफेद बाल है औरत की जिन्दगी।।
ये जुल्म, बलात्कार तो चोटों की तरह हैं
सहलाया हुआ गाल है औरत की जिन्दगी।।
दुनिया शैतान है, शैतान के इरादों को मसल कर देखो
वक्त के साथ जरा खुद को बदल के देखो।।

किशोरी गोष्ठी भालूगाड़ा

राजेन्द्र बिष्ट

दिनाँक 7 दिसम्बर 2014 को भालूगाड़ा गाँव, जिला पिथौरागढ़, में किशोरियों के साथ गोष्ठी की गई। गोष्ठी में ग्रामोन्नति शिक्षा समिति की ओर से राजेन्द्र बिष्ट ने भागीदारी की। गोष्ठी में गाँव में रह रही कुल बीस में से बारह किशोरियाँ उपस्थित थीं।

ग्राम शिक्षण केन्द्र में बारह बजे से शुरू हुई इस बैठक में आपसी परिचय के साथ ही संस्था द्वारा विगत वर्षो से किये जा रहे कार्यों की जानकारी दी गई। मुख्य रूप से लड़का–लड़की में भेदभाव, हिंसा, लोक–अधिकार जैसे विषयों पर चर्चा की गई। चर्चा की शुरूआत इस मुद्दे से हुई कि परिवार और समाज में किशोरियों को लड़कों के समान आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध नहीं हो पाते। किशोरियों ने बताया कि उन्हें पढ़ने का अवसर तो मिल रहा है लेकिन वे तभी तक पढ़ सकती हैं जब तक परिजन चाहें। किशोरियों के कंधों पर घर और खेती के काम की अनेक जिम्मेदारियाँ रहती हैं। उन्हें हर एक काम घर में पूछ कर करना होता है। खेती के काम के निर्णय भी वे स्वयं नहीं लेतीं क्योंकि परिजन यह मानते हैं कि वे ''खेती–गाय–भैंस संभालने का काम सीख रही है।''

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए संस्था के प्रतिनिधियों ने कहा कि कोई भी कार्य किसी व्यक्ति–विशेष के लिए निर्धारित नहीं होना चाहिए। सभी लोग हर प्रकार का काम कर सकते हैं। पारंपरिक सामाजिक ढाँचा ऐसा है कि लड़के और लड़कियों के कार्य बँट जाते हैं। इस व्यवस्था को जानने–समझने और परंपरा में बदलाव लाने के लिए पहल करने की जरूरत है। किशोरियों को पढ़ने का अवसर मिला है, इसे बेहतर कैसे बनाया जा सकता है इस मुद्दे पर सोचने और काम करने की जरूरत है। किशोरियों का कहना था कि वे ग्राम शिक्षण केन्द्र से किताबें लेकर पढ़ रही हैं।

कुछ अनौपचारिक बातों के बाद हिंसा पर समझ बनाने के लिए उसके अलग–अलग

स्वरूपों जैसे–शारीरिक, मानसिक, यौन एवं शाब्दिक हिंसा को उदाहरणों द्वारा समझाया गया। किशोरियों का कहना था कि हिंसा के अनेक रूप समाज में हैं। वे सभी इनसे जूझती हैं। इसके बाद संस्था प्रतिनिधियों ने कहा कि कोई भी व्यवहार जो स्वयं अथवा दूसरे को कष्ट पहुँचाये उसका विरोध करना जरूरी है। किशोरी संगठनों के माध्यम से हम सभी इन विषयों को समझने के लिए चर्चा करें और बाधाओं को पहचानें, तभी समाज में बदलाव आ सकेगा।

किशोरियों ने कहा कि वे पंचायती–राज व्यवस्था को नहीं समझ पाती हैं। फलस्वरूप गोष्ठी में त्रिस्तरीय पंचायती–राज व्यवस्था पर विस्तार से बातचीत हुई। किशोरियों ने रोजगार–गारन्टी, सूचना का अधिकार, महिला–हिंसा जैसे शब्द सुने थे लेकिन उनके विषय में कोई जानकारी नहीं थी। तय किया गया कि प्रत्येक किशोरी ग्राम शिक्षण केन्द्र से एक–एक किताब ले कर पढ़ेगी और उस पर अगले माह की बैठक में सामुहिक तौर पर चर्चा होगी। प्रत्येक गोष्ठी में अलग–अलग विषय लेकर उन पर समझ बनाने का कार्य किया जायेगा। दो बजे कार्यशाला समाप्त करने के बाद किशोरियों के साथ मिल कर ग्रेडिंग का कार्य किया गया।

महिला सम्मेलन से मिली नई सीख

इन्दू डिमरी

वर्ष 2015 में पहली बार महिला संगठन देवलधार, जिला चमोली, की सदस्याओं को उत्तराखण्ड महिला परिषद् व लोक कल्याण विकास समिति सगर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किए गये महिला सम्मेलन में प्रतिभाग करने का अवसर मिला। सम्मेलन में कई संगठनों के कार्य–अनुभवों से सीख प्राप्त हुई। पंचायती चुनावों के कारण पैदा हुए सामाजिक विघटन को दूर करने और पुनः एकता कायम करने के लिए प्रयास हुए। सम्मेलन में उपस्थित हुई अधिकतर पंचायत प्रतिनिधियों ने बताया कि गाँवों में आयोजित सामाजिक कार्य–कलापों में महिलाओं द्वारा लिए गए निर्णयों को स्थान मिल रहा है। साथ ही, सामाजिक कार्यो में महिलाओं की भूमिका एवं स्वीकार्यता बढ़ी है।

संस्था द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता आदि मुद्दों पर भी अनेक कार्यक्रम संचालित किये जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों में सामाजिक बुराइयों को दूर करने का संकल्प लिया गया है। हर तबके के परिवारों को सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ देने के लिए बैठकों में निरंतर जानकारियाँ दी जा रही है। संस्था के कार्यकर्त्ता समय–समय पर पंचायत प्रतिनिधियों एवं छात्रों के साथ मिलकर स्वच्छता कार्यक्रमों का संचालन करते हुए ग्रामवासियों को साफ–सफाई के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

महिला संगठन द्वारा मासिक बैठकों में शराब की रोकथाम के लिए चर्चा की जाती है। इसमें कुछ पुरूषों का सहयोग भी प्राप्त हो रहा है। सम्मेलन में उपस्थित उत्तराखण्ड महिला परिषद से अनुराधा पाण्डे व दशोली, जिला चमोली, की ब्लॉक–प्रमुख प्रमिला सजवाण सहित अनेक महिला ग्राम–प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्याओं, वार्ड–सदस्यगण व सरपंचों ने गाँवों में किए जा रहे कार्यों से पंचायती राज की जानकारी दी। सम्मेलन में लिए गए निर्णयों व संगठनों द्वारा किए जा रहे ग्रामीण–विकास कार्यक्रमों से सीख लेकर महिला संगठन देवलधार गाँव में सुधार लाने के लिए लगातार कार्य कर रहा है।

उकाल केन्द्र, दन्या

अनिला पंत

बहुत पहले उकाल गाँव में एक महिला संगठन था लेकिन बाद में कोई भी गतिविधि न होने के कारण बिखराव आ गया। ग्रामवासियों का संस्था से जुड़ाव न के बराबर था। जुलाई 2014 में संस्था के प्रतिनिधियों ने गाँव में सर्वेक्षण किया। ग्रामवासियों से खूब चर्चा की। लगातार बातचीत की वजह से ग्रामवासियों में उत्सुकता पैदा हुई। सभी ग्रामवासी खुश थे कि शिक्षा–व्यवस्था में सुधार लाने के लिए एक नया केन्द्र खुल रहा है। शुरूआत में पन्द्रह–बीस बच्चे केन्द्र में आये। उस समय बच्चों में केन्द्र की गतिविधियों में भाग लेने के लिए समझ नहीं बनी थी। वे केन्द्र में घूमते रहते। जो भी सामग्री हाथ में आये उसे एक–दूसरे के ऊपर फेंकते थे। शिक्षिका को बहुत समस्या हुई।

लगभग दो माह के बाद बच्चे थोड़ा बैठने लगे। विद्यालय से दिया गया गृह–कार्य पूरा करने के लिए केन्द्र में लाने लगे। उनके माता पिता यही समझते थे कि केन्द्र में ट्यूशन पढ़ाया जायेगा। फिर संस्था के कार्यकर्त्ताओं ने संगठन बनाकर शिक्षण केन्द्र की गतिविधियों के बारे में सभी को बताया। गाँव में केन्द्र के प्रति थोड़ा समझ बनी। धीरे–धीरे बच्चों को पाँच–छः चेतना गीत याद हो गए। गणित, खेल और भाषा की समझ बनी। प्रार्थनाएं भी सभी बच्चों ने याद की हैं। इकाई–दहाई–सैकड़ा का ज्ञान, डाइस ब्लॉक, जोड़ो–स्ट्रॉ से चतुर्भुज–समबाहु–विषमबाहु त्रिभुज बनाना, मापन, रंगोमैट्री द्वारा रंगों और आकृतियों की जानकारी, ग्लोब द्वारा जल–थल की जानकारी, नक्शे से जिलों की जानकारी, सामान्य–ज्ञान, सामग्री और बिना–सामग्री वाले खेल बच्चों ने सीख लिए हैं। साथ ही, विद्यालय जाने वाले बच्चे किताबें पढ़ना और लिखना भी सीख रहे हैं। गाँव में सरकारी विद्यालय के शिक्षक भी इस कार्यक्रम से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने सरकारी विद्यालयों में पढ़ रहे सभी बच्चों को केन्द्रों में जाने का सुझाव दिया। इस वजह से अन्य बच्चे भी केन्द्र में आने लगे हैं।

ग्यारह वर्ष का यतीश (बदला हुआ नाम) जब केन्द्र में आया तो शांतिपूर्वक बैठकर कोई

भी गतिविधि नहीं कर पाता था। वह एक स्थान पर बैठता ही नहीं था। जो भी सामग्री मिले उसे उठाकर इधर–ऊधर फेंकता रहता। डाँटने पर अधिक शैतानी करता। जब मार्गदर्शिका ने देखा कि बार–बार टोकने से वह अधिक परेशान कर रहा है तो उसने शिक्षिका को बताया कि कुछ समय के लिए बच्चे की हरकतों को अनदेखा कर दे। जब बार–बार शिक्षिका उसी पर ध्यान देती तो बच्चे को लगता कि वह उसे टोक रही है। उसके बाद शिक्षिका ने अपना व्यवहार बदल लिया। धीरे–धीरे बच्चा शांत होने लगा। दो माह बाद उसमें काफी परिवर्तन आया। केन्द्र में की जाने वाली सभी गतिविधियों में रूचि लेने लगा। अब उसे केन्द्र में होने वाली हर गतिविधि की जानकारी है। उसके साथ कुछ अन्य बच्चों (उमेश कक्षा–7, शुभम कक्षा–7, नेहा कक्षा–6, मनोज, योगेश, पंकज कक्षा–5) में भी सुधार आया है। इन सभी बच्चों को अनेक चेतना–गीत एवं प्रार्थनाएं याद हैं। सामान्य ज्ञान, पर्यावरण से संबंधित गतिविधियों में भी ये बच्चे आगे रहते है। बच्चों में शिष्ट व्यवहार विकसित करने और गणित के प्रति उनका डर कम करने में केन्द्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

महिलाएं और किशोरियाँ भी संगठित हो रही हैं। आस–पड़ोस की महिलाएं रोज केन्द्र को देखती हैं। इस वजह से केन्द्र नियमित तौर पर खुलता है और सभी गतिविधियाँ सुचारू रूप से संचालित हो पाती हैं।

मैं और मेरा गाँव

बबीता रावत

मैं चमोली जिले के बमियाला गाँव में रहती हूँ। मैंने इण्टर तक पढ़ाई की है। घर की कुछ परेशानियों के कारण आगे न पढ़ सकी। स्कूल छूटने के बाद ऐसा लगा कि मानो कभी पढ़ने का मौका नहीं मिलेगा। दिन–भर घर के काम में जुटे रहने से पढ़ाई का सपना ही टूट गया। एक साल घर में रहने के बाद आगे बढ़ने की एक ऐसी राह मिली, जिस पर चल कर मैंने पुनः पढ़ने का फैसला लिया।

एक दिन हमारे गाँव में नवज्योति महिला कल्याण संस्थान के प्रमुख महानन्द बिष्ट जी पहुँचे। उन्होंने बताया कि संस्था गाँव में पुस्तकालय का संचालन करेगी जिससे ग्रामवासियों को लाभ मिले। पुस्तकालय में बच्चों के लिए बाल–साहित्य और खेलने का सामान तथा वयस्कों के लिए किताबें और अखबार रखना होगा। पुस्तकालय हर शाम को दो घंटे के लिए चार से छः बजे तक, खुलेगा। इतवार के दिन बच्चे दोपहर में चार–पाँच घंटे तक केन्द्र में रहेंगे। सोमवार को अवकाश रहेगा। पुस्तकालय के संचालन के लिए गाँववासियों के सहयोग से मेरा चुनाव किया गया। मुझे बहुत खुशी हुई।

कुछ दिनों के बाद पुस्तकालय में बहुत सी किताबें आ गयीं। पुस्तकालय का उद्घाटन हुआ। शाम के वक्त गाँव के सभी बच्चे केन्द्र में आने लगे। पुस्तकालय से बच्चों को बहुत लाभ हुआ। विभिन्न प्रकार की किताबें पढ़ने को मिली। बच्चों के साथ खेलने तथा विभिन्न गतिविधियों में व्यस्त रहने की वजह से मुझे पता ही नहीं चलता कि दो घंटे कैसे गुजर गये। कुछ समय बाद आस–पास के गाँवों की सभी संचालिकाएं प्रशिक्षण के लिए अल्मोड़ा गयीं। वहाँ पर हमने पुस्तकालय को व्यवस्थित रखना सीखा। किताबों के लेन–देन के लिए रजिस्टर बनाना सीखा। बच्चों के साथ कैसे रहना और व्यवहार करना है, यह भी सीखा। उसके बाद पुस्तकालय का एक नया नाम रखा गया। अब इसे ग्राम शिक्षण केन्द्र कहते हैं।

धीरे–धीरे गाँव की महिलाएं और किशोरियाँ ग्राम शिक्षण केन्द्र में आने लगीं। वे केन्द्र से

किताबें पढ़ने के लिए ले जाती हैं। पढ़ने के बाद दो–तीन दिन में किताबें वापस करती हैं। गाँव में केन्द्र के माध्यम से एवं सभी ग्रामवासियों के सहयोग से बालमेले का आयोजन हुआ। मेले में सभी ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। बालमेले के आयोजन के बाद बच्चे और स्त्री–पुरूष सभी ग्राम शिक्षण केन्द्र से जुड़ गये।

ग्राम शिक्षण केन्द्र के माध्यम से हमारे गाँव में महिलाओं की गोष्ठियाँ होने लगी। गाँव की सभी महिलाओं का एक संगठन बना। इसमें महिलाओं ने बढ़–चढ़कर भागीदारी की। जब हमारे गाँव में पहली बार गोष्ठी हुई तो दो–चार महिलाएं ही आयी थीं। गोष्ठी के दौरान चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इस गाँव में कभी कुछ नहीं हो सकता। यहाँ महिलाएं कभी आगे नहीं बढ़ सकती लेकिन आज हमारी कोशिश कामयाब हो गयी है। धीरे–धीरे सभी महिलाएं गोष्ठी में आने लगी, अपनी बातें कहने लगी। जो स्त्रियाँ बोलने में घबराती थीं अब वे भी गोष्ठियों में विचार रखने लगी हैं। अपने गाँव में आए हुए इस बदलाव को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। मैं चाहती हूँ कि महिलाएं इसी तरह से आगे बढ़ें और गाँव का विकास होता रहे।

इसी केन्द्र के कारण हमारे गाँव में किशोरी संगठन भी बना है। हर महीने की पन्द्रह तारीख को किशोरियों की गोष्ठी होती है। गोष्ठियों से किशोरियों को नयी–नयी जानकारियाँ मिलती हैं। सभी किशोरियाँ अपनी बातें एक दूसरे को बताती हैं। पहले हमारे गाँव में कोई भी किशोरी आठवीं उत्तीर्ण करने के बाद स्कूल नहीं जाती थी। कम उम्र में ही लड़कियों की शादी हो जाती थी लेकिन आज हर एक किशोरी स्कूल जाती है। आज हमारे गाँव की किशोरियाँ शिक्षित एवं सभी वयस्क महिलाएं साक्षर हो गयी हैं। गाँव में महिला साक्षरता एवं शिक्षण केन्द्र खुलने से यह संभव हुआ है। इससे मुझे सबसे ज्यादा खुशी मिलती है।

अब 11 मई, 2015 को मेरी शादी होनी है। शादी तय हो जाने से मुझे खुशी हुई लेकिन अपना घर तथा ग्राम शिक्षण केन्द्र छोड़ने पर थोड़ा बुरा भी लग रहा है। मैंने ग्राम शिक्षण केन्द्र चलाने के बाद अनेक प्रकार के कौशल सीखे हैं। अब मुझे विश्वास है कि ससुराल में जाकर भी कुछ सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी कर सकूँगी, लेकिन यह तो शादी के बाद ही संभव हो पायेगा।

ग्राम गोष्ठी

राजेन्द्र सिंह

दिनाँक 30 नवम्बर 2014 को चौनलिया गाँव में किशोरियों के साथ मिलकर एक गोष्ठी की गई। पंचायत भवन में ग्यारह बजे से आरम्भ हुई इस गोष्ठी में संस्था की ओर से राजेन्द्र बिष्ट एवं गाँव की ग्यारह किशोरियाँ उपस्थित थीं। चौनलिया गाँव में कुल तेरह किशोरियाँ रहती हैं। किशोरियों ने समय–समय पर संस्था द्वारा आयोजित किए जाने वाले शिविरों व सम्मेलनों में सक्रिय भागीदारी की है।

गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य किशोरियों के बीच संवाद की प्रक्रिया को मजबूत करते हुए जानकारियों का आदान–प्रदान करना था। गोष्ठी का आरम्भ आपसी परिचय एवं पूर्व में किशोरियों द्वारा कार्यक्रमों में की गई भागीदारी के अनुभवों पर विस्तार से चर्चा के साथ हुआ। किशोरियों ने बताया कि संस्था के साथ जुड़ने के बाद ही उन्हें पहली बार किसी शिविर और सम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला है। इससे पहले कभी–कभी किशोरियाँ गाँव के महिला संगठन की बैठकों में हिस्सेदारी करती थीं पर यह प्रक्रिया नियमित नहीं होती थी। गोष्ठियों में भागीदारी करने से होने वाले लाभ के बारे में चर्चा करते हुए किशोरियों ने बताया कि अन्य गाँवों की लड़कियों से मिलने और उनकी बातें सुनने–समझने का अवसर मिलता है। लड़कियाँ शिविर और गोष्ठी की बातों को अपने घरों में भी बताती हैं। इससे घर–परिवार में किशोरियों के प्रति विश्वास बढ़ा है। परिजनों को लगता है कि वे अच्छी बातें सीख रही हैं। इसी वजह से अभिभावक उन्हें गोष्ठियों में भाग लेने के लिए भेजते हैं। पहले किशोरियाँ विद्यालय और अपने गाँव के अतिरिक्त कहीं भी नहीं जाती थी लेकिन अब गाँव से बाहर जाने लगी हैं।

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए ''मेरी पहचान,'' ''लड़की होने की वजह से आ रही समस्याओं'' तथा स्वयं की ''पहचान बनाने के तरीके'' पर बातचीत की गई। किशोरियों ने लड़का–लड़की भेदभाव, लड़की को लेकर सामाजिक एवं पारिवारिक दृष्टिकोण पर विस्तार से बातचीत की। स्वयं की पहचान को लेकर कई उदाहरण दिये। उन महिलाओं के बारे में बताया जिन्होंने गाँवों में ही रचनात्मक काम करते हुए अपनी पहचान बनाई है। चर्चा के बीच में संस्था प्रमुख ने किशोरियों से प्रश्न किया कि क्या उन्हें महसूस होता है कि वे समाज में पहचान बना सकी है। यह कैसे संभव हुआ कि ''किशोरियों की पहचान'' पर चिंतन करने को कहा गया।

इसी क्रम में किशोरियों से पूछा कि वे विद्यालय में क्या पढ़ती हैं। सभी ने समवेत स्वरों में कहा कि वे कक्षा के अनुसार मिलने वाली किताबें ही पढ़ती हैं। किसी भी प्रकार की अन्य कोई किताब या अखबार नहीं पढ़ती। तब चर्चा हुई कि समझ को व्यापक बनाने के लिये अन्य किताबें, अखबार और पत्रिकाएं पढ़ना आवश्यक है। कई मुद्दे हैं जो विद्यालयों में नहीं बताये जाते या फिर अत्यंत सीमित रूप से पढ़ाये जाते हैं। यदि किशोरियाँ पाठ्य–पुस्तकों के अतिरिक्त अन्य

किताबें भी पढ़ें और आपस में चर्चा करें तो मुद्दों को समझने में आसानी होगी। इससे जानकारी बढ़ेगी और ज्ञान का क्षेत्र भी व्यापक होगा।

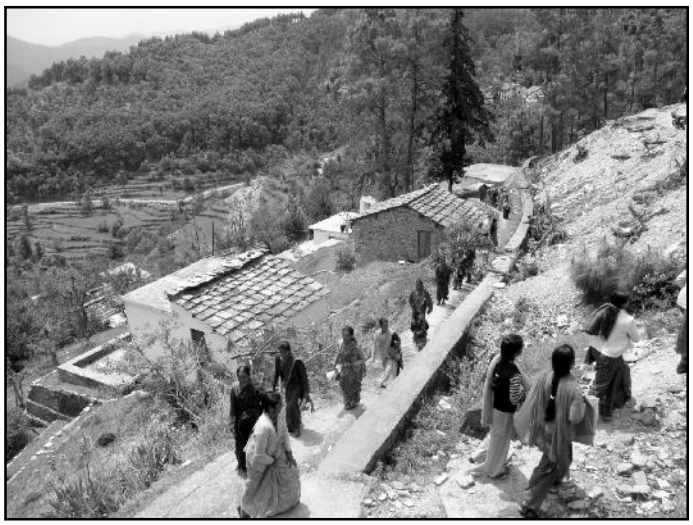

किशोरियों का कहना था कि घर–गाँव में अन्य कोई पुस्तक उपलब्ध ही नहीं है। इस समस्या पर चर्चा करने के बाद तय हुआ कि ग्राम शिक्षण केन्द्र से पुस्तकें गाँव में उपलब्ध हो जायेंगी। पढ़ने के बाद किशोरियाँ पुस्तकें केन्द्र में वापस कर दें।

इसके बाद जातिगत–भेदभाव पर चर्चा के साथ ही किशोरियों के प्रति हिंसा पर बात हुई। सामान्यतया किशोरियाँ मारपीट की घटनाओं को ही हिंसा समझती हैं। हिंसा पर समझ बनाने की दृष्टि से उन्हें बताया कि हिंसा को कई अन्य रूपों में देख और समझ सकते हैं। जैसे–शारीरिक हिंसा, यौन हिंसा, भावनात्मक हिंसा, शाब्दिक हिंसा आदि। हिंसा के इन रूपों को उदाहरण देकर समझाया गया। तदुपरान्त किशोरियों से कहा कि वे दैनिक जीवन में हिंसा के इन रूपों को पहचानें। यदि उनके जीवन में इस प्रकार की कोई भी घटना होती है तो उसे रोकने के लिए वे क्या कर सकती हैं, इस पर चिंतन करें। किशोरियाँ हिंसा का विरोध करें, उस पर बातचीत करें। यह विषय किशोरियों को बहुत रूचिकर लगा। सभी ने ध्यान से सुना और चर्चा में भाग लिया।

इसके बाद किशोरियों के साथ ग्रेडिंग का कार्य किया तथा सभी को किशोरी–सम्मेलन के आयोजन की सूचना दी। किशोरियों ने तय किया कि वे सम्मेलन के लिये स्वयं ही शिक्षाप्रद नाटक, गीत आदि तैयार करेंगी। गोष्ठी के लिए बैठक की व्यवस्था गाँव की किशोरियों ने स्वयं पंचायत घर में की थी। तीन बजे गोष्ठी का समापन किया गया।

खल्ला गाँव

सुन्दरी

मेरे गाँव, खल्ला, में ग्राम शिक्षण केन्द्र खुलने से पहले ही महिला संगठन बना हुआ था। गाँव में सभी लोग बड़े प्रेम और सद्भाव के साथ रहते हैं। ग्रामवासी खेती–बाड़ी, गाय–भैंस और बकरी इत्यादि से जुड़े हुए कारोबार करते हैं। जंगल से घास, लकड़ी और चारा–पत्ती लाते हैं। गाँव में महिला संगठन और युवक मंगल दल का गठन हुआ है। जब भी गाँव में कोई सामुहिक कार्य होता है, पुरूष और महिलाएं मिलकर जिम्मेदारियाँ उठाते हैं। खल्ला गाँव की विशेषता यही है कि सभी कार्यक्रमों का संचालन सहयोगपूर्ण वातावरण में होता है।

गाँव में एक वर्ष या तीन से पाँच सालों के बाद विभिन्न प्रकार के नाटकों (हरिश्चन्द्र, रामलीला इत्यादि) का आयोजन किया जाता है। नाटकों के आयोजन के लिए युवक मंगल दल के नेतृत्व में सभी ग्रामवासी गोष्ठी करके भावी कार्यक्रम की रूपरेखा बनाते हैं। यह प्रक्रिया प्राचीन काल से चली आ रही है। नाटकों की तैयारी के लिए आयोजित की जाने वाली गोष्ठियों में गाँव की सभी महिलाओं को बुलाया जाता है। महिला संगठन की सदस्याएं कार्यक्रम की योजना और संचालन के लिए सुझाव देती हैं ताकि सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकें।

कुछ वर्ष पूर्व ही हमारे गाँव के ऊपरी हिस्से में एक जड़ी–बूटी शोध संस्थान खुला। इसके लिए ग्रामवासियों ने अपनी जमीन सरकार को बेची है। शोध–संस्थान में तरह–तरह की जड़ी–बूटियाँ उगाई जाती हैं। स्थानीय बोली में उस स्थान को बमणां बैंड के नाम से पुकारा जाता था। अब शोध–संस्थान के अधिकारियों ने उसका नया नाम ''हर्बल–गार्डन'' रखा है। वहाँ पर गाँव की विधवा और गरीब महिलाओं को काम मिला है। वे ''हर्बल–गार्डन'' में क्यारियाँ बनाती हैं, नये–नये पेड़ और पौधे लगाती हैं। बाहर के अनेक राज्यों से शोधकर्त्ता यहाँ पर आते हैं। संस्थान में प्रयोगशाला और एक बड़ा पुस्तकालय है। वहाँ पर जड़ी–बूटी का एक बड़ा दफ्तर है। यहाँ से अधिकारीगण शोध के काम को बढ़ावा देते हैं।

हमारे गाँव में जाखेश्वर शिक्षण संस्थान नाम की संस्था द्वारा घास लगायी गयी है। घास

इसलिए लगायी क्योंकि लोगों ने वहाँ पर खेती करना बन्द कर दिया था। खेत बंजर हो रहे थे। अब ग्रामवासियों ने अपनी सुविधा के अनुसार चारे के लिए घास उगाई है। संस्था ने महिलाओं को रोजगार देते हुए घास उगाने का काम करवाया।

मेरे गाँव में महिलाओं ने समूह भी बनाये हैं। छः, आठ या दस महिलाओं का एक समूह है। सभी सदस्याएं प्रति माह दस रुपया जमा करती हैं। पैसे इकट्ठा करके कोषाध्यक्षा को देती हैं। कोषाध्यक्षा इस धनराशि को बैंक में जमा कर देती है। जरूरत पड़ने पर धन निकाल लेती हैं।

मेरे गाँव की महिलाएं राष्ट्रीय पर्व जैसे–पन्द्रह अगस्त, छब्बीस जनवरी के अवसर पर झंडा–रोहण करती हैं। उस वक्त राष्ट्रीय–गान के साथ–साथ देश–भक्ति के गीत गाती हैं। महिलाएं ग्राम शिक्षण केन्द्र से चेतना–गीत की किताबें लेती हैं। झंडा–रोहण के अवसर पर चेतना–गीत भी गाये जाते हैं। इस अवसर पर वे नारे लगाती हैं और मिठाई बाँटती हैं। मिठाई कभी अध्यक्षा की तरफ से तो कभी ग्राम–प्रधान के द्वारा लायी जाती है। झंडा–रोहण के अवसर पर गाँव के सभी पुरूष और महिलाएं एकत्रित होते हैं। ग्रामवासियों को राष्ट्रीय पर्व मनाना बहुत अच्छा लगता है। आरोहण के तीन दिन बाद महिला संगठन की अध्यक्षा ध्वज को निकालकर अपने पास रख लेती है।

पिछले साल ग्राम खल्ला में महिला सम्मेलन का आयोजन हुआ। सम्मेलन के अवसर पर महिलाओं ने "ना काटा–दीदी भुली" नाम का एक नाटक किया था। सम्मेलन से पहले महिलाओं ने गाँव में अनेक बैठकें आयोजित की। सभी ग्रामवासियों को व्यवस्था–संबंधी विभिन्न जिम्मेदारियाँ सौपी गयीं। साथ ही, युवक मंगल दल की गोष्ठी हुई। मंच बनाने, दरी लाने व कुर्सियों की व्यवस्था की जिम्मेदारी गाँव के पुरूषों ने निभाई। चाय–पानी की व्यवस्था संगठन की सदस्याओं ने की। युवक मंगल दल ने सम्मेलन में बैठने के लिए खूब आरामदायक व्यवस्था की। महिला सम्मेलन के आयोजन की व्यवस्था हेतु आस–पास के दो–तीन गाँवों से महिलाएं और ग्राम शिक्षण केन्द्रों की संचालिकाएं भी व्यवस्था में मदद करने के लिए आईं। भाषण के अतिरिक्त सम्मेलन में गीत–नारे और शिक्षाप्रद नाटक प्रदर्शित किए गये।

गाँव खल्ला में हर साल एक मेला लगता है। इस मेले में आस–पास के पाँच गाँवों के

देवताओं की डोलियाँ अनुसूइया देवी के मंदिर तक जाती हैं। वहाँ जाने से पहले एक छोटा सा बाजार सजाया जाता है। बाजार में बहुत सी दुकानें लगी रहती हैं। वहीं पर बड़ी भीड़ हो जाती है। मेले में बच्चों के लिए चरखे, अन्य खेल एवं मनोरंजन की सुविधाएं जुटती हैं। पाँचों डोलियों की सामुहिक पूजा अनुसूइया देवी के मंदिर में होती है। उसके बाद जिन स्त्रियों के कई साल तक बच्चे न हुए हों, वे मन्नत माँगने के लिए बैठ जाती हैं। पहले से पूजा के पूर्व ही मंदिर समिति के अध्यक्ष से पर्ची बनानी पड़ती थी। समिति के कार्यकर्त्ता पंक्तिबद्ध रूप से बैठने की इजाजत देते हैं। संतान की इच्छा करने वाली महिलाओं की काफी भीड़ मंदिर में इकट्ठा हो जाती है। अनुसूइया मंदिर में एक दिन का बसेरा होता है। रात भर जागरण और पूजा के लिए हो रहे विधि–विधान अगले दिन तक जारी रहते हैं। हर गाँव से बूढ़ी और जवान ध्याणी आती हैं। आसपास के सभी गाँवों में मेहमानों की भीड़ लगी रहती है। अनुसूइया का मेला हमारे क्षेत्र का प्रसिद्ध लोक–उत्सव है। साल–भर लोगों को इस मेले का इंतजार रहता है।

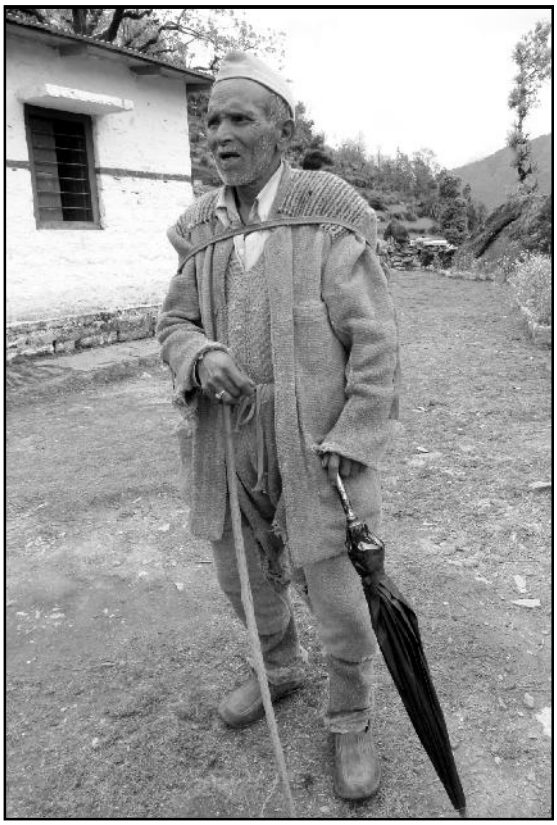

महिलाएं गोष्ठी करके मेले की तैयारी के लिए गाँव की सफाई करती हैं। महिला संगठन खल्ला गाँव से जाने वाली हर एक डोली को सजाने का काम करने वाले सभी कार्यकर्त्ताओं के लिए चाय–पानी की व्यवस्था करता है। जो पाँच गाँव डोली लेकर अनुसूइया देवी के मंदिर में जाते हैं उनके नाम इस प्रकार से हैं–भणद्वारा, खल्ला, देवलधार, सगर तथा कठूड़। कहा जाता है कि ये पाँचों गाँव सगी बहनें हैं। इनका मायका अनुसूइया गाँव में है। हर वर्ष सभी बहनें एक साथ मिलकर माँ–पिता और रिश्तेदारों से मिलने अनुसूइया तक जाती हैं।

इस प्रकार गाँव में कोई भी सामुहिक कार्य होने पर सभी महिलाएं और पुरूष सहयोग करते हैं। सभी ग्रामवासी आपस में मिलकर पेड़ लगाने और जंगल बचाने का काम करते हैं। जंगलों के संरक्षण और संवर्धन में महिला संगठन की विशेष भूमिका से इंकार नहीं किया जा सकता। संगठन की सक्रिय भागीदारी के कारण गाँव में जंगल संरक्षित और सुरक्षित हुआ है।

कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र–जालबगाड़ी, मैचून

सोनू बनौला

पर्यावरण चेतना मंच, मैचून, संस्था ने उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान के सहयोग से जालबगाड़ी तोक में एक जुलाई 2013 से कम्प्यूटर शिक्षण केन्द्र की शुरूआत की। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में कम्प्यूटर के महत्व व बच्चों के सर्वांगीण विकास को देखते हुए संस्था द्वारा यह कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

केन्द्र प्रारम्भ करते समय गाँव में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में मैचून, जालबगाड़ी, मनिआगर व सेला गाँव के निवासियों ने हिस्सा लिया। ग्रामवासियों का कहना था कि जो परिवार शिक्षा के लिए शहरों की ओर अग्रसर हो रहे हैं वे अपने ही गाँव में कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। गोष्ठी के उपरान्त गाँव में कक्षा पाँच से आगे पढ़ रहे सभी बच्चों और किशोर–किशोरियों का सर्वेक्षण किया गया। सर्वप्रथम जालबगाड़ी तोक का सम्पूर्ण सर्वेक्षण किया। उसके बाद क्रमशः मनिआगर, सेला, ढाना तथा मैचून गाँव का सर्वेक्षण हुआ। इस सर्वेक्षण में किशोर–किशोरियों, बच्चों के अतिरिक्त महिलाओं को भी कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया गया। गाँव में आयोजित की गई गोष्ठी में बातचीत करके कुछ नियम बनाए गये:

- प्रारम्भिक चरण में संस्था द्वारा अठारह बच्चों का चयन होगा, जिसमें नौ बालक और नौ बालिकाएं होंगी
- कार्यक्रम की शुरूआत में उम्र के अनुसार लॉटरी द्वारा चयन किया गया। उसके उपरान्त सभी बच्चों को क्रम से उनकी कक्षाओं के अनुसार कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त करने का मौका मिला
- गोष्ठी में तय हुआ कि प्रतिमाह तीस रूपये शुल्क का प्रावधान रखा जाना चाहिए
- बच्चे हर दिन (सोमवार को अवकाश के अतिरिक्त) तीन घंटे कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं
- प्रत्येक बच्चे को कम्प्यूटर में कम से कम आधे घण्टे का समय दिया जाना जरूरी है।

गाँव में केन्द्र की शुरूआत करते हुए सर्वप्रथम बच्चों को कम्प्यूटर का महत्व समझाया गया। संचालिका ने कम्प्यूटर के उन भागों के बारे में जानकारी दी जिन्हें देख और छू कर महसूस किया जा सकता है। जैसे–मॉनीटर, की–बोर्ड, माउस, सी.पी.यू आदि। इन सभी हिस्सों का उपयोग और उनके प्रयोग का तरीका बताने के बाद संचालिका ने की–बोर्ड के उपयोग और महत्व के बारे में विस्तार से बातचीत की। उसके बाद पेंट करना बताया जिससे कि माउस पर

बच्चे का हाथ स्थिर और संतुलित हो जाए।

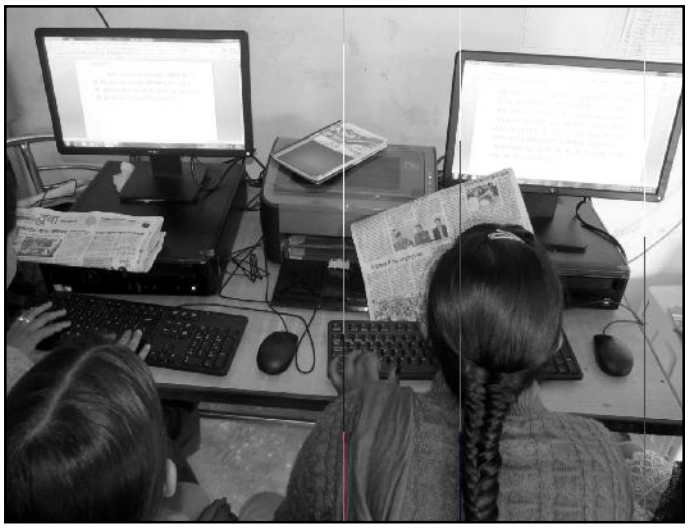

तत्पश्चात् सभी बच्चों ने हिन्दी में टंकण का काम सीखा। चूँकि हिन्दी में टंकण कर पाना अंग्रेजी भाषा में टाइपिंग करने से कठिन है इसलिए पहले हिन्दी टंकण सीखना मुनासिब ही था। बच्चे हिंदी भाषा को आसानी से समझते हैं। अंग्रेजी के प्रति भय बना रहता है। हिन्दी टंकण सिखाने के लिए संस्था द्वारा अभ्यास के कुछ तरीके बनाए गए हैं। इससे हिन्दी के अक्षरों को आसानी से की–बोर्ड पर पहचाना जा सकता है। साथ ही, यह समझ भी बन जाती है कि अंग्रेजी के अक्षरों को शिफ्ट के साथ मिलाकर हिंदी का नया अक्षर बन जाता है। इस प्रक्रिया से गुजरते हुए बच्चों की टंकण की गति और गुणवत्ता श्रेष्ठ हो जाती है। अंग्रेजी टाइपिंग बाद में सीखना बेहतर होता है क्योंकि की–बोर्ड में अंगेजी के ही अक्षर बने होते हैं। यह एक आसान प्रक्रिया है।

हिन्दी के टंकण की समझ और अभ्यास से उपजने वाली गति प्राप्त करते ही बच्चे किताब से कोई भी कहानी लिख लेते हैं। हिन्दी टंकण के बाद अंग्रेजी टाइपिंग आसानी से कर लेते हैं। फाइल को सेव करना, फोल्डर बनाना तथा फाइल–पेज के सभी विकल्पों की जानकारी बच्चों को हो जाती है। सभी बच्चे फाइल–व्यू, एडिट, विन्डो, हेल्प आदि के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त करते हैं। संचालिकाओं का अनुभव यही है कि अगर बचपन में टंकण करना सीख लिया जाये तो बाद में आसानी होती है। टाइपिंग के अतिरिक्त बच्चे एम. एस. वर्ड के सभी विकल्पों की मूलभूत जानकारी हासिल कर लेते हैं।

जालबगाड़ी तोक में कम्प्यूटर–शिक्षण प्राप्त करने के बाद मनिआगर, ढाना, सेला व मैचून गाँव के बच्चों एवं किशोर–किशोरियों के अतिरिक्त महिलाओं ने केन्द्र में प्रशिक्षण प्राप्त किया। क्षेत्र में इस पहल के सकारात्मक प्रभाव हुए हैं।

बच्चे अपने परिवार एवं समाज में जो कुछ देखते हैं उसे आसानी से अपना लेते हैं। शिक्षण केन्द्र खुलने के बाद विभिन्न आयु–वर्ग के बच्चों में एक–साथ बैठने की भावना का विकास हुआ है। सामाजिकता की भावना पैदा होने से आपसी मेल–मिलाप बढ़ता है। समाज में चले आ रहे जातिगत और आर्थिक आधारों से उपजे भेद–भाव कुछ हद तक कम करने का एक अच्छा मौका मिलता है।

शिक्षण केन्द्र का प्रभाव बच्चों पर ही नहीं बल्कि पूरे गाँव में होता है। महिलाओं व किशोरियों में भी इसका प्रभाव हुआ है। जो किशोरियाँ कम्प्यूटर सीखना चाहती थीं लेकिन किसी कारणवश नहीं सीख पाई, वे तुरन्त ही इस सुविधा से लाभान्वित हुईं। अपने ही गाँव में कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए ग्रामवासियों की जो दबी हुई इच्छा है उसे पूरा करने का एक अच्छा मौका इस केन्द्र से मिल गया। इसी कारण, अपनी व्यस्त दिनचर्या के बीच से समय निकालकर ग्रामवासी इस सुविधा का सम्पूर्ण लाभ उठा रहे हैं।

शिक्षण केन्द्र के संचालन के उपरान्त स्वयं मेरे व्यक्तित्व में परिवर्तन हुआ। मेरी झिझक दूर हुई है। सोच में भी परिवर्तन आया है। विचारों में पहले की अपेक्षा ज्यादा खुलापन आ गया है। सामाजिक स्तर में भी बदलाव आया है। ग्रामवासी मुझे कम्प्यूटर की जानकार एवं एक शिक्षिका के रूप में सम्मान देने लगे हैं। अलग–अलग क्षेत्रों के लोगों से बातें करना तथा उनके अनुभवों से जानकारियाँ प्राप्त करना एक महत्वपूर्ण अवसर है। केन्द्र की वजह से स्वयं मेरी एक अलग पहचान बनी है। कभी–कभी ऐसा होता है कि हम किसी कौशल में निपुण हो जाते हैं लेकिन अगर उपयोग न हो तो धीरे–धीरे भूल जाते हैं। केन्द्र से मुझे निरंतर यह मौका मिला कि मैं सीखे गये कौशलों का उपयोग कर सकूँ। जो जानकारी एवं कौशल मेरे पास हैं उसे दूसरों तक पहुँचा सकूँ, जिससे संपूर्ण ग्राम–समाज को लाभ मिल सके।

अभी (2015) तक क्षेत्र के लगभग एक सौ अस्सी बच्चों, किशोर–किशोरियों और महिलाओं ने कम्प्यूटर का प्रशिक्षण प्राप्त किया है। कम्प्यूटर–शिक्षण के अतिरिक्त यह एक ऐसा केन्द्र है जहाँ पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता, न जाति के आधार पर और न ही आर्थिक रूप से। आज भी गाँवों में किसी भी प्रशिक्षण के लिए बहुत कम लड़कियों को बाहर जाने का मौका मिलता है। अधिकतर लड़कियाँ घर से बाहर नहीं जा पातीं। अभिभावक लड़कियों को नयी जगह में भेजने और अनजान लोगों के साथ बातचीत करने की आज्ञा देने में कतराते हैं। शिक्षण केन्द्र में यह रूकावट नहीं होती। स्थानीय संस्था पर विश्वास होने की वजह से किशोरियाँ आसानी से प्रशिक्षण एवं गोष्ठियों में भाग लेने के लिए आ जाती हैं। उनकी झिझक दूर करने का यह एक बहुत अच्छा मौका है। गाँव के बीच में केन्द्र खुलने से उन्हें कम्प्यूटर सीखने का मौका भी मिल गया।

कार्यक्रम का उद्देश्य संपूर्ण क्षेत्र को कम्प्यूटर–साक्षर बनाना है। हम उम्मीद करते हैं कि भविष्य में भी यह केन्द्र सुचारू रूप से संचालित होगा ताकि सभी आयु–वर्ग के बच्चों, किशोर–किशोरियों को कम्प्यूटर सीखने का अवसर मिले। संपूर्ण इलाका कम्प्यूटर–साक्षर बन सके। अभी योजना यह है कि जालबगाड़ी में कम्प्यूटर–शिक्षण हो जाने के उपरान्त केन्द्र को नजदीक के ही किसी अन्य गाँव में स्थानान्तरित कर दिया जायेगा, जिससे आस–पास के गाँवों के अन्य बच्चे एवं ग्रामवासी भी लाभान्वित हो सकें।

पाण्डु नृत्य (गैड़ा)

कमलेश नेगी

23.12.2013 को ग्राम बधाणी जिला चमोली में पाण्डव लीला (गैड़ा) का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम दिनाँक 01.01.2014 तक चला। कार्यक्रम की तैयारी के मद्देनजर नवम्बर माह में समस्त ग्रामवासियों की एक बैठक हुई। इस बैठक में यह निर्णय लिया गया कि शुभ–लग्न के अनुसार 23.12.2013 के दिन से पाण्डव–लीला का आयोजन किया जायेगा। इसी वक्त नव–युवक मंगल दल का गठन हुआ। गाँव के युवकों को कुछ विशेष जिम्मेदारियाँ सौंपी गयीं। अध्यक्ष संजय गुंसाई, कोषाध्यक्ष कमलेश नेगी, उपाध्यक्ष हेमन्त रावत, अंकित गुंसाई एवं सचिव कुलदीप नेगी को मन्दिर की व्यवस्था–संबंधी जिम्मेदारी सौंपी गयी।

पाण्डव लीला (गैड़ा) के संबंध में उत्तराखण्ड के गाँवों की परंपराएं बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। प्राचीन काल से चला आ रहा यह उत्सव आज भी गाँवों में जीवित हैं। सात साल, दस या बारह साल में पाण्डव लीला का आयोजन किया जाता है। बधाणी गाँव में आयोजित होने वाली पाण्डव लीला (गैड़ा) के संबंध में यह मान्यता भी है कि जब भी खुरपका (खुर्या) नामकी बीमारी आती है और पशु बीमार होने लगते हैं तब ग्रामवासी पशुओं की खुशहाली के लिये पाण्डव नृत्य (गैड़ा) का आयोजन करते हैं। इस अवसर पर गाँव में खूब रौनक रहती है। विद्यालयों में अवकाश रहता है। गाँव के सभी महिला–पुरूष, बच्चे एवं वृद्ध इस कार्यक्रम के आयोजन में सहयोग देते हैं।

पाण्डव नृत्य में ढोल–दमाऊ एवं दास की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आह्वान करने पर पाण्डव राजा नृत्य करते हैं। पनवाडी (पाण्डवों की कथा कहना) की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। महाभारत में वर्णित सभी घटनाओं की व्याख्या वही करते हैं। पंडित जी पाण्डवों के शस्त्रों की पूजा करते हैं। जैसे गांडीव, धनुष, गदा, तलवार, पाटी, दाथुली आदि हथियारों की पूजा पंडित जी द्वारा की जाती है। पहले दिन पाण्डव बने हुये लोग विशेष वस्त्राभूषणों का इस्तेमाल किये बगैर ही नाचते है। नये पात्र पुराने पश्वा से सीखते हैं। पाण्डव लीला के मंचन में हर एक पात्र के दो भाग होते हैं। जैसे–दो अर्जुन (अर्जुन और नागा अर्जुन) दो भीम, दो नकुल,

दो सहदेव इत्यादि। इसमें एक नया घोड़ा होता है और एक पुराना।

गाँव बधाणी में 23.12.2013 के दिन पाण्डव लीला की शुरूआत हुई। इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय से कुछ प्रोफेसर भी शोध–कार्य हेतु आये हुए थे। 24.12.2013 को भी पाण्डवों ने विशेष वस्त्राभूषणों के बिना सामान्य रूप से लीला का मंचन किया। यह कार्य रात और दिन चलता रहा। उसके बाद मुहूर्त के अनुसार 25.12.2013 को वह समय आ गया जब पाण्डवों ने पारंपरिक वस्त्राभूषणों का इस्तेमाल किया। उस दिन पाण्डवों ने पुराने शस्त्रों की शक्ति नये शस्त्रों को अर्पित की। औपचारिक रुप से उसी दिन पाण्डव लीला शुरू हुई।

यूँ तो 2013 में उत्तराखण्ड के चमोली जिले में अनेक गाँवों में पाण्डव लीला का आयोजन हुआ लेकिन बधाणी गाँव की परंपरा जरा अलग है। बधाणी गाँव में जो धनुषबाण हैं वे खूनी बाण कहे जाते हैं। इस बाण का संचालन अर्जुन, नागार्जुन एंव द्रोपदी के अलावा कोई अन्य नहीं कर सकता। अन्य क्षेत्रों में कुछ और पात्र भी धनुष–बाण का प्रदर्शन कर सकते हैं। बधाणी गाँव में प्राचीन परम्परा आज भी जीवित है, भविष्य में भी ग्रामवासी इस उत्सव को जीवित रखेंगे।

26.12.2013 को पाण्डव अपने भाई, भीम, की गदा लेने मजयाड़ा गाँव में गये। यहाँ पर पंइया (पदम) के पेड़ से भीम की गदा तैयार की गयी। काफलडाली का भ्रमण कर लोगों को आशीर्वाद देते हुए वे माँ नन्दा देवी मन्दिर बधाणी गाँव के प्रांगण में वापस पहुँचे। भक्तों के आह्वान पर पाण्डवों को नचाया गया। भीम ने गदा की शक्ति दिखाई। रात के वक्त भीम की गदा तथा अर्जुन और नागार्जुन द्वारा गांडीव और धनुष–बाण की शक्ति को प्रदर्शित किया गया। इसमें भक्त दास का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उसकी विद्या ऐसी होती है कि स्वयं भगवान भी धरती पर आने को मजबूर हो जाते हैं। सभी ग्रामवासी ढ़ोल–दमाऊ को प्रणाम करते हुए उसकी शक्ति के आगे नतमस्तक हो गये।

27.12.2013 के दिन पाण्डव अपने पडोसी गाँव, पलेठी, का भ्रमण तथा गाँव की कुल–देवी माँ चण्डिका के दर्शन करने के लिए गये। साथ–साथ टोलडंग, सोकरी सेम तथा सांकरी सेरा में महादेव के मन्दिर में जाकर भगवान से आशीर्वाद लिया। क्षेत्रवासियों को आशीर्वाद देते हुए पाण्डव गाँव बधाणी में वापस पहुँचे। पुनः रात को नृत्य का आयोजन हुआ। इसमें भक्त दास के आह्वान पर धनुष–बाण, भीम की गदा, नकुल की दरांती, सहदेव की पाटी को पाण्डव नृत्य द्वारा प्रदर्शित किया गया।

28.12.2013 को पाण्डव अपने पड़ोसी गाँव घटगाड़, इटना, तहसील मार्ग कर्णप्रयाग सुभाष नगर गये। रास्ते में वे लोगों को आशीर्वाद देते चले। रात को माँ नन्दा देवी परिसर में नृत्य का आयोजन किया गया। इस दिन जरासंध की झाँकी निकली। साथ ही, भगवान कृष्ण की झाँकी की छटा देखेते ही बनती थी। दोनों के बीच ढोल–दमाऊ की ताल पर युद्ध हुआ। इस युद्ध में जरासंध को मौत के घाट उतारने की घटना का मंचन हुआ।

29.12.2013 को पाण्डव गाँव के प्रत्येक परिवार के घर में गये। ग्रामवासियों को आशीर्वाद दिया। ग्रामवासी पाण्डवों के लिये अनेक व्यंजन, खासकर चावल का हलवा (कल्यों), आलू के गुटके बनाते हैं। पाण्डवों ने बड़े चाव से इस आवभगत का आनन्द दिया। घर–गाँव में भ्रमण करते–करते रात हो गई। घर वापस आ कर थोड़ी देर विश्राम के बाद पाण्डवों ने पुनः रात को महाभारत में वर्णित घटनाओं का प्रदर्शन किया। पाण्डव नृत्य में सबसे आकर्षक प्रस्तुति गांडीव और धनुष–बाण की शक्ति का मंचन है। यह अर्जुन और नागार्जुन द्वारा ढ़ोल–दमाऊ की ताल पर किया जाता है। इसके अतिरिक्त एक अन्य आकर्षण नकुल और सहदेव का नृत्य है। यह ढ़ोल–दमाऊ की ताल पर जंगल से घास लाते वक्त किया जाता है। इस घास को गाय को देने के बाद उसका दूध निकाल कर मथ लेते हैं। बाद में मक्खन को भगवान श्री कृष्ण को अर्पित किया जाता है।

30.12.2013 को पाण्डव संगम स्थल कर्णप्रयाग तक गये। कर्णप्रयाग में अलकनंदा और पिंडर नदी का संगम है। इस अलौकिक संगम–स्थल पर कर्ण–मंदिर भी है। कुछ ही दूरी पर पेरूल देवता का मंदिर स्थित है। पेरूल देवता कर्णप्रयाग क्षेत्र के भूमियाल देवता हैं। जब पाण्डव कर्णप्रयाग में संगम पर स्नान करने के लिए जाते हैं तो बाजार में वाहनों की भीड़ जमा हो जाती है। पाण्डवों के संगम स्थल में पहुँचने से पूर्व ही कर्ण–मंदिर में कर्ण की मूर्ति को ढक दिया जाता है। यह माना जाता है कि कर्ण की मूर्ति को देखकर भीम बड़े उत्तेजित हो जाते हैं। वे मूर्ति को तोड़ने के लिए चल पड़ते हैं। अलकनंदा और पिंडर के संगम पर नकुल द्वारा पिण्ड–दान दिया जाता है। अपने पुरखों की तृप्ति के लिये पाण्डव अनेक यत्न करते हैं। तदुपरान्त वे गाँव में वापस आ जाते हैं। रात को पाण्डव लीला होती है और गैड़ा का वध किया जाता है। गैड़ा कद्दू से बना होता है। इस प्रतीकात्मक वध के बाद पाण्डव क्षेत्रवासियों को आशीर्वाद देते हैं।

31.12.2013 को पाण्डव लीला का अंतिम दिन था। इस अवसर पर आस–पास के क्षेत्रों से लोग पाण्डवों को देखने के लिए गाँव में पहुँचे। कार्यक्रम के अंतिम दिन सभी पाण्डवों ने अपने–अपने शस्त्रों के साथ नृत्य का प्रदर्शन किया। तत्पश्चात् भक्त–दास के आह्वान पर अर्जुन और नागार्जुन ने धनुष–बाणों की कला और भीम ने गदा की शक्ति का प्रदर्शन किया।

नकुल और सहदेव ने दंराती और पाटी के साथ नृत्य का मंचन किया। हनुमान जी के पश्वा द्वारा भी नृत्य हुआ। साथ ही, धनुष–बाण की कला का प्रदर्शन किया गया।

भक्त दास के आह्वान पर दुर्योधन और कर्ण की झांकियाँ निकलीं। वे बारी–बारी से पाण्डवों के साथ युद्ध करते हैं। ढोल–दमाऊ की ताल पर कर्ण और दुर्योधन का वध किया जाता है। इस वक्त गैडा का वध करना अनिवार्य माना गया है। आयोजन स्थल पर गैडा की मूर्ती लायी गयी। यह लौकी पर मिट्टी का लेप लगा कर बनायी जाती है। गैडा का वध अर्जुन और नागार्जुन करते हैं। गैडा के वध के दौरान अर्जुन बेहोश हो जाते हैं। तब सभी पाण्डव मिलकर अर्जुन को होश में लाने के लिये उनके शरीर पर चावल फेंकते हैं। इससे अर्जुन को होश आ जाता है।

अब वह पल आ गया जब पाण्डवों ने ग्रामवासियों से विदा लेनी थी। इस वक्त अनायास ही पाण्डवों की आँखों से आँसू आ गये। पाण्डव नृत्य करते हैं तो इस वजह से पूरा गाँव एकत्रित होकर उनसे जुड़ जाता है। पाण्डव जाते–जाते सभी को आशीर्वाद देते हैं। अगले सात या दस साल बाद फिर से लौटने का वादा करते हैं।

इस के साथ ही पाण्डव लीला का समापन हुआ। इस अवसर पर भंडारे का आयोजन किया गया। बधाणी गाँव के अतिरिक्त आसपास के गाँवों के निवासी भी भंडारे में शामिल हुए। प्रसाद ग्रहण करने के बाद ही ग्रामवासी घर वापस लौटे। महिला संगठन बधाणी, नवयुवक मंगल दल बधाणी, नन्दा देवी राजजात समिति बधाणी तथा समस्त ग्रामवासियों के सहयोग से संतोषपद्र एवं आनन्ददायी वातावरण में पाण्डव लीला का समापन हुआ। अब ग्रामवासियों को अगले मंचन का इंतजार है।

डायरी की कृपा

स्नेहदीप रावत

फरवरी 2015 की बात है। मुझे नयारघाटी, पौड़ी गढ़वाल, से ग्राम शिक्षण केन्द्र के प्रशिक्षण में चार संचालिकाओं को लेकर अल्मोड़ा पहुँचना था। आपको बता दूँ कि जब नसीब खराब होता है तो अपने ही घर की कुतिया काट खाती है। कुछ दिन पहले घर पर ही मेरी पालतू कुतिया ने मुझे घायल कर डाला था। खैर! जब नसीब हो खराब तो क्या करेगा साहब!

मैं ठहरा गरीब आदमी। सरकारी अस्पताल में बारह रुपये की पर्ची लेकर लगा रहता हूँ मरीजों की लाइन पर। कानों को इस इन्तजारी में खड़ा रखना पड़ता है कि न जाने कब भीतर से कड़कती आवाज में बुलावा आ जाए और इन्जैक्शन लगाने को कह दें। खैर इन्जेक्शन भी लगवाया।

दो फरवरी 2015 की सुबह कोटद्वार में शिक्षण केन्द्र की चारों संचालिकाओं ममता, ज्योति, अंकिता और रविना की इन्तजारी करने लगा। काफी देर प्रतीक्षा की। इन्तजार करना तो हमेशा अखरता ही है। किसी तरह प्रतीक्षा के पल बीते और संचालिकाएं जिस बस में थी वह सर्पीली सड़क पर हिचकोले खाती हुई स्टेशन पर आ डटी। लेकिन ये क्या?ममता ने नमस्ते की बजाय मुझसे कहा, ''भैजी म्यार बेग ख्वैगै'' (भाई जी, मेरा बैग खो गया है)। बस पूछो मत। ऐसा लगा कि ममता ने निर्ममता के साथ उबलता हुआ शीशा मेरे कानों में डाल दिया हो। किसी तरह खुद को संभाला और अपना बैग वहीं पर फेंक कर दौड़ पड़ा उस ओर, जहाँ थोड़ी पहले बस से यात्री उतरे थे। मैराथन की दौड़ से भी तेज भागा। मानो मुझे कोई विश्व–रिकार्ड बनाना हो लेकिन बस से उतरने वाले लोगों का जो हुलिया कन्डक्टर ने बताया था वैसा कोई न मिला। गलियों में पागल आशिकों की तरह फिरता रहा। नतीजा ढाक के तीन पात। जब ढूँढते–ढूँढते काफी समय बीत गया और लगा कि अब बैग मिलना मुश्किल है तो बस के कन्डक्टर और जी. एम.ओ. ऑफिस में अपना फोन नम्बर दे दिया। उसके बाद सीता माता के पति का नाम लिया और चल दिये अल्मोड़ा की ओर। आप सोच रहे होंगे कि परेशानी खत्म हो गयी। मेरे भाई! कहानी अभी बाकी है।

कुछ आगे चले तो ज्योति ने मेरे आँखों के आगे अंधेरा कर देने में कोई कसर न छोड़ी। हुआ यूँ कि मैं टैक्सी में किनारे की सीट पर बैठा। सीट भी क्या?शरीर का आधा हिस्सा तो बाहर बर्फीली हवाओं में थपेड़े खा रहा था। ऊपर से ज्योति ने उल्टी शुरू कर दी। कुछ मेरी बांह में गिरी तो कुछ बाहर; लेकिन आज तो बैग की टेंशन थी। उल्टी भी बिना बदबू की लग रही थी। धीरे–धीरे काशीपुर पहुँचे लेकिन बदकिस्मती ने पीछा नहीं छोड़ा। एक बीमार बस मिल गयी। हल्द्वानी तक पहुँचते–पहुँचते रात के दो बज गये। यहाँ तो हमारे बारह बजे थे वहाँ रात के बारह कब बजे, यह उस बस में सवार यात्री ही जानते हैं।

किसी तरह रात को थोड़ी देर सोये। सुबह कुछ देर से उठे और चल दिये अल्मोड़ा की तरफ। कोई अन्य सुबह होती तो हल्द्वानी से अल्मोड़ा तक पहुँचाने वाली सड़क में यात्रा करना आनंददायी महसूस होता। काली–काली साँप की तरह रेंगती हुई सड़कों में से गुजरते हुए कविता बनाने को जी चाहता। आज वही काली सड़क एक नागिन के समान लग रही थी, मानो काटने को दौड़ रही हो। उस पर भी कुदरत का कहर बरपा। बस की सीट में सामने बैठी हुई ज्योति खिड़की बन्द करने का नाम ही न ले। खैर! किसी प्रकार इन बूढ़ी और कत्थकमयी होकर नाचती हड्डियों को सँभाले हुए उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा तक जा पहुँचे।

इस पर भी खुदा को रहम न आया। दे डाला एक और झटका! अभी प्रशिक्षण के जुम्मा–जुम्मा दो ही दिन बीते थे कि मुर्गे की बाँग लगते ही साथ में आई हुई संचालिका, रविना, की तबियत खराब हो गयी। खराब भी क्या? मानो दाँतों में कोलगेट की जगह क्विक–फिक्स लगा दिया हो। उसका शरीर कुछ इस तरह अकड़ गया मानो ठण्ड के मारे प्राण निकल भागे हों। हम सभी जुट गये उसके हाथ–पैरों की मालिश करने, टीका लगाने, चेहरे पर पानी के छींटे दे मारने की जुगत में। जिसे जो भाया उसने तरकश से वही तीर निकालकर दे मारा।

घंटो तक जुगत लगाने के बावजूद ऊपर वाले को कुछ रहम न आया। वक्त के साथ–साथ तीमारदारों की धड़कनें बढ़ने लगीं। घंटों बाद रविना के शरीर में जरा सी हरकत हुई। दोपहर तक धूप सेंक कर करकरी बन गई। उधर ममता के बैग में रखी हुई डायरी में दर्ज उसके फोन नम्बर को पाकर बैग ले जाने वाले महाशय संजीदा हो आये। वे भूल से बैग उठा ले गये थे। फोन करके कोट्द्वार तक आकर मेरे बेटे को बैग वापस कर गये। अपना बैग ले जाना न भूले। डायरी की कृपा यह रही कि बैग वापस मिल गया। मिलता भी क्यूँ ना? यह डायरी उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान, अल्मोड़ा की तरफ से जो मिली थी।

अब तो मैंने सोच लिया है कि जब कभी मेरे नाती–पोते होंगे तो अपना फोन नम्बर लिखकर उनकी जेबों में डाल दिया करूँगा। खुदा न करे कभी कोई खो जाये तो जिसे मिले वह फोन करके हमारी अमानत वापस तो कर देगा।

बानठौक संगठन की सार्थक पहल

विनोद कुमार

बानठौक गाँव अल्मोड़ा–पिथौरागढ़ मुख्य मोटर मार्ग से लगभग आठ किमी की दूरी पर दक्षिणी ढाल में बसा हुआ है। यह गाँव शुरू से ही पर्यावरण चेतना मंच, मैचून, जिला अल्मोड़ा के कार्यक्षेत्र में सम्मिलित रहा। एक बालवाड़ी से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। इसके बाद ग्रामीण पुस्तकालय व ग्राम शिक्षण केन्द्र का संचालन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत से ही गाँव में महिलाओं की मासिक गोष्ठियाँ आयोजित की जाती थीं लेकिन पहले महिलाएं सक्रिय नहीं थीं। पिछले दो वर्षों में इस कार्यक्रम में महिलाओं की रूचि बढ़ी है।

महिलाओं की रूचि को देखते हुए संस्था कार्यकर्त्ताओं ने बानठौक में कई गोष्ठियाँ कीं। वर्तमान में बानठौक में संचालित ग्राम शिक्षण केन्द्र यहाँ के समुदाय के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण पहल के रूप में उभरा है। दूरस्थ क्षेत्र होने और शिक्षा की कोई वैकल्पिक व्यवस्था न होने की वजह से केन्द्र के प्रति लोगों का ध्यान सहज ही आकर्षित हो गया। केन्द्र में बच्चे विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ करते हैं। साथ ही, महिला संगठन भी मजबूत और सक्रिय हुआ है। केन्द्र के माध्यम से महिला संगठन की सदस्याओं की जानकारियाँ बढ़ी हैं। महिलाओं की निर्णय लेने की क्षमता भी बढ़ी है। शिक्षण केन्द्र की देखरेख और संचालिका का चुनाव स्वयं महिला संगठन ही करता है।

बानठौक गाँव का महिला संगठन समुदाय की सामाजिक, राजनीतिक गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर भागीदारी कर रहा है। महिलाएं संगठित होकर गाँव के रास्तों की सफाई, जंगल की देखरेख, जंगली सुअरों का पहरा, नौलों की सफाई, घास काटना आदि कार्य करती हैं। महिला संगठन की शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता, जल, जंगल, जमीन के प्रति जागरूकता में निरंतर वृद्धि हो रही है।

पंचायती चुनाव के दौरान संगठन ने तय किया कि प्रधान और पंच की योग्यता का आकलन करते हुए चुनाव हों। गाँव की गोष्ठी में समस्त महिलाओं ने बढ़–चढ़कर भागीदारी की। परिणामस्वरूप प्रधान व उप–प्रधान महिलाएं निर्विरोध चुनी गईं। महिला संगठन की

सदस्याएं ग्राम सभा की बैठकों, ग्राम–गोष्ठी, सम्मेलनों एवं सरकारी विभागों की अन्य गोष्ठियों में भी भागीदारी करने लगी हैं।

महिला संगठन के अनुरोध पर और संगठन की सक्रियता के मद्देनजर उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान और पर्यावरण चेतना मंच के कार्यकर्त्ताओं ने बानठौक में कम्प्यूटर साक्षरता केन्द्र खोलने का निर्णय लिया। वर्तमान में केन्द्र की देखरेख भी स्वयं महिलाएं करती हैं। संगठन ही मासिक गोष्ठी में बच्चों को चयनित करते हुए कम्प्यूटर साक्षरता के लिए छोटे–छोटे दल बनाता है। अब तक दो दलों ने दो–दो माह का प्रशिक्षण लिया है। बारह बच्चों के पहले दल में लड़कियों को प्राथमिकता दी गई। वर्तमान में केन्द्र महिला संगठन की देखरेख में सुचारू रूप से संचालित हो रहा है।

वार्षिक किशोरी सम्मेलन

बची सिंह बिष्ट

शैक्षणिक ग्रामोन्नति समिति ने 21 दिसम्बर 2014 को टुपरौली गाँव में वार्षिक किशोरी–सम्मेलन का आयोजन किया। यद्यपि प्रातः मौसम की खराबी से आयोजन में अनिश्चितता बनी हुई थी परंतु पूर्व–तैयारी ठीक होने की वजह से बादल छँटते ही सम्मेलन का आयोजन करने में आसानी रही।

किशोरी–सम्मेलन में रूँगड़ी, ढिगारकोली, नैकाना, टुपरौली, मवानी, भालूगाड़ा, काकड़ा, फडियाली, भन्याणी, चौनलिया आदि दस गाँवों से एक सौ चार किशोरियाँ, इक्यावन महिलाएं, पन्द्रह किशोर एवं चार अन्य प्रतिनिधि शामिल हुए। सम्मेलन में टुपरौली गाँव से ज्येष्ठ प्रमुख गंगोलीहाट, मीना गंगोला, प्रधान डसीलाखेत, हर्ष सिंह डसीला, उप–प्रधान टुपरौली, चम्पा देवी आदि पंचायत प्रतिनिधि भी शामिल हुए।

कार्यक्रम का आरम्भ ग्यारह बजे से महिमा गंगोला के नेतृत्व में ग्राम शिक्षण केन्द्रों की संचालिकाओं द्वारा प्रस्तुत किए गये जागृति–गीतों से हुआ। संस्था के सचिव बची सिंह बिष्ट ने कार्यक्रम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उत्तराखण्ड सेवा निधि पर्यावरण शिक्षा संस्थान एवं शैक्षणिक ग्रामोन्नित समिति, गणाई–गंगोली, विगत कुछ वर्षों से किशोर–किशोरियों के साथ यह कार्यक्रम कर रही है। कार्यक्रम का उद्देश्य बालिकाओं को घर, विद्यालय और समाज में सम्मान प्रदान करने एवं उनके सर्वांगीण विकास के लिए पहल करना है।

संस्था सचिव ने कहा कि आज के माहौल में किशोर–किशोरियों को असुरक्षित परिस्थितियाँ मिल रही हैं। विशेष–रूप से किशोरियाँ न तो घर के भीतर पूर्ण–सम्मान व सुरक्षा पा रही हैं और न ही समाज में। किशोर और किशोरियों के साथ एक समान व्यवहार न करना चिन्ताजनक है। ग्रामवासियों को स्वयं तय करना है कि उनका विकास कैसे हो, समाज कैसा हो। किशोरियों की उन्नति के रास्ते खोलना सभी की जिम्मेदारी है। उन्होंने पूछा कि "आज जैसा चल रहा है वही जिन्दगी ठीक है या फिर इसमें बदलाव करना है?" उन्होंने कहा कि "किशोरियाँ अपनी बातें बोलें। कुछ काम करने, कुछ सपनों को पूरा करने की बातें करें। किशोरियाँ वह सब व्यक्त करें जो उन्हें तकलीफ देता है। यदि वे चुपचाप सहेंगी तो अन्यायी की ताकत बढ़ेगी। माता–पिता भी यह नहीं समझ पाते कि उनकी बेटी एक संपूर्ण व्यक्तित्व है। यह कार्यक्रम किशोरावस्था में बदलावों को समझने, उन पर चर्चा करने और किशोरियों की जिन्दगी को सरल–सहज एवं सशक्त बनाने की दिशा में पहल करने के लिये शुरू किया गया है।"

इसके बाद किशोरियों ने स्वयं तैयार किये हुए कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इस सत्र में प्रत्येक गाँव से बारह बालिकायें मंच पर बैठीं तथा स्वयं कुछ विचार अतिथियों के सामने रखेः

- महिमा गंगोला, ग्राम टुपरौली, ने कहा कि बेटी पर विश्वास करना जरूरी है। घर और समाज में बेटे का निर्णय सहज–स्वीकार्य होता है जबकि बेटियों को हर बात पर चुप रहने को कहा जाता है। इस सोच में बदलाव लाना जरूरी है।

- ममता बोरा, ग्राम भन्याणी, ने कहा कि बेटियों को निर्णय लेने का हक मिलना चाहिए। आखिर हर चीज बेटी के लिये कम क्यों की जाती है?यह तो बदलना पड़ेगा।

- रेखा शर्मा, ग्राम भालूगाड़ा, ने बताया कि बेटा–बेटी एक समान का नारा लगाने वाले असल व्यवहार में किशोर–किशोरियों के बीच में भेदभाव करते हैं। सभी को आजादी चाहिए तो बेटियाँ वंचित क्यों रहें?

- शीला डसीला, ग्राम रूँगड़ी, ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि जब उन्होंने घर–गाँव में बताया कि आज किशोरियों का सम्मेलन है तो किसी ने मजाकिया लहजे में कहा कि पहले जंगल से लकड़ी ला, फिर सम्मेलन में जाना। आज रविवार है। धूप भी निकली हुई है। घरों में पहले ही कपड़े धोने के लिए ढेर लगा हुआ है, इस वजह से अनेक लड़कियाँ सम्मेलन में भाग नहीं ले पाईं। घर के काम में सभी को हाथ बँटाना होगा तभी लड़कियों को समय मिल सकेगा। इस बदलाव से ही उनकी तरक्की संभव है।

- तनुजा आगरी, ग्राम फडियाली, ने बताया कि स्कूल जाना और वहाँ से सीधे घर आना हमारे लिये सर्वमान्य नियम जैसा है। गाँव में झगड़ा हो जाये तो बच्चों को भी आपस में बातचीत करने से मना कर दिया जाता है। अगर हम आपस में बातचीत नहीं करेंगे तो विवाद कैसे सुलझेंगे?हम सब एक साथ आगे कैसे बढ़ेंगे?

- उमा बोरा, ग्राम भन्याणी, ने अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए कहा कि वह पढ़ना चाहती थी, मौका नहीं मिला। अब मौका मिला है, इसे खोना नहीं चाहती। सभी के साथ कुछ न कुछ दिक्कतें हैं। फिर भी हमें एक–दूसरे का सहयोग करते हुए साहस के साथ आगे बढ़ते जाना है।

- हिमांशी आर्या, ग्राम चौनलिया, ने बताया कि उन्होंने गाँव में किशोरी संगठन बनाया है। पिछले वर्ष आयोजित किये गए सम्मेलन में किशोरियाँ आईं तो संगठन के बारे में जानकारी मिली। इस बार सम्मेलन में प्रतिभाग करने के लिए तैयारी की। तैयारी होने की वजह से ही किशोरियाँ कुछ कार्यक्रम कर पा रही हैं।

- किरन आर्या, ग्राम चौनलिया, ने बताया कि सभी किशोरियाँ पढ़ रही हैं। वे गाँव से बाहर जाकर दुनिया को देखना और घूमना चाहती हैं। घर में साधन नहीं हैं फिर भी कोशिश कर रही हैं। लड़के सब जगह जा सकते हैं, लड़कियों को ही रोकते हैं। हमें अल्मोड़ा जाना है, घर में पूछना पड़ेगा।

- सुन्दरी डसीला, ग्राम ढिगारकोली, ने कहा कि वे किशोरी कार्यशाला में भाग लेने के लिए अल्मोड़ा गयीं। आजकल गाँव में शिक्षण केन्द्र नहीं है। इस वजह से किशोरियाँ जुड़ नहीं पा रही हैं। उनका संगठन तो ठीक है पर काम क्या करें, यह समझ में नहीं आ रहा है। संस्था और किशोरियों को मिल कर इस बारे में सोचना होगा।

इसके अलावा रूपा, पूनम, कमला आर्या, हेमा डसीला, कविता आदि किशोरियों ने सम्मेलन में विचार रखे। इसके बाद अन्य उपस्थित प्रतिभागियों को मौका दिया गया।

- हर्ष डसीला, ग्राम–प्रधान डसीलाखेत, ने कहा कि किशोरियों के शिक्षण के लिए सभी को प्रयत्न करना होगा। वे पहली बार ग्राम शिक्षण केन्द्र की किशोरियों के साथ सम्मेलन में भाग लेने के लिए आये हैं। बराबरी की बात अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब भी संस्था और ग्रामवासी कहेंगे वे महिलाओं, किशोर और किशोरियों के साथ काम करने को तैयार हैं। उन्होंने कहा कि इस सम्मेलन से बहुत कुछ सीखा। इस तरह का कार्यक्रम उन्हें बहुत नया और अच्छा लगा।

- सावित्री देवी, पूर्व–अध्यक्षा, महिला संगठन ढिगारकोली ने कहा कि उन्हें मालुम था कि आज किशोरियों का सम्मेलन है। किशोरियों को ही बुलाया होगा। महिला संगठन इस काम से जुड़े हैं इसलिए वे खुद को रोक नहीं पाई और स्वयं ही यहाँ आ गईं। उन्होंने कहा कि वे अपने गाँव की किशोरियों के साथ आई हैं। बेटियों का सम्मेलन, उनके हक की बात, उनके गीत–नाटक और भाषण, उनकी चिन्ताओं को समझना सबके लिए जरूरी है। उन्होंने कहा कि अनुराधा दीदी आपका भला हो। कैसा सुन्दर विचार सिखा रहे हो (इस बीच उनका गला भर आया और रोने लगी)।

- श्रीमती हंसी डसीला, ग्राम रूंगड़ी, ने कहा कि किशोरियों ने शराब–बंदी और हिंसा के संबंध में नाटक दिखाया। समाज में महिलाओं के प्रति हिंसा जारी है। लड़कियों की तो

बात ही दूर की है। इन बच्चों को क्या पता कि कदम–कदम पर खतरे हैं। जिस प्रकार की हिंसा की घटनाएं दिल्ली में हुईं, हल्द्वानी में हुईं, वे हर घर की चिन्ता हैं। हमें समाज को बदलना होगा। यह एक व्यक्ति से नहीं होगा। सबको मिलकर स्त्रियों को सम्मान दिलाने, हिंसा रोकने के लिए काम करना है। लड़कियों के लिये कोई जगह सुरक्षित नहीं है। संस्था की चिन्ता सही है। अनुराधा दीदी महिलाओं के लिये चिन्ता करती हैं। लड़कियों को खुद समझना होगा, लड़ने का साहस जुटाना होगा, तभी बदलाव हो सकता है। गाँव में महिला संगठन बराबर किशोरियों की मदद कर रहा है। यह एक बहुत अच्छी शुरूआत है।

इसके बाद रूंगड़ी संगठन की सचिव लीला ने महिलाओं के काम का विवरण रखा। उन्होंने कहा कि महिलाएं समझेंगी नहीं तो खुद ही उत्पीड़न करने लगेंगी, साथ ही वे उत्पीड़न सहती रहेंगी। महिला–पुरूष सभी को जागरूकता की आवश्यकता है।

इसके बाद टुपरौली गाँव की निवासी चम्पा देवी ने एक गीत ''यौ पहाड़ बसनी मेरा पराण...'' गाया। इस गीत के सटीक शब्दों और चम्पा के सधे हुए सुरों से उपस्थित लोगों की आँखें भर आईं। माहौल को हल्का बनाते हुए ज्येष्ठ प्रमुख मीना गंगोला ने कहा कि, ''मेरी भी बेटी है। हर माँ की तरह मुझे उसके लिये चिन्ता करनी होती है। जब दिल्ली, हल्द्वानी जैसे काण्ड सुने तो कलेजे में छूरी सी लगी। सोचती हूँ, आरोपियों को फाँसी मिलनी चाहिए। कानून सख्त बनाना चाहिए। उससे भी ज्यादा चिन्ता समाज में मौजूद मानसिकता की होती है। मानसिकता में बदलाव आये तो बेटियों के लिये सुरक्षित समाज बने। इसकी पहल करके बिष्ट जी ने बड़ा नेक काम हाथ में लिया है। मैं खुद ऐसा चाहती हूँ, इसलिये यहाँ आई हूँ। यह सुनकर अच्छा लगा कि लड़कियाँ जागरूक हो रही हैं। आप जो कहेंगे मैं हमेशा पूरी क्षमता से सहयोग दूँगी। हम सभी को मिलकर स्त्रियों की बराबरी और सम्मान के लिये लड़ना है। शासन–प्रशासन भी इसी सोच का है। बदलाव की सोच रखने वाले सभी लोगों को एक साथ आना जरूरी है।''

इसके बाद रेखा डसीला ने शराब–उन्मूलन के संबंध में एक गाना गाया। अन्त में सबने

गोल घेरे में खड़े होकर चेतना–गीत गाये। ज्येष्ठ प्रमुख एवं पंचायत प्रतिनिधियों सहित सभी संगठनों की अध्यक्षाओं और अन्य सदस्यों ने किशोरियों का साथ दिया। हेमा डसीला और रूपा ने नारे लगाये। इसके बाद सभी ने जलपान किया। तीन बजे कार्यक्रम का समापन हुआ। सम्मेलन जिन मुद्दों को छू पाया, वे इस प्रकार से है:

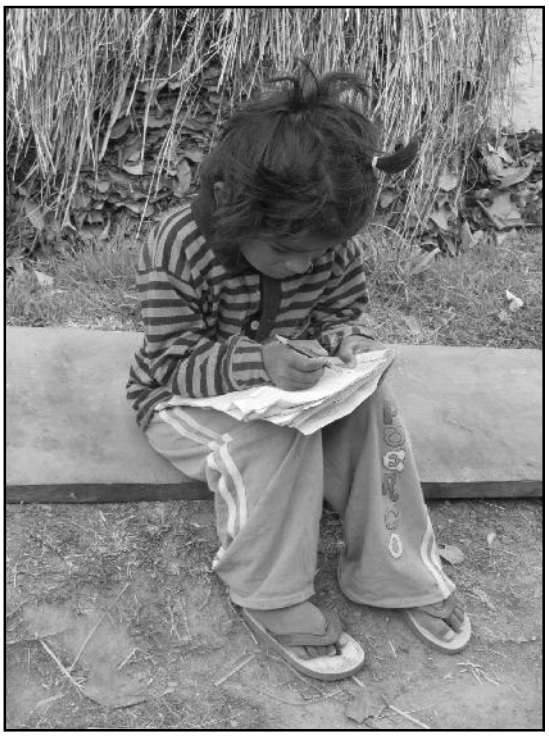

- लड़कियों के साथ लड़के घर के काम में हाथ बँटायें
- सामाजिक, दैहिक शोषण एवं हिंसा वाले वातावरण के विरूद्ध एकजुट रहने की समझ बढ़ी
- कानून बनाने से ज्यादा मानसिकता में बदलाव लाने की जरूरत को महसूस किया गया
- किशोरियों को परेशान करने वाले मुद्दे जैसे–विद्यालयों में शौचालयों का न होना या उन्हें बंद रखा जाना, स्वास्थ्य, छुआछूत आदि असमानता–पूर्ण व्यवहार को दूर करने के लिए सामुहिक रूप से काम करने की समझ बनी
- किशोरियों की उन्नति के लिए पंचायतों की भूमिका को समझने और गतिविधियाँ तय करने का मुद्दा अत्यंत पेचिदा है। समझ में नहीं आया कि इस दिशा में क्या काम हो सकता है।

सभी प्रतिभागियों ने कहा कि उन्हें सम्मेलन शिक्षाप्रद एवं आनंददायक लगा। कई बालिकाओं के लिये यह पहला अनुभव था जब उन्होंने किसी सामाजिक कार्यक्रम में हिस्सा लिया। उन्होंने संगठन से जुड़ने की इच्छा जाहिर की। महिलाओं के पास व्यक्तिगत और संगठन के अनुभव थे। अधिकतर महिलाओं ने किशोरियों की मुसीबतों का वर्णन रूँधे गले से किया।

गणाई क्षेत्र में किशोरी कार्यक्रम

बची सिंह बिष्ट

ग्रामीण किशोरियों के बीच काम करना एक नया अनुभव है। उत्तराखण्ड में एक हजार लड़कों के अनुपात में नौ सौ त्रेसठ लड़कियाँ हैं। पुरूष नौकरी या आजीविका के लिये बाहरी राज्यों को प्रवास करते रहे हैं। लड़कियों की संख्या कम होना यह प्रदर्शित करता है कि समाज का ढ़ाँचा पुरूषवादी ही है। दूसरी ओर अभिभावक लड़कियों को साधारण विद्यालयों और लड़कों को ''विशेष'' (अंग्रेजी) विद्यालयों में भेजते रहे हैं। लड़कों से खेती का काम न करवाना, लड़कियों से घर और जंगल–खेतों का काम करवाना, लड़कियों को बार–बार ठीक से रहने की हिदायतें देना, किशोरावस्था में लड़कियों को खेलने न देना आदि प्रतिबंध समाज में पहले से चले आ रहे हैं।

एक अन्य पक्ष किशोरियों के साथ यौन–हिंसा की घटनाओं में बढ़ोत्तरी होना है। इस मुद्दे को अब देश–भर में उठाया जा रहा है। इसमें किशोर लड़कों के साथ यौन–हिंसा की घटनाएं भी शामिल हैं। बच्चे ''साफ्ट टार्गेट'' बन रहे हैं। फाँसी की सजा के प्रावधान के बाद भी यह कुकृत्य रूक नहीं रहा है।

लड़कियों को बाहरी प्रदेशों में शादी व देह–व्यापार के लिये बेचा जाना भी एक अपराध है। इस कार्य में बड़े गिरोह काम करते हैं। इन सामाजिक कृत्यों से मालुम होता है कि आज भी समानता की सिर्फ बातें होती हैं। लड़का–लड़की, जाति अथवा अमीरी–गरीबी की समानता बातों में झलकती है किंतु व्यवहार में नहीं आती।

किशोर–किशोरियों के शिक्षण के लिए गहरे प्रयासों की जरूरत है। वे अपने शरीर, व्यक्तित्व, समाज, शिक्षा व परिवेश की पहचान स्वयं करें, उसका विश्लेषण कर सकें, अपने साथ हो रहे दोयम दर्जे के व्यवहार को दर्शाने वाले बिन्दुओं को पहचानें तथा उन्हें बदलने के लिये एक निश्चित दिशा तय करें। बिना किसी प्रत्यक्ष दबाव के यह प्रक्रिया चले ताकि भविष्य में समाज अधिक न्यायपूर्ण और समतापूर्ण बन सके। किशोर–किशोरियाँ साहसी, सुरक्षित और स्वतंत्र जीवन जी सकें।

गणाई–गंगोली क्षेत्र में वर्ष 2013–14 में छः गाँवों की एक सौ सत्ताइस किशोरियों के साथ संगठनों के माध्यम से शिक्षण का काम किया गया। विद्यालयों और गाँव में आयोजित की गई कार्यशालाओं और सम्मेलनों में निम्नलिखित गाँवों की किशोरियाँ कार्यक्रम से जुड़ीं:

क्रम	गाँव	जाति	क्रम	गाँव	जाति
1	ताल सिमोली	अनुसूचित	9	रूँगड़ी	सामान्य/अनुसूचित
2	ढिगारकोली	सामान्य	10	डसीलाखेत	अनुसूचित
3	नैकाना	अनुसूचित/सामान्य/पिछड़ा वर्ग	11	भालूगाड़ा	सामान्य
4	टुपरौली	अनुसूचित	12	गणाई	सामान्य/अनुसूचित
5	मवानी	अनुसूचित	13	चौकी	पिछड़ा वर्ग
6	फडयाली	अनुसूचित	14	नायल	अनुसूचित
7	चौनलिया	अनुसूचित	15	लाखतोली	सामान्य
8	भन्याणी	पिछड़ा वर्ग	16	ग्वाड़ी	सामान्य

संगठनों के रूप में कार्य करते हुए किशोरियों की समझ के स्तर में लगातार सुधार हो रहा है। अपनी बातें कहने का साहस पैदा हुआ है तथा व्यक्तिगत क्षमताएं बढ़ी हैं। सामाजिक दबाव की सबसे बड़ी वजह किशोरियों की सोलह वर्ष से अधिक की आयु है। इस आयु में उन्हें बहुत टोका–टाकी झेलनी पड़ती है। सामाजिक स्थलों में जाने, दौड़ने–भागने और खेलने पर पाबंदी लग जाती है। घरेलू काम करने का दबाव बढ़ता है। किशोरियाँ कहती है कि वे घूमना चाहती हैं। देखना–पढ़ना और घरों से बाहर निकलना चाहती हैं परन्तु अभिभावक उन्हें रोकते हैं। कारण पूछने पर अभिभावक बताते हैं कि कहीं कुछ बदनामी न हो जाये, इस डर की वजह से वे लड़कियों पर पाबंदी लगाते हैं। आज के समाज में संपूर्ण माहौल ही असुरक्षित और भय पैदा करने वाला है।

इस माहौल को बदलने के लिये लगातार प्रयत्न करने की जरूरत है। इसका अर्थ किशोर–किशोरियों को स्वच्छंद बनने की प्रेरणा देना नहीं है। इस उम्र में उन्हें विवेक का उपयोग करने की विशेष आवश्यकता होती है। सपनीली दुनिया की ख्वाहिशें उनके भविष्य को संकट में डाल सकती हैं। इस वजह से बच्चों के साथ निरंतर संवाद की जरूरत से इंकार नहीं किया जा सकता। जनप्रतिनिधि, अभिभावक, शिक्षक और महिलाएं सभी माहौल में बदलाव लाना चाहते हैं। इनमें से कई लोग किशोरियों के लिये बड़े सुन्दर विचार रखते हैं तथापि आम

अनुभव यही दर्शाते हैं कि किशोरियों को लेकर जन–धारणा में कोई ज्यादा बदलाव नहीं आया है। लड़कियों को लक्ष्य करके आवाजें लगाना, फिकरे कसना, धक्का देना, उन्हें परेशान करने और धमकियाँ देने जैसे व्यवहारों में कमी नहीं आई है। विशेष–रूप से पुरूषों व युवकों के बीच आपसी बातचीत में स्त्रियों के लिए जिस तरह की शब्दावली का प्रयोग किया जाता है वह उनकी असम्मानजनक दोयम दर्जे की स्थिति का परिचायक है। महिलाओं के प्रति यह धारणा एक दिन या थोड़े से वक्त में बदलने वाली नहीं है। लगातार संवाद, गोष्ठियाँ, सभा–सम्मेलन, विचार–विमर्श करने से माहौल बदला जा सकता है। इस काम के लिए ग्रामीण महिलाओं का निरंतर सहयोग मिल रहा है, यह बात हौसला बढ़ाने वाली है।

आने वाले समय में किशोरियों के बीच अधिक सक्रियता के साथ संवाद बनाए रखने के लिए विविध कार्यक्रमों की जरूरत होगी। शैक्षणिक–भ्रमण, साझी–गोष्ठियाँ एवं आपसी संवाद उन्हें मुखर बनाते हैं। आजकल सभी किशोरियाँ शिक्षा ले रही हैं। साथ ही, घरेलू काम भी करती हैं। इसी माहौल में संस्था को काम करना है ताकि किशोर–किशोरियाँ मुखर और साहसी बनें। परिस्थितियों में बदलाव के लिये तैयार हो सकें। संस्था किशोरियों को सशक्त बनाने के लिए सहभागी प्रयत्न कर रही है। उनकी समस्याओं और इच्छाओं को समझने और इस पर काम करने के लिए लगातार संवाद बनाने की कोशिशें हो रही हैं। अभी किशोरियों के साथ बहुत काम किया जाना बाकी है। आशा है कि कुछ लंबे समय तक काम करके वर्तमान परिस्थितियों में बदलावों को प्रदर्शित किया जा सकेगा।